Fateh is a compilation of real life accounts of young people who battled extreme circumstances and came out victors.

They are children of parents who went to prison.

Using tears to wash away their grief they have battled through their childhood without breaking their spirit.

Despite the irresponsibility of their parents, they have love and care for them with a deep-seated desire to make them happy and proud.

They are all aware of the power of education and are determined to change their lives.

They have the generosity of heart to share their stories with the world.

Each story tugs at our hearts, humbles and inspires us.

This narration is one of the first of its kind.

Fateh

Triumph over Tragedy

Kiran Bedi *et al.*

MAIN STREET

MAIN STREET

FATEH

Copyright © India Vision Foundation, 2014
First Indian Paperback Edition, 2014

ISBN 978-81-216-2013-0

Published by
MAIN STREET
E-14, Sector-11, Noida-201301

The views expressed in this book are those of the authors and not necessarily those of the publisher. The publisher is not responsible for the author's views in any way whatsoever.

All rights reserved.
No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or by any information storage and retrieval system, without prior written permission from Main Street.

Design and layout: SCANSET

Printed at Glorious Printers, A-13, DSIDC, Jhilmil Industrial Area, Delhi-110095

PRINTED IN INDIA

14/14/01/09/10/SCANSET/DE/GP/GP/NP195/NP195

Contents

Foreword by Dr. Kiran Bedi 7

PART I **Life Stories** **9**

Tabassum 11

Rahul Singh Malik 35

Neha Verma 49

Deepak 69

Raj Sharma 95

Balvinder Singh 109

Myna Khan 127

Aminoor 141

Pushpa Maurya 159

Sunny Kumar Srivastav 175

Jaimala 187

Vijay Kumar 215

Neeta 235

Afterword by Ruzbeh N. Bharucha 255

PART II **About India Vision Foundation (IVF)** 257
India Vision Foundation 259
Children of Vulnerable Families Project 260
Our Partners 264
Author with IVF Team Leaders 269
IVF Team 271
How you can support! 272

Foreword

It's a mystery for me as to why I was sent to a prison assignment as Inspector General of Tihar Prisons in Delhi, in May 1993.

Was it to dump me, or was it to see a dump of 9,700 persons incarcerated and doing nothing but cursing their fate and waiting for freedom?

Some even to come out and take revenge?

But tragically amongst these numbers were the children of women inmates who had come along, as prison rules in India allow on request.

They were in the most pitiable state.

They were learning the language of criminality for there was nothing else for them. The prison cell was their home.

I felt I must have owed them a huge debt in my past life to serve them.

The stories in this compilation are of children we schooled, who are now moving to be sound professionals.

We had taken them in our care by starting a "play school" (créche) inside the prison.

Through this we checked them from going to courts with their mothers and hearing court proceedings. From play schools inside the prison, India Vision Foundation then went on to send them to residential schools/college/university/ jobs.

And the result is there to see.

Read their accounts in their own handwriting, in their own style, for total authenticity. This group (our first batch) has grown up and is ready to tell the world their stories. Perhaps the first of its kind anywhere, I have seen.

We have translated and typed their accounts for readers convenience.

See how each life stands saved and is of value today. Thanks to a huge collective effort, they have triumphed over their tragedies.

Thank you for picking up this little book and feeling as we have for 20 years now!

It is the result of two decades of a herculean effort....and this book is a part of its celebraion.

Wish us good will.

Yours Sincerely.

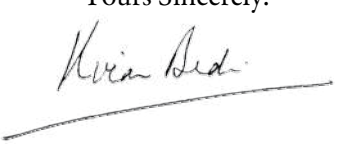

PART I

Life Stories

Tabassum

19 years old

BBA Student

Tabassum

Hello, everyone मेरा नाम तबस्सुम है और मेरी family में मम्मी, पापा और चाचा दादी सभी थे और मैं भी एक खुश परिवार में रह रही थी मैं बहुत छोटी सिर्फ 6 साल की थी एक दम मासूम, और भोली सी थी, कुछ समझ नहीं थी मुझे मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरा बचपन ऐसा जाएगा और फिर अचानक मेरी दुनिया ही बदल गई हमारे कुछ दुश्मनों ने मेरी मम्मी को गलत तरीके से फंसा लिया और उन पर बहुत बड़ा केस लग गया और वो हमें छोड़कर जेल चली गई मैं देखती की देखती ही रह गई कि मम्मी कयों जा रही है। और मैं एक असमंजस में थी कि ये क्या हो रहा है मेरे साथ। मेरा भाई उस time बहुत छोटा था उसे मम्मी की बहुत जरूरत थी। फिर भी बे-गुनाह होते हुए मम्मी हमें छोड़कर चली गई। उस time मेरी आंखों से आंसू नहीं रुकते थे और फिर हम पापा

के साथ रहना शुरू कर दिया। वो हमारा बहुत ध्यान रखते थे मम्मी से दूर होने पर हमारा Time और भी मुश्किल हो गया रोने के अलावा हम कुछ भी नहीं कर सकते थे रोते फिर चुप हो जाते यही करते थे। उसके बाद मेरी जिंदगी में एक और वक्त जुड़ने वाला था कि मुझे हास्टल जाना था। अब ये हास्टल क्या होता है वहां क्या होता है वह मेरी समझ से सब कुछ बाहर था। मुझे घर भी छोड़ना पड़ रहा था मैं एक दम टूट गई थी मेरे उस नन्हे से दिल में बहुत से सवाल आते थे पर मैं जवाब किस से लेती बस अंदर ही अंदर मैं रोती थी सीरियस थी मैं सब बातों के लिए। फिर वो Time भी आया कि मुझे हास्टल ले जाने के लिए तैयार कर दिया। मुझे बहुत ही घबराहट हो रही थी मैं सब को घूर - घूर कर देख रही थी कि मुझे कहां ले जायेंगे। हास्टल ले जाने से पहले मुझे एक बार मम्मी से मिलवाया गया। मैं जेल गई मैं उन पलों को शायद शब्दों में बयां नहीं कर सकती कि मुझ पर क्या बीत रही थी। मम्मी को देखते ही मैं सहम सी गई और कुछ नहीं कहा मैं मम्मी से गले लगी और आंखें बंद कर

ली और बस मैं यही चाहती थी कि कोई भी
मुझे मम्मी से दूर ना करे और बस मैं उनसे
चिपकी ही रहूं और ये क्या हो रहा है।
मैं कहां जा रही हूं। बस यही सोच
रही थी। मम्मी का वो चेहरा आंखों में
बसा कर मैं हॉस्टल चली गई। मुझे वहां
कोई अपना नहीं दिखाई दे रहा था सब
मुझे देख रहे थे और मैं भी सभी बच्चों
को देख रही थी बहुत डरी हुई थी। फिर
वहां का Time बहुत बुरा रहा मेरे लिए
मैं उस दिन कई घंटों तक रोती रही
और मम्मी - मम्मी चिल्लाती रही
कि मैं नहीं रहना चाहती यहां। मैंने
बहुत आंसू गिराए मैं रोज रातों को
रोती रहती शुरुआत में मैंने दो से तीन
दिन खाना ठीक से नहीं खाया जिसकी
वजह से बिमार हो गई। मैं कहां सो रही
हूं, क्या खा रही हूं कौन मुझसे क्या
कह रहा है समझ नहीं पाती थी। बस एक
कोने में पड़ी रहती थी। उस 6 साल की
age में मैंने अपनी Life की हर चुनौती
स्वीकार कर ली। और रहने लगी
हॉस्टल में मैं वहां ना हंसी कभी ना
किसी के साथ खेली अपनी हंसी और
अपने खिलौने मैंने हमेशा के लिए बस
खुद से दूर कर दिए। कभी किसी ने

वहाँ मुझे हँसते हुए नही देखा। फिर हॉस्टल से पहली बार जेल मम्मी से मिलने गई और मैं फिर कुछ नही बोल पाई मम्मी से बस मेरी मम्मी बहुत - बड़ी - बड़ी बाते मुझे समझा रही थी कुछ समझ आती थी कुछ सुनकर मम्मी को देखती थी कि वो क्या समझा रही है। मम्मी मुझे कहने लगी कि तुम तो मेरी ऐसी बेटी हो जो 100 बेटो के बराबर हो तुम मेरी बहादुर बेटी हो तुम्हे पढ़ना है और आगे बढ़ना है मुझे कुछ बनकर दिखाना है। मेरे स्कूल का नाम होस मिशन हाई स्कूल था जहाँ मैं रह रही थी। मैं मम्मी के सामने नही रोई क्योंकि मैं उस वक्त भी जानती थी कि मैं रोऊगी तो मम्मी भी रोएगी इसलिए मैं नही रोई। और मम्मी की बाते सुनकर मुझे लगा शायद मम्मी ठीक ही कह रही है। मैं हास्टल आकर बहुत रोई जब भी मिलने जाती आकर जरूर रोती हॉस्टल मे मैंने खुद को अंदर ही अंदर मार डाला। मैं फिर तीसरी क्लास मे पास हो गई सब खुश थे पर मुझे समझ नही आया कि ये सब खुश है। पर क्यू ये सब खुश हो रहे है। मैं भी पास थी पर पास होना क्या होता है मुझे नही

पता था। ना ही मुझे समझ आ रहा था कि
ये पास होना क्या होता है। मैं बिल्कुल
खुश नहीं थी फिर मम्मी से मिलने
गई और वहाँ मम्मी को मेरे पास होने
की खबर मिली फिर मम्मी ने मुझे बहुत
प्यार किया मैं देखती रही मम्मी को,
मम्मी बहुत खुश थी तब मुझे एहसास
हुआ शायद पास होकर मैंने कुछ
अच्छा काम किया है। मैंने उन आँसुओं
में कसम खाई कि मैं हमेशा पास
होऊँगी और मम्मी को हमेशा खुश
रखूँगी। हॉस्टल आ गई पढ़ने लगी
पर कभी भी मैं वहाँ खुश नहीं रही।
फिर एक और बुरा Time मेरे ऊपर
आया मैं बहुत छोटी थी मेरे सिर में
एक प्रब्लम हो गया। अपनी care नहीं
कर पाती थी उस वजह से मैं बहुत
सीरियस हो गई उस Time मैं अपनी
Life से परेशान हो चुकी थी। फिर
कभी दवाई खाती कभी नहीं
इस वजह से मेरी हालत और बिगड़
गई। उस Time 8 या 9 साल की
थी। उसके बाद I.V.F में कामनी दीदी
थी वो मुझे बहुत जल्दी करके गुड़गाँव
एक हॉस्पिटल ले गई वहाँ मुझे मस्तिष्क
विशेषज्ञ ने देखा वो डाक्टर हैरान

~~हैरान~~ हैरान रह गया क्योंकि मेरा सिर
एक दम खराब हो चुका था। फिर
डाक्टर ने मेरे लंबे बालों को काट
डाला मैं बहुत रोई। उस Time मैं मम्मी
को खुद के पास चाहती थी। दवाई
के बाद और अच्छे इलाज के बाद
मैं ठीक हो गई फिर पढ़ाई करने लगी
मैंने वहाँ रोना थोड़ा कम कर दिया
पर रोती थी पर ऐसे रोने का Time
मैंने fix ही कर दिया था क्योंकि मैं
पढ़ाई के Time रोना नहीं चाहती थी
मुझे फिर से पास होना था। अगले
साल मैं पास हो गई। ऐसे ही रहती
थी एक दम गुम सुम जिसने जहाँ बैठाया
बैठ गई जहाँ सुलाया सो गई, चुप
होकर जो भी मिला खा लिया। मुझे
आज भी याद है वो पल जब मैं वहाँ
पहली बार हँसी थी तो कितने लोग
रोए थे। सब सोचते थे इसे क्या हो
गया था आज हँसी है पहली बार फिर
कुछ लोगों ने मुझसे कहा आप हँसा
करो बेटा, आप हँसती हुई अच्छी
लगती हो। फिर ऐसे ही पढ़ते-पढ़ते
7th class मैं आ गई। और
अब मुझे सब जानने लगे थे और
थोड़ी सी समझदार भी हो गई थी

मेरी हैड मिस्टर तारा आंटी, आशा मैडम,
पूरा स्कूल, सभी बच्चे मुझे प्यार
देने लगे। मैं थोड़ी खुश थी फिर
खुश रहने के कुछ और भी कारण
मेरे सामने आए मैं घूमने picnic
पर जाने लगी वहा कभी झूलों में,
कभी cold drink पीती enjoy करती
किरण बेदी मैम हमें picnic पर
भेजती। पर मुझे नहीं पता था
कि एक बहुत बड़ी मुसीबत मेरा
इंतजार कर रही है। जो मेरी हँसी
हमेशा के लिए ले जाएगी और मैं
खुद के लिए इतनी सीरियस हो
जाऊंगी। ये मैं नहीं जानती थी
मैं 7th class में पास हो गई और
अब बस मुझे चाचा के पास जाना
था पापा से मिलना था। मैंने अपने
पास होने की खुशी में एक बहुत लंबी
List तैयार की पापा को देने के लिए
जो सामान मुझे चाहिए था हास्टल
के लिए बहुत खुश थी। मैं छुट्टीयों
में घर गई घर पहुंचते ही मैंने जो
देखा वो नजारा मैं देखती की देखती
रह गई। वहा सभी थे। सब मुझे
देख रहे थे। मैं थोड़ा आगे बढ़ी
बस मेरा मेरा सब कुछ खत्म हो

गया मेरे पापा दुनिया छोड़कर जा चुके थे मैंने पापा के चेहरे को बस 2 second देखा वो मुझे छोड़कर चले गए। मैं पापा की छोटी सी परी थी मैं घर की छत पर गई और आसमान की तरफ देखकर चिल्लाई पापा प्लीज आ जाओ मुझे भी ले जाओ मैं आपके बिना नहीं जी सकती प्लीज पापा अपनी परी को ले जाओ। पापा नहीं आए ना ही आएगे ये मुझे समझ आ गया जिस दिन मेरे पापा की जिंदगी खत्म हुई उस दिन मेरी जिंदगी की असली शुरुआत हुई। मैंने खुद को चुनौती दे डाली मैं खुद की जिम्मेदार बन गई और मैंने खुद को संभाला और खुद से वादा किया कि खुद को साबित करके रहूगी मैं पढ़ लिखकर अच्छी बनूगी और पापा की वो परी एक दम से बड़ी हो गई। बड़ी- बड़ी बात सोचने लगी अब मुझे बस पढ़ना था। क्योंकि मैंने खुद के लिए यही सपना देखा कि मेरे हाथों मे कलम है और मै शिक्षित हू। मैं हास्टल गई पढ़ाई शुरू की फिर उस साल मै 70% नंबरो से पास हुई। और बस पढ़ती ही चली गई।

फिर मैंने खुद को समझा दिया कि अगर
मैं खुद को Life बनाना चाहती हूँ
तो पढ़ाई ही एक ऐसा रास्ता है
जो मेरी ज़िंदगी बदल सकता है।
मेरा Competition किसी के साथ
नहीं मेरे खुद के साथ शुरू हो गया।
मैं डाक्टर बनना चाहती थी पर मेरे
चाचा जी मुझे बहुत ही काबिल होते
हुए देखना चाहते हैं 10th 75%
नं० मिले। मुझे डाक्टर बनना था
तो 11th class में मैंने science
की पढ़ाई शुरू की फिर चाचा की
इच्छा थी कि वो मुझे IPS या
I.A.S बनाना चाहते हैं मैंने उनकी
बातों पर गौर किया और science
फिर छोड़ दिया। मेरे चाचा जी
मुझे लड़की नहीं एक लड़का समझते हैं
यही बात मुझे उनकी अच्छी लगती है।
वो हर चीज़ मुझे Best देते हैं मेरे
लिए Best सोचते हैं। पापा के बाद
मुझे आगे बढ़ाने में मेरे चाचा जी
का एक अहम योगदान है। मुझे
घर में सबसे अलग समझा जाता है
सब लाडली मानते हैं। मेरे चाचा जी
हर काम में मेरी सलाह लेते हैं।
इसलिए मैंने सोचा कि मैं Goverment

Service की तैयारी करूंगी और अपने चाचू जी को खुशी प्रदान करूंगी। 12th में 75% में अब 19 वर्ष की हूँ और NIILM University में BBA का course कर रही हूँ। मेरा final year शुरू हो गया है द्वितीय वर्ष में मुझे 82% प्रतिशत अंक मिले हैं। मैंने डा० किरन बेदी मैम से बहुत कुछ सीख हासिल की है। University में मुझे आरती मैम और अन्नू मैम आगे बढ़ाते हैं मुझे उत्साहित करते हैं। मेरी मम्मी ने हमें हर काम में मेरा उत्साह बढ़ाया है। वो कहती है जब मैं आपके लिए जी सकती हूँ तो आप क्यूं नहीं मेरे लिए जी सकती। मुझे देखो मुझसे सीखो। बस यही बात मुझे बेहद पसन्द है। मैं जब उदास होती हूँ तो सबसे ज्यादा संगीत सुनती हूँ। मुझे संगीत का बहुत शौक है। मेरे चार दोस्त हैं। दो लड़के और दो लड़कियां। काशीश मानी, पूजा शर्मा, आमित सहरावत और अभय मलीक ये सब मेरे दोस्त हैं। जो मुझे बहुत प्यार करते हैं।

मेरी हर खुशी का ख्याल रखते है। मेरी खुशी के लिए कुछ भी कर सकते है। ये सब बहुत ही Help ful है। अपनी सारी बातें इनसे Share करती हू। मेरा भाई है।
जिसका नाम आबिद है। वो बहुत अच्छा है। मेरी आखों में कभी आसू नहीं देख सकता वो खुद के बारे में कम मेरे लिए ज्यादा सोचता है। मुझे शाहरूख खान भी और काजोल भी बहुत पंसद है। हम दोनों भाई-बहन उनके गानों पर बहुत Dance करते है। उसमें वो शाहरूख और मुझे काजोल बनाकर Dance करवाता है। मैं बस एक अच्छी HR manager या एक अच्छी I.A.S बनना चाहती हू। और लोगों की मदद करना चाहती हू। और मैं सबकी मदद जरूर करूगी अगर अल्लाह ने मुझे कामयाबी से नवाजा। मुझे लोगों की Life सुनना बहुत पंसद है। मैंने कई competition और Interview के लिए चंडीगढ़ गई। ये मेरे बहुत खुबसूरत पल थे। अब बस मैं Government

Service की तैयारी करूंगी और अपने लोगों को और मेरे Ivf को मेरी कामयाबी का इंतजार है। यही दुआ करती हूं कि वो दिन जल्दी ही मेरे सामने हो जिसके लिए मैंने ऐसा Time गुजारा है।

(Thank you)

'दिल की बात'

दिलों में वैसे तो बहुत बातें होती हैं पर बस अब मेरे दिल की सबसे बड़ी बात यही है कि अल्लाह मुझे हर परेशानी में आगे बढ़ने की हिम्मत दे।

और मैं सभी से यही कहना चाहती हूं कि वक्त 'हर प्रॉब्लम की दवा है' वक्त के साथ सब कुछ बदल जाता है। तो बस आप हिम्मत ना हारें और हर चुनौती स्वीकार करें।

मेरे दिल की एकमात्र ख्वाहिश यही है कि मैं अपने IVF का नाम रोशन करूं और जिन आंखों ने भी मुझे लेकर बहुत से सपने देखे हैं वो एक दिन मैं पूरा कर दूं।

(Thank you)

Tabassum

Hello Everyone,

My name is Tabassum.

My story begins on a happy note, when I was living with my parents, brother, uncle and grandmother.

I was only 6 years old, innocent, naive and blissfully unaware of how soon my life would change, my childhood lost never to return.

Some enemies of our family, trapped my mother under false charges and she was slapped with a big case. She left home and went to prison.

That was a very delicate time for me, I was completely confused as to what was happening. I did not understand why my mother had to leave.

My brother was very young at that time and needed my mother....still we could not understand why my mother had to leave us if she was innocent.

After being separated from our mother our lives became very tough. We began living with my father who took very good care of us. We used to keep crying. Then stop and start again. My tears never stopped.

But soon my life was to experience another turn. I was being sent to a hostel. I had no idea at all what a hostel was. I only knew that I had to leave my home.

A lot of questions arose in my heart, but who could I ask... no one, I kept crying, my little unhappy self. I was completely broken from inside.

Then the time came for me to leave, I was packed and ready. But I was very scared and nervous. I kept staring at everyone in the house, looking for reassurance and answers as to where I was going. None came.

Before leaving for Hostel I was taken to prison to meet my mother. I don't have words to express what I went through. As soon as I saw my mother I became very subdued. I did not say anything and hugged my mother tight with my eyes shut and just kept wishing that this moment would never end. I wished that no one would ever separate me from my mom. I was thinking why is this happening to me, why am I being taken to hostel.

I saved that image of my mom in my heart and left. I reached hostel and did not see a familiar face. All the children were staring at me and I was staring at them. I was petrified. I went through a very bad time at the hostel. That day I cried for hours, kept asking for my mother and said that I did not want to stay there. I shed a lot of tears and also did not eat properly for 3-4 days. As a result I fell ill.

I was unaware of what was happening around me. Who was speaking to me, what was I eating, where was I sleeping. I just kept lying in one corner.

But soon something shifted inside me. At 6 years of age, I decided to take up the challenge life had thrown at me and began living in the hostel. I did not laugh; I did not play with anyone. I had distanced myself from laughter and my toys forever. Nobody saw me laugh at my hostel.

When I first went to meet my mother at jail from my hostel, I still could not speak. But my mother spoke. She was explaining a lot of things to me. A lot of important things. Some I could fathom others I could not. I just kept staring at her.

My mother told me that I am a special daughter. One daughter who is equal to 100 sons. A strong and courageous daughter. That I have to study, move ahead in life and become someone and show her.

At that meeting I did not cry in front of my mother. I knew that if I cry, my mother would start crying too.

I thought about what my mother said and realized that she must be right. I went back to hostel and cried my eyes out. Each time I would meet my mother I would come back to the hostel and cry my eyes out. As though I had killed something within me.

I was studying in grade 3 and I passed my exams. Everybody was so happy for me. But I had no idea what it meant to pass and why everyone was happy. I was not happy at all.

Then when I went to visit my mother and she heard the news of my passing grade 3, she was very happy. She hugged and kissed me. Then I realized that perhaps by passing my exams I had done a good thing.

At that time I swore on my tears that I would always pass my exams and make my mother happy.

I came back to hostel and kept up my studies, but I was never happy.

Then I went through another bad time. I got a wound on my head that refused to heal. I was young and I did not know how to take care of myself.

My little self was exhausted, tired of life. I would sometimes

take medicine, sometimes not. As a result my condition worsened. I was 8 or 9 years then.

Then an IVF counselor visited my school, saw my condition and then took me to a specialist at the Gurgaon hospital. The doctor was shocked and appalled at my condition. The doctor had to cut my long hair to treat me. I cried so much and longed to be with my mother.

After the treatment I became all right and went back to focusing on my studies. Then I started crying a little less. But it was like I had fixed a time for crying. I did not want to cry during my studies because I wanted to pass again. I passed that year and the next and the next....

But I was sad and melancholy. I would be reserved, just sit where I was told to, and sleep where I was asked to, eat what was given to me.

I still remember the first time I laughed, and how many people cried. Everyone was thinking, what has happened to Tabassum, she has laughed today for the first time. Then a few people told me to laugh more often, they said that laughing becomes me, I look good while laughing.

Time passed and soon I was in grade 7. A lot of people began to recognize me and I became a little more mature and sensible.

My head mistress and teachers and the whole school started loving me, slowly I started to become happy.

A lot of other reasons to make me happy also came my way.

I enjoyed going for picnics, playing on swings and having cold drinks...But I did not know that a big problem was waiting for me just round the corner that would take away my happiness forever and make my life serious again.

I had passed grade 7 and I was excited to visit my uncle and meet with my father in the holidays. I was happy at passing my exams and I had made a list for my father of all the things that I wanted him to get for me.

I left hostel for home. As soon as I reached home the sight I saw left me stunned. Everyone was looking at me. I had lost everything. My father had passed away. I could only see him for 2 seconds before they took him away forever. I was his little fairy... I ran up to the terrace of my house and looked up at the sky and screamed. "Papa come back, Papa take me with you, please Papa, I cant live without you, Papa take your little fairy with you".

Papa will never come back, he is gone forever.

That day, the day my father's life ended, mine began.

I gave myself an open challenge, that I would be responsible for myself. I pulled myself together and promised myself that I would study hard and make a name for myself.

That day Papa's little fairy grew up. Started thinking of big things.

I determined that I will study, the dream I had seen for myself was one with a pen in my hand and that I am educated.

I returned to the hostel and plunged myself in studies. That year I passed with 70% marks. I continued studying and doing well.

I had convinced myself that if I want to make a life for myself, it is only through education that I can make a change.

I started competing with myself. I wanted to become a doctor. My uncle too had ambitions for me. He wanted me to be famous.

I got 75% marks in grade 10 and then I took the science

stream, as I wanted to study medicine. My uncle wanted me to become an IAS (Indian Administrative Service) officer or an IPS (Indian Police Service) officer.

I thought about what he said and then I dropped science.

My uncle treats me like a boy not a girl, which makes me feel good. He gets me the best of everything and always thinks the best for me.

After my father it is my uncle and my mother who have taken me ahead in life.

I am given special treatment in my house, I am considered special in my house, and they love me the most and consult me on all-important matters.

I have decided that I will prepare for government service exams and give my uncle the joy of my selection.

I want to give 100% to my teachers. I take every assignment seriously. I can't explain my life to everyone, I need to show my talent. I got 79% marks in my 12th board exams. Today I am 19 years old and pursuing my BBA from a leading university. I am now in my 3rd year. In my 2nd year I got 82% marks.

I have learnt a lot from Dr. Kiran Bedi and my mother has always encouraged and motivated me. She tells me that if she can live for us why can't we live for her. I love her advice and guidance.

I listen to music when I am sad to lift my mood, I also enjoy singing. I have 4 very close friends who love me a lot and who take care of all my needs. They can do anything for my happiness. I am very close to them and I share my deepest thoughts with them.

My younger brother's name is Abid, who is a lovely person. He loves me a lot and can't bear to see me cry. He cares more for me than even himself.

I am a big fan of Shahrukh Khan and Kajol. Abid and I dance a lot to their songs. Abid becomes Shahrukh and I become Kajol. We have a lot of fun.

Now all I want to become is an IAS officer or an HR manager, and help people. If God makes me successful I will help everyone.

I have won a lot of competitions and for one I even went to Chandigarh to get my award. That was a very beautiful time in my life.

I will prepare hard for my entrance for IAS and hope to make the people who are waiting for my success proud.

Today I still have a sadness, but I am happy. I look forward to happy times for which I am preparing so hard.

Thank You.

Straight from my heart

There are a lot of thoughts and desires in my heart. But one thought is the strongest that Allah gives me the strength to overcome all the difficulties coming my way and I can move forward.

I also want to say that "Time heals everything". Everything changes with time.

Just don't loose hope and accept every challenge that comes your way.

I have a strong desire to make IVF proud and make all the dreams I have come true.

COUNSELORS' NOTE

Tabassum is a good Girl. Simple and down to earth. Her essay on global warming won the best prize in all of Gurgaon district. Her moral standards are high. Her mother was in prison for 10 years. Her father was a local medicine man. Although there were very few moments when Tabassum could really smile, she gave numerous occasions to us at IVF and her mother to feel proud of her achievements.

From a humble start at a Hindi medium school, today Tabassum is competing with international students and is still able to score highest marks 82% in second year of BBA course from a leading university. Proud, determined and resilient are some qualities that define this diligent girl.

Renu Nag

Rahul Singh Malik

22 years old

MNC Executive

RAHUL KUMAR

Early Life :→ Before joining India vision Foundation my whole family was staying in Delhi and my father owned a big Dairy business There was something going on within my family about the property distribution and there was something wrong I don't know what was the exact reason why that was happening.

Our bad times started when my mom and dad murdered my father's brother's son because he attacked my father with a chopper blade which is used to chop the fodder for animals. Then my father and mother both went to Tihar jail. After 3 years my parents were released from jail. Somewhere around 1999 my father was murdered.

Growing up :→ In 2000 I was sent to school where I was admitted in class 3rd. From class 3rd to 10th standard I studied in same school. I was not a good student, Till class 6th I wasn't giving importance to my study. And when I was in class 6th I got to know to know that there is something call India vision foundation is helping me and my sister to study I didn't know that earlier.

A start :→ I met a friend in school he does in class 7th them and I was in class 6th, one day he told me his after hearing his story I cried a lot and I felt very much encouraged. Following is the extract of my friend Anil's story.

Anil's story :→ Anil is from ASSAM. He came to Delhi when he was 5 years old with a Sardar. The Sardar told Anil's family that he will help Anil to get education in Delhi, but he didn't do that Instead Sardar forced Anil to be a diswasher at his hotel in Delhi. Anil flew from Sardar and was staying on roads, begging on traffic signals. Then he met a Dutch man in Cannaught Place, the dutch men sent Anil to hostel where I was studying. Anil is currently working Yes Bank in Alwar, Rajasthan.

Vacation Sadness :→ While I was in hostel I never wanted school to be closed because whenever the school closed like in Summer vacations, Christmas holidays, everybody's parents used to come to hostel to

take their child home. There were only few of us left at the hostel, I used to cry alone and wanted to go to home.

Acheivements :→ ① I played National football tournament in 2007, which was a very big thing for me because I was playing for NCT of Delhi. I felt lucky and was proud of myself.

② Got 1st positions many times in Delhi School football tournament and Zonal's and Inter Zonals.

12th Standard and Graduation :- I went a different for Studying my 11th and 12th in 2009 which in civil lines. Just before I was admitted a different School my mother died when my 10th result was about to Come on 28 June 2008. I was really sad and thought my life is coming to an end but I again thought about my friend Anil whoose parents are alive but he didn't remember their name and he doesn't know the address as well, I how difficult it might be for Anil. Then I again didn't loose hope and wanted to be Independent. I get highest marks in class 11th and 12th in School and I was Captain of my School football team.

After finishing my 12th I was sent to ITS Ghaziabad where I completed my BBA in 2013.

Working life :- Now I am with Aon Hewitt India which is good experience to work with a MNC. Lovely environment and lot of thing to learn.

A Great thanks to IVF :- I am very thankful and grateful to IVF, that I am self dependent and enjoying my life. It would not have been possible if IVF was not there to look after me.

"From my Heart".

आजमा ले मुझको थोड़ा और
ए खुदा!
तेरा "बंदा" अभी टूटा
है बस, बिखरा नहीं!

My message to Society is that anyone should not loose hope despite the Situations in life. Fighting with the circumstances and overcoming the difficulties is a good way to move forward in life.

राहुल सिंह मलिक

शुरुआती ज़िंदगी : इंडिया विज़न फाउंडेशन से जुड़ने से पहले मेरा पूरा परिवार दिल्ली में रह रहा था। मेरे पिताजी का अपना डेयरी का व्यापार था। वहाँ मेरे परिवार के बीच जायदाद के बंटवारे को लेकर कुछ-न-कुछ गलत चल रहा था। पर मुझे एकदम सही से नहीं पता था कि ये क्या हो रहा है और क्यूं ये सब हो रहा है?

हमारा बुरा वक्त तब शुरू हुआ, जब मेरे माता-पिता ने मिलकर मेरे चाचा के बेटे का कत्ल कर दिया, क्योंकि उसने मेरे पिताजी के ऊपर एक ऐसे हथियार से प्रहार किया था जो कि पशुओं का खाना काटने के काम में लाया जाता था। फिर मेरे माता-पिता दोनों तिहाड़ जेल चले गए और फिर तीन साल बाद मेरे माता-पिता जेल से बाहर आ गए। मेरे पापा ने ये कत्ल सन् 1999 के आस-पास किया था।

बड़ा होते हुए : सन् 2000 में मुझे स्कूल भेजा गया, जहाँ मैंने तीसरी कक्षा में दाखिला लिया था। तीसरी कक्षा से 10वीं कक्षा तक की शिक्षा मैंने वहीं से प्राप्त की। मैं अपनी पढ़ाई के लिहाज से अच्छा विद्यार्थी नहीं था। कक्षा 6 तक मैंने अपनी पढ़ाई को कोई महत्त्व नहीं दिया, पर मैंने ये तब समझा जब मुझे पता चला और मैंने जाना कि कोई इंडिया विजन फाउंडेशन है, जो मेरी और मेरी बहन की पढ़ाई में मदद कर रहा है।

शुरुआत : मैं अपने स्कूल में एक दोस्त से मिला जो कि 7वीं कक्षा में था

और मैं छठी में। एक दिन उसने मुझे अपनी पूरी कहानी सुनाई। उसकी बातें सुनकर मैं बहुत रोया था। मैंने खुद को बहुत उत्साहित महसूस किया। और मुझे मेरे दोस्त की कहानी ने बहुत ही प्रभावित किया।

अनिल की कहानी : अनिल असम का रहने वाला था। वह पांच साल का था, जब दिल्ली आया था एक सरदार के साथ। उस सरदार ने उसके परिवार से कहा था कि वह अनिल को दिल्ली में पढ़ाई कराने में सहायता करेगा। पर इसकी जगह उस सरदार ने अनिल के साथ जबरदस्ती की कि वह उसके होटल पर बर्तन धोया करे और वहीं काम करे। वह सरदार के पास से भाग गया और फिर वह रोड पर रह रहा था और अनिल ट्रेफिक सिग्नल पर भीख मांगता था। उसके बाद अनिल एक डच मैम से मिला और उस मैम ने उसे हॉस्टल भेजा, जहाँ मैं पढ़ाई कर रहा था। अनिल अभी यस बैंक में काम कर रहा है।

गर्मियों की छुट्टी होने का दुःख : जब मैं हॉस्टल में था, मैं ये कभी नहीं चाहता था कि कभी हॉस्टल या स्कूल में छुट्टियाँ पड़ें। क्योंकि जब भी छुट्टियाँ पड़ती थीं, सभी माता-पिता अपने बच्चों को घर ले जाने के लिए आ जाते थे। और हम कुछ बच्चे ही हॉस्टल में रह जाते थे और फिर मैं अकेला बहुत रोता था, क्योंकि मैं भी घर जाना चाहता था।

सफलताएँ : मैंने नेशनल फुटबॉल टूर्नामेंट खेला था सन् 2007 में, जो कि मेरे लिए बहुत बड़ी चीज़ थी, क्योंकि मैं दिल्ली की MCD के लिए खेल रहा था और मुझे खुद पर बहुत ही गर्व महसूस हो रहा था। मैंने प्रथम स्थान कई बार प्राप्त किए दिल्ली स्कूल में फुटबॉल टूर्नामेंट के लिए।

12वीं कक्षा एवं स्नातक शिक्षा : मेरी 11वीं और 12वीं कक्षा की शिक्षा सन् 2009 में सिविल लाइंस में एक अलग तरह के स्कूल में हुई। 28 जून 2008 को जब मेरा 10वीं कक्षा का परिणाम आने वाला ही था कि मेरी माता जी का देहांत हो गया। सच में मैं उस दिन बहुत ही निराश था और अपनी ज़िंदगी के बारे में सोच रहा था। फिर से मैंने अपने

दोस्त की कहानी को याद किया। उसके माता-पिता जिंदा थे, पर उसको उनका कोई अता-पता मालूम नहीं था। अनिल के लिए ये सब कितना मुश्किल होगा। मैंने फिर आशा नहीं छोड़ी और अच्छी पढ़ाई की और 11वीं और 12वीं में अच्छे नंबरों से पास हुआ और मैं फुटबॉल टीम का कैप्टन भी बना। 11वीं और 12वीं कक्षा के बाद मुझे ITS गाजियाबाद भेजा गया और वहाँ मैंने BBA का कोर्स पूरा किया। मेरा कोर्स 2013 में खत्म हुआ था।

कार्यरत जीवन : अभी मैं एक MNC, हैविट इंडिया में कार्य करता हूं। और वहाँ बहुत ही प्रेम भरा वातावरण है और वहां मुझे बहुत-कुछ सीखने को मिला।

एक बड़ा धन्यवाद IVF को : मैं बहुत ही शुक्रिया करता हूं IVF का, कि मैं खुद के पैरों पर खड़ा हो सका। मैं अब अपने सभी कार्य व फैसले स्वयं लेने वाला सफल इनसान बन गया हूं। और अब मैं खुश हूं और जीवन का आनंद ले रहा हूं। यह मेरा लिए संभव नहीं था सब-कुछ करना, अगर IVF मुझे न देखता।

दिल की बात

मेरा समाज के लिए यही संदेश है कि उन्हें कभी भी आशा नहीं छोड़नी चाहिए, बल्कि हर परिस्थिति में आगे बढ़ना चाहिए। हर स्थिति से लड़ना चाहिए। आगे बढ़ना ही इसका सबसे अच्छा रास्ता है।

COUNSELORS' NOTE

Rahul has always been interested in studies. Despite not having parents, he looks after his sister very well and has completed his education with very good marks. He did his BBA and then gave tuitions while studying to make ends meet. Today Rahul is an executive with a Multinational company and is happy.

Neha Verma

19 years old

BBA Student

Every thing seems to be very new— a new place, new peoples to look at. But, for a 4 year old nothing looked really good at that time. All the big people stared at me and were glad to see me, but I was in a haste to go back to my old place. Big rooms a great garden attracted me. All mums of the organisation consoled me and promised to make a visit to Tihar. 'TIHAR' a unforgetful word of my life. Everywhere people recognised us as 'The inmates of Tihar Jail'. first day of the school was like a playfull one. Hostelmates, as well as Schoolmates were good, and we used to eat our lunch before the interval.

At hostel didi used to prepare Sambhar a lot. This was the dish I never heard of it, but here we'd to eat. One day along with my friends we tried to run away with our belongings. But were caught at that time itself. That time was like hell for us. Any time we used to pluck raw mangoes and used to share amongst us.

CHILDHOOD PRANKS :-

Years passed and our naughtiness increased. A girl who tried to run away, now having fun with others. One didi used to cook for us, we played a lot with her. She always beats us for small matters and to escape from her me and my other friends used to hide in the almirah.

One day, I was running continuously in the varandah. Sisters scolded me once, but I ignored her and started playing again. Finally I fell on the floor and to everyone's surprise, my lips got swollen. And next day we'd to go to school, and with the swollen lips, I could not imagined to go like that. But it got to its normal size later.

I was expert in climbing trees and used to pluck Guava's for myself as well as for others. But after that sweet Guava's, we need to get beatings also. But still everyday I climbed trees.

We grew up. Sisters were replaced and new ones took place. She was very possesive and used to teach us classical music. During her timing Me, Rinki, Sejina, Taslima.

We four were the top one naughtiest girls of the Asha Sadan.
Whenever any mischiefs used to happen, we were all together every time. We used to irritate our warden and I always find ways to disturb her. We just wanted her to go back. Yes we really hated her. We loved to have fun with our friends.

SCHOOL ENVIRONMENT + FRIEND CIRCLE

My school life was very interesting. I was good at academics but at the same time naughtiest girl of the class. I never did my homework and used to copy from the bright students. The reason behind that was the language. I didn't knew how to write in English. During the Annual

day of the school our Principal always used to appreciate the children of our hostel but she always announces the same sentences in her speech :- 'Children of Asha Sadan are the inmates of Tihar Jail'; Their parents are in prison'. These words were very deeply pinched inside. But at that time we were helpless. We have to listen. We all accepted this. And though this was my reality, my friends, class mates also came to know about my family background. They used to ask me different types of questions about my father, my reason of studying in a hostel. I told all these to my best friend. And she gladly accepted me by happily hugging me. Other students who already knows about us, used to

ask us intentionally. Hostel friends all knew about us. It was like to run away from these hurdles of life. I thought why 'Me', I'd always cursed myself. Whenever anyone asked me about these I used to feel that hell is better than this life.

AFTER THE REALITY:-

My reality came infront of me when my father's case was reopened after 10 years. I was in 10th std, I'd given my Board exams and was happily going back home. But to my surprise, father was not there at home. Everyone told me with full grief. I just felt that everything is over now. My life - my career - Everything.

Because father was the one who used to love me more than anyone else on this earth. I became poorer and poorer even to afford 2 times meal. Sometimes I felt to die, rather to bear the situation. No one was there with us. No family. Me and my brother was left alone. I used to cry all day and the neighbours sometimes give us curry to eat with the Chappathis. That was the situation anyone wants to commit suicide. I also felt the same. But I motivated myself and approached to NF. Pearly di and my Bhaiya's helped me and I was back in my hostel. I did my 12th there.

That miserable condition taught me the way of life. I know what is wrong now. My decision was right.

Life doesn't give happiness only. It includes sadness, sorrows, tears and miserability. That day I grew up. That incident not only made me strong but also influenced me and showed me the right track. I came to know what was the hunger the yearn to face the hardiest of life. I never knew what is the tension people carry with them. I was the happiest and fun loving girl of my hostel but this incident gave a long pause to my laughter.
Everyone knows me as the talkative girl. But everything changed after that. I never talked to anyone and was busy with the books every time. I used to ignore as my father's incident always reflects from one side and my career, future from the other.

I always used to console myself as I'd faith in Jesus Christ But there's a limit to patience also. Whenever I was alone I used to burst into tears. But my sisters, teachers friends motivated me. They made me strong. They said :- Let it be what all happens, that's only for our goodwill. Believe in your God. I pursued my studies again in Haryana.

Now I'm the same girl writing my own story in English and with full dedication. I'd faced many hurdles in my life. My father is still there, but I've faith in my lord. I'm that much motivated that I can influence other's also. That's ok, life is full of struggle but we need to accept it and accomplish our goal.

HAPPIEST MOMENT:-

The happiest moment is yet to come. It will be that day when my father live happily ever after. Life is full of thorns but there lies some rose. To obtain those rose, we need to cross the thorns first.

Just believe in yourself, coz there are hands to help you out. We got the support and after 14 years of schooling I'm now pursuing my studies in college.

DIL KI BAAT :-

I'm very much thankful to my Dr. Kiran Bedi Maam and her team. Coz through her support I could reached to this height. They'd helped me not only financially but emotionally also. I was like and I'm the luckiest girl. Now I don't curse myself. I treat myself as god gifted. May the good lord keeps all over well wishers in good health. Now its our turn to give back. So that one more child can reach to its goal.

नेहा वर्मा

सब कुछ बहुत ही नया लगा रहा था, नई जगह, नए लोग। सभी मुझे देख रहे थे। उस समय मैं चार साल की थी। सभी बड़े लोग मुझे देख रहे थे और मुझे देखकर खुश हो रहे थे। पर मैं वहाँ से वापस जाना चाहती थी, वहाँ रुकना नहीं चाहती थी। वहाँ बड़े-बड़े कक्ष थे सोने के लिए और बड़ा-सा बगीचा भी। फिर हॉस्टल की सिस्टर और अध्यापिकाओं ने मुझे समझाया-संभाला और तिहाड़ जेल ले जाने का वादा किया। 'तिहाड़' ये शब्द मेरे लिए भूलने वाला शब्द नहीं है। सभी हमें "तिहाड़ जेल के बच्चे" की नज़रों से देखते, जो मुझे अच्छा नहीं लगता था। स्कूल का पहला दिन मेरे लिए अच्छा था। सभी दोस्त अच्छे थे और लंच से पहले ही हम अपना खाना खा लेते थे। हॉस्टल में हमारी दीदी एक 'सांबर डिश' बनाया करती थी। इस डिश का मैंने कभी नाम तक नहीं सुना था, पर वहाँ मैंने वो डिश खाई। एक दिन मैंने मित्रों के साथ हॉस्टल से भाग जाने की योजना बनाई, पर हम सभी पकड़े गए। वो समय हमारे लिए बहुत ही कठिन था। किसी भी समय हम आम तोड़ने चले जाते और सभी दोस्त मिलकर आम खाते थे।

बचपन की शरारतें : साल बीतते गए और हमारी शैतानियाँ बढ़ती गई। एक लड़की जो हॉस्टल से भागना चाहती थी, वो अब दूसरों के साथ मजाक-मस्ती करने लगी। वहाँ दीदी हमारे लिए खाना बनाती, हम उनके

साथ बहुत खेलते और वो हमेशा हमें छोटी-छोटी बातों पर पीटती। हम उनसे बहुत बचते थे। कभी-कभी मैं और मेरे दोस्त उनसे बचने के लिए अलमारी में छुप जाते थे।

एक दिन मैं लगातार बरामदे में दौड़ रही थी, खेल रही थी। सिस्टर मुझे मना कर रही थी, पर मैंने उनकी बातों को नज़रअंदाज किया। अचानक मैं बहुत जोर से फर्श पर गिर गई और सभी हैरान रह गए। मेरे होंठ की स्थिति एकदम खराब हो गई। मेरा पूरा मुँह सूज गया और अगले दिन मैं सूजे हुए होंठ के साथ ही स्कूल गई। पर धीरे-धीरे वो ठीक हो गया।

मैं पेड़ों पर चढ़ने में बहुत होशियार थी। मैं पेड़ों से अमरूद तोड़ती अपने लिए और अपने दोस्तों के लिए, पर उन मीठे अमरूदों के बाद हमें पिटाई भी बहुत पड़ती थी। पर फिर भी मैं पेड़ों पर रोज चढ़ती थी।

हम बड़े हुए और वहाँ की कुछ सिस्टर भी बदल गईं और नए-नए लोग आने लगे। कुछ सिस्टर बहुत ही अच्छी थीं। वो हमें पढ़ातीं और हमें सांस्कृतिक नृत्य सिखातीं, जब भी समय होता। रिंकी, अर्जीना, तसलीमा और मैं हम चार लोग सबसे ज़्यादा शैतान लड़कियां थीं आशा सदन की। हॉस्टल में जब भी कुछ गलत होता, हम चारों हमेशा एक-साथ होते और हम अपनी वॉर्डन को बहुत ही गुस्सा दिलवाते। मैं हमेशा अपनी मैम को परेशान करने के रास्ते ढूंढ़ती रहती। क्योंकि हम चाहते थे वो यहाँ से चली जाएँ, क्योंकि हम सभी प्यार से एक-साथ रहना चाहते थे।

विद्यालय का वातावरण और मित्रों का ग्रुप : मेरी विद्यालय की ज़िंदगी बहुत ही रुचिकर है। मैं पढ़ने में अच्छी थी, पर मैंने कभी अपना काम नहीं किया। हमेशा अच्छे बच्चों की कॉपी से काम कर लेती थी और बहुत ही शैतान थी। इसके पीछे एक ही कारण था, वो था 'भाषा'। मैं नहीं जानती थी कि अंग्रेज़ी में कैसे लिखना है। स्कूल के वार्षिक उत्सव में अयापिका सभी बच्चों को उत्साहित करती, पर वो हमेशा अपने भाषण में यही लाइनें बोलती कि यहाँ तिहाड़ के बच्चे हैं, जिनके माँ-बाप

तिहाड़ जेल में हैं। तिहाड़ शब्द हमें बहुत ही तकलीफ देता था, पर उस समय हम कुछ नहीं कर सकते थे। हमारे हाथ में कुछ नहीं था। और हम सब-कुछ अपना लेते थे सारी बातें सुनकर। और इस वजह से मेरे सभी दोस्त मेरे परिवार के बोर में जानना चाहते थे, मेरे बारे में जानना चाहते थे। वहाँ मुझसे कई सवाल किए जाते थे मेरे पिताजी के बारे में। मैं हॉस्टल में क्यूं आई, इस बारे में मैं अपने दोस्तों को तो समझा देती, पर जो मुझे कम जानते, वो मुझसे सवाल करते। मेरे दोस्त मुझे गले लगाते, अपनी दोस्त समझते। कभी-कभी ये लगता, जैसे हम ज़िंदगी की कठिनाइयों से भाग रहे हैं। मैं यही सोचती कि हमेशा 'मैं' ही क्यूं? मैं सोचती, इस ज़िंदगी से तो नरक ही बेहतर है। मेरे जीवन की सच्चाई तब मेरे सामने आई, जब मेरे पापा को 10 साल की सजा हुई। उस समय मैंने केवल 10वीं की परीक्षा दी थी और घर जाने के लिए बहुत ही खुश थी। जब वहाँ गई तो पापा नहीं थे। सभी मुझसे गुस्से से बोलते, कोई मेरा ध्यान नहीं रखता, तब मैंने महसूस किया कि सब-कुछ खत्म हो गया, मेरी ज़िंदगी, मेरा भविष्य, सब-कुछ।

अब कुछ अच्छा नहीं रहा पापा के जाने के बाद। एक वो ही थे, जो मुझे बहुत प्यार करते थे और उसके बाद हम गरीब और बहुत ही गरीब होते चले गए। एक ऐसा समय भी आया, जब हमारे घर में दो वक्त का खाना भी न होता। मेरे पड़ोसी हमें चपाती देते और मेरा भाई भी अलग चला गया हमें छोड़कर। मैं हर दिन रोती रहती। ये एक वो परिस्थिति थी, जिसमें हर कोई आत्महत्या करने की सोचेगा। मैंने भी यही महसूस किया। पर फिर भी मैंने खुद को उत्साहित किया। और IVF से मैंने सहारा लिया और पर्ली दीदी और भइया ने मुझे फिर से हॉस्टल भेजा और मैंने वहाँ 12वीं कक्षा की पढ़ाई की। उस परेशानी भरी स्थिति ने मुझे समझाया कि मेरा फैसला ठीक था। जीवन हमें केवल खुशियाँ ही नहीं देता, अपितु हमें उदासी, कष्ट, आँसू और बुरी परिस्थितियाँ भी देता है। उस घटना ने मेरे जीवन को बदला और न केवल मुझे मजबूत

बनाया, बल्कि मुझे एक अच्छा रास्ता भी दिखाया। मैं नहीं जानती थी कि लोग क्यूं और क्या चिंताएँ अपने साथ रखते हैं, क्योंकि मैं एक हँसमुख और बहुत ही प्यारी बच्ची थी, पर जीवन की उस घटना ने मेरी हँसी और मुसकान को काफी समय के लिए मुझसे दूर कर दिया। सभी मुझे एक बातूनी और बहुत ही मिलनसार लड़की समझते थे, पर उसके बाद सब-कुछ बदल गया था। मैं किसी से भी बातें नहीं करती थी, बस अपनी पुस्तकों में व्यस्त रहती थी। मैं हमेशा अपने पिताजी की घटना को भूलने की और उससे बचने की कोशिश करती, पर वो सब मुझमें साफ झलकता था। मैंने हमेशा खुद को संभालने का प्रयास किया।

मैं प्रभु यीशु पर भरोसा रखती थी, पर फिर भी कुछ सहन करने की एक हद होती है। जब कभी भी मैं अकेली होती, तो बस मैं आँसू ही बहाती और मेरे शिक्षक, दोस्त सभी मुझे उत्साहित करते। मेरे सभी दोस्त मुझे बहुत ही मजबूत बनाना चाहते थे। और वो मुझे यही समझाते कि छोड़ दो सब बातों को, जो भी हो रहा है उसे होने दो। इसीलिए मैंने फिर से अपनी आगे की शिक्षा हरियाणा में की। अब मैं खुद अपनी ये कहानी अंग्रेज़ी में लिख रही हूं और पूरे मन के साथ। मैंने ज़िंदगी में बहुत-सी कठिनाइयों का सामना किया। मेरे पिताजी अब भी जेल में है, परंतु मैं प्रभु पर विश्वास करती हूं। मैं इतनी उत्साहित और मजबूत हो चुकी हूं कि औरों को भी प्रभावित कर सकती हूं। ठीक है, जीवन एक संघर्ष है और संघर्षों से ही भरा हुआ है। पर हमें उसे अपनाने की आवश्यकता है और अपने लक्ष्य को पाना है।

खुशियों भरे पल : मेरे जीवन में खुशी का पल तब आएगा, जब मेरे पिताजी हमेशा के लिए खुश रहेंगे हमारे साथ। ये जो ज़िंदगी है, वो कांटों से भरी है, पर उसमें कुछ गुलाब के फूल भी शामिल हैं और उन फूलों को पाने के लिए हमें पहले कांटों से गुजरना है। बस खुद पर भरोसा रखो। हमने पिछले 14 सालों से IVF का सहारा पाया और अब मैं महाविद्यालय में शिक्षा ले रही हूं।

दिल की बात

मैं डॉ. किरन बेदी मैम का बहुत ही धन्यवाद करती हूं और उनकी पूरी टीम का भी। क्योंकि उनके सहारे की वजह से मैं इस ऊँचाई तक पहुंची हूं। उन्होंने मेरी केवल पैसों या आर्थिक स्थिति में ही मदद नहीं की, बल्कि मुझे बहुत-सी परिस्थितियों में भी समझाया और मुझे हर प्रकार से संभाला। मैं एक हँसमुख लड़की थी। मैं खुद को भगवान के उपहार की तरह समझती हूं। प्रभु सभी के दुखों को दूर करे और अब हमारी बारी है कुछ करने की, ताकि और भी कई बच्चे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

COUNSELORS' NOTE

She is studying BBA. Her goal is to become an executive and to work in the HR department of a company. She is very conscious of her past and does not like to be reminded of it. She is passionate about challenging her life and changing her destiny.

Deepak

19 years old

Student of Hotel Management

इन्सान को कभी
अपनी हिम्मत नहीं
हारनी चाहिए
चाहे वो कितना भी
बुरे से बुरा वक्त हो...

मेरा नाम दीपक है मेरे
घर में मेरा बड़ा भाई
और मेरी प्यारी दादी
मिलके हम तीन लोग
रहते है जब मैं बहुत
छोटा था तभी मेरे
मम्मी - पापा मुझसे दूर
हो गए थे तब से आज
तक दादी ने किसी
मेमे की मदद से
हमारी परवरिश की
जब मैंने पहली बार

अपना होश सम्भाला था
तो मेरी स्कूल, पुरानी
राह, लखनऊ के एक
बोडिंग स्कूल की थी
वो स्कूल बहुत ही अच्छा
था, यहा पर बच्चों के
खेलने के लिए बहुत अच्छी-
अच्छी चीज़ें थी जैसे
कि लोन, टेन, मिक्की
माउस आद सभी चीज़ें
प्लास्टिक की बनी हुई
थी इन सब के साथ
खेल कर बच्चा खुश रहता
है मैं उसी स्कूल में
पढ़ता था, वहां पर एक
आईसा थे जो मेरी
अच्छी तरह देखभाल करते
थे हम वहां काफी
खुश और खेलते रहते
थे, एक हम खेल
रहे थे उस दिन एक
अजनबी आदमी हमसे
मिलने हमारे हास्टल
आया था खुद को

हमारा रिश्तेदार बता कर
हमें अपने साथ ले गया
हम भी उसके साथ
चले गए, क्योंकि हम
मासूम थे, उस समय
मुझमें वो भावना नहीं
कि मैं यह पहचान
कर सकू कौन अपने
है और कौन बेगाने
(और कौन सही
कौन गलत)

यह आदमी एक नम्बर
का बदमाश था जो
बच्चों से गैर कानूनी
काम करवाता था जब
मेरी दादी को मेरे
गुमशुदा होने की खबर
मिली तो वो हमें गली-
गली, रेलवे स्टेशन बहुत
सी जगहों पर ढूंढने
के लिए निकल पड़ी
यह मेरी दादी का प्यार
और उनकी हिम्मत थी

कि कुछ वक्त बाद उन्होंने हमें छुड़ा लिया हमारा हुलिया इस बात का गवाह था कि पिछले दिनों हम किन हालात में रहे होंगे

मैं अपनी दादी की ओर और हिम्मत की दाद देता हूं कि उन्होंने अकेली महिला होने के बावजूद भी हमें उस आदमी से बचाया और उसकी शिकायत करके उसे पुलिस के हवाले कर दिया
आज इस बात को 15 साल से ज्यादा हो गए लेकिन उस आदमी का चेहरा आज भी मुझे साफ - साफ याद है उसका चेहरा आज भी मेरे दिमाग में आता है तो मैं घबरा जाता हूं इसके

बाद दादी हमें लखनऊ से
दिल्ली लेकर आ गई
और हमारी अच्छी तरह
देखभाल की और मेम
की मदद से मेरा
दाखिला स्कूल में कराया
गया
जब मेरा स्कूल में
पहला दिन था मैं बहुत
रोया फिर चुप हो
जाता था थोड़ी देर
बाद फिर दादी को याद
करके रोता रहता था
कुछ वक्त गुजर
जाने के बाद मेरी
दादी मुझसे मिलने
मेरे हास्टल आई मैं
उन्हें देखकर बहुत
खुश हुआ और
उनकी ओर दौड़ता
चला गया दादी
ने मुझे अपने
सीने से लगा

लिया और चूमने लगी
उनकी आँखें आँसुओं
से भर गई पर
मैं काफी खुश था
क्योंकि मुझे सिर्फ
दादी चाहिए थी थो
ड़ा समय मेरे पास थी
मैं और दादी पार्क
में बैठ कर मुस्कान
बात कर रही थी
दादी मुस्कान कुछ ना
कुछ पूछ रही थी पर
मैं अपनी मस्ती में
मस्त था कुछ घंटों
बाद हमारा मिलने
का समय खत्म हो
गया था दादी थक
हार जाने के लिए
खड़ी हुई तो उन्होंने
मुस्कान कहा - बेटा
मन लगाकर पढ़ना
रोना मत मैं आपसे
दोबारा मिलने आऊंगी

उसकी हैरानी मेरी आंखों से
आंसू आना शुरू हो गए
जब दादी जा रही थी
मैंने उनका दुपट्टा पकड़ लिया
धीरे-धीरे दादी मुझसे
दूर हो रही थी उतना ही
जोर-जोर से मैं रो रहा
था मैं रो-रो कर
उनसे कह रहा था मुझे
भी अपने साथ घर ले
चलो पर वो मजबूर थी
फिर दादी के चले जाने
के बाद मैं रोता हुआ
हुआ अपने कमरे में चला
गया और कमरे के कोने
में रोते-रोते सो गया
जब आंख खुली तो शाम
हो चुकी थी यही सिलसिला
कुछ महीनों तक चलता रहा
कुछ वक्त के बाद मेरा
हॉस्टल में मन लगने लगा
फिर मैं भी स्कूल में जाकर
कक्षा में बैठता भी और
मन लगाकर पढ़ता भी था

वक्त गुजरता गया पढ़ाई बढ़ती रही उसके साथ-साथ मैं भी बढ़ता रहा इस तरह मैं पांचवी कक्षा में आ गया

पांचवी कक्षा में मेरे साथ मेरे कुछ दोस्त और पढ़ रहे थे शिक्षकजी आई. वी. एफ मदद कर रही थी हम सब एक परिवार की तरह साथ रहते थे अब मैं आठवी कक्षा में आया मैंने बहुत से कार्यक्रम में हिस्सा लिया जैसे - संगीत, नृत्य, क्रिकेट और चित्रकला इत्यादि अब मैंने अपना होश संभाला तब मुझे पता चला कि मेरे मम्मी-पापा नहीं है मुझे बहुत रोना आया मुझे भी मम्मी-पापा की याद आती थी अब मैं अपने दोस्तों के मम्मी-पापा को देखता तो सोचता था कि कितने खुशनसीब है मेरे दोस्त

उनके पास मम्मी-पापा दोनों
है काश, मेरे, भी मम्मी-
पापा होते, तो कितना
अच्छा होता
कुछ लोग मुझे अनाथ
कहते थे शुरू में तो
इसकी गंभीरता मुझे
समझ में नहीं आती थी
पर बाद में वक्त के
साथ बड़ा हुआ तो
मुझे इस चीज का
बहुत एहसास हुआ
पर वक्त ने वो घाव
भर दिए मेरी दादी
ने हमें मम्मी और
पापा दोनों का
प्यार दिया और हमें
अच्छा इंसान बनाया
आज पता चला भगवान जो
करते है हमारे भले के लिए
ही करते है
भले ही मेरे - मम्मी - पापा

मुस्कानें दूर हो गए हैं
लेकिन, भगवान ने उनकी
कमी को पूरा करने
के लिए, मेरी प्यारी
दादी और किरन मैम
को, भेजा है - होने कभी
मेरे मम्मी - पापा के
न होने का, एहसास
कभी नहीं होने दिया
क्योंकि मैं इन्हें अपना
सब कुछ मानता हूँ

→ किसी ने सही कहा है -
पैदा करने से बढ़कर
पालने वाला होता है
स्कूल के समय - समय
मैम हमें काफी अच्छी -
अच्छी जगह घुमाने
लेकर जाती थी जिसके
बारे में मैंने कभी
सोचा नहीं था जैसे -
ताजमहल, (wow), वर्ल्ड
आफ वन्डर, खेल गांव
जैसी अच्छी जगहों
पर घुमाने लेकर

जाते थे जब मैं 9th
class में आ गया तब
मैंने साकेत के एक
मॉल में मॉडलिंग
(modling) की थी, मैंने
कभी सोचा
नहीं था कि मैं कभी
मॉडलिंग करूंगा एक
साल बाद, जब मैं
10th class में आ गया
मैं, और मेरे दोस्त
नोएडा वर्ड आफ,
वंडर (wow) घूमने
गए थे उस साल तमाम
के दौरान मुझे अपने
स्कूल का Best
student घोषित किया
इसके लिए Best
student certificate
दिया गया मैं बहुत
खुश था पर मेरी
खुशी दुगनी हो
गई क्योंकि यह
certificate SHO किरन

मेम के हाथों से मिला
था। यह पता मेरी
खिड़की के बाहर है
है जिन्हे मैं भुला नही
सकता और मैं इन्हे
आज भी बहुत याद
करता हूँ मैं भी चाहता
हूँ जिस तरह मेम लोग
की मदद और गरीब
बच्चों को दाखिला
करवाती, वैसे ही मैं
भी लोगों की मदद
कर और कम से
कम एक या दो बच्चों
को स्कूल में दाखिला
करवाऊ मुझे पता है
और जानता हूँ की
अभी शायद है पर
भी मेरी बुआ खाना
बनाती थी मैं उनके
पास बैठकर देखता
रहता था और वो
मुझे भी सिखाती थी
मैंने अपनी 10th
class की पढ़ाई

हरियाणा के एक स्कूल
से पूरी की, फिर दिल्ली
में आकर मैंने 11th or 12th
की पढ़ाई की हाल ही में
मैंने 12th class 59% से
पास की है
मुझे अपनी दादी को पाले
अपनी जिम्मेवारी का
एहसास है इसलिए 12th
के बाद मैंने cake shop
में नौकरी शुरू कर दी है
आगे मैं Hotel management
का course करना चाहता
है इसके साथ-साथ
collage से B.A करना
चाहता हूँ पढ़ाई पूरी
करने के बाद मैं अपना
Hotel खोलना चाहता हूँ
जिसका नाम Suhana
Luxury Hotel होगा
यह मेरा सपना
है
Suhana मेरी प्यारी
बहन है।

इस सपने को मैं हकीकत
में बदलना चाहता हूँ
मैं इसे हकीकत में पूरा
करूंगा क्योंकि मुझमें वो
हिम्मत है अगर आप के
भी कुछ ऐसे सपने है
तो आप इन्हें ज़रूर पूरा
करो क्योंकि
हिम्मत से ही हौंसले
बुलंद होते है

आज मैं बहुत खुश हूँ
भगवान का शुक्रिया
करते हुए आप लोगों को
यह बताना चाहता हूँ कि
मेरा admission Hotel
management में हो
चुका है मैंने
अपने सपने की ओर
अपना पहला कदम
बढा लिया है

आई.वी.एफ को मैं दिल से
शुक्रिया करना चाहता हूँ
क्योंकि आज मैं जिस मुकाम
पर खड़ा हूँ सिर्फ आई.वी.एफ
और मेरी प्यारी दादी की
वजह से आई.वी.एफ (I.V.F)
ने मेरा हर मुश्किल में
दिया और कभी मुझे
अकेला नहीं छोड़ा हर
पर मैम और पूरा आई.वी.
एफ परिवार मेरी मदद
करने को तैयार रहते
हैं और आगे भी करते
रहेंगे
मैं दिल से दुआ मांगता
हूँ कि मैम और तरक्की
करें हम जैसे गरीब
लोगों की मदद करें।

Always step for word
and don't loose hope...

thank

दिल की बात...

मैं यह कहना चाहता हूँ
कभी मम्मी - पापा को
अपनी जिम्मेदारी निभानी
चाहिए अपने बच्चों प्रति
क्योंकि यह बच्चों का
हक है

Deepak

Man should never loose hope, however hard the times may be.

Our dear Dr. Kiran Bedi Ma'am taught these special words to me.

I am Deepak and I live with my older brother and dear Dadi (Paternal Grandmother). Just the three of us.

I was separated from my parents at a very young age and have been brought up by my grandmother with help from Dr. Kiran Bedi.

My first memories are of a boarding school in Lucknow. That was a good school and had a lot of good stuff for the kids to play with. Like airplanes, trains, mickey mouse etc. All these were made of plastic and the kids felt very happy playing with these toys. I also had good memories of a Bhaiya (attendant) at school who was very good and kind to all the children.

My brother and I were very happy. However, these days were short lived.

One day a stranger came to school posing as our relative. He convinced the authorities to take my brother and me with him. We went along with him.

We were so naïve, and because we had not seen our parents and not received unconditional love, we had not developed our

sense of belonging. We did not know who was our family and who was not. Who was the right person and who was not.

This stranger was a bad character, he used to work with young children and make them do illegal activities.

When the news of our disappearance reached our Dadi, she did not loose a moment and she set about looking for us.

With our pictures in hand she looked everywhere.....in every street, in every home, at the railway stations asking everyone she met if they had seen us.

It was her deep love, courage and strength that she found us within a month. The condition she found us in revealed how we had spent that month.

Dirty, hungry, bedraggled.

I deeply appreciate my Dadi's love and courage that despite being a single woman she could rescue us from that dangerous man. Not only did she rescue us, she even registered a complaint about him and handed him over to the police.

Today it is more than 15 years since that episode but that person's face is still very clear in my mind and that face still has power to evoke horror in me.

After rescuing us, Dadi got us to Delhi where she tried her best to get us back to our original selves.

With help from Kiran Ma'am I got admission into a good school.

I cried a lot during my first day at school, then would stop and then start again as soon as I remembered my grandmother.

After passing of some time my Dadi came to visit me in the hostel. I was very happy. I ran to her as soon as I saw her and she gave me a tight hug and kept kissing me. Her eyes were full of

tears, but I was so happy. All I wanted was my grandmother and at that time she was with me.

My Dadi and I sat in the park and kept talking, she kept asking me questions and I replied with a lightness of spirit.

All too soon it was time for her to leave, she stood up and said to me "Study hard with all your might, do not cry, I will come back to visit you soon."

As soon as she said that my tears began to flow. I caught hold of her *dupatta* (scarf). As she moved further and further away from me my crying kept getting louder and louder and asking her to take me with her. But she was helpless and she left.

After she left I kept crying and went to my room. That night I cried myself to sleep.

When my eyes opened it was morning. This episode of crying myself to sleep kept continuing for a long time.

After some time I began settling down in school and tried very hard to pay attention to my studies. But kept remembering Dadi and could not study.

When I was in 5th grade, I had a few friends who were being helped by IVF, they would study with me and stay with me too. Abid, Nadeem, Rahul, Vikram, Rohit, Vishaal. This became my new family. I could share my feelings with them. They understood me.

By the time I reached class 8, I had taken part in a lot of activities like music, dance and cricket and drama.

When I realized that I don't have parents, I began to miss them a lot. I felt envious of my friends who had parents visit them. I used to think how fortunate they are, and felt how nice it would have been if I had my parents.

Some people started calling me *anath* (orphan). Initially

I could not understand the seriousness of the situation but as I grew older I began to realize the reality of my situation and then was inconsolable.

But with passage of time that wound has now healed.

My Dadi has given us the love of both mother and father and has brought us up as good human beings.

Growing up I had different thoughts, had no clue where life was headed. IVF supported me and helped me get a grip.

After 6th grade I began to appreciate IVF's support and decided to take advantage of it and work hard.

My boarding school taught me how to speak and conduct myself in society.

Today I realized that whatever God has designed for you is best, God took away our parents but to fulfill that void he gave us Dadi and Kiran Ma'am who did not let us feel the loss. I owe them everything.

Today I feel normal; there are kids out there who don't have IVF. I am blessed. IVF doesn't refuse me anything.

I also feel a lot of pride that we are linked to Kiran Ma'am.

She used to tell us to never give up.... never loose hope. ... Someone will come by to support you.

Some famous person said – The person who raises you is greater than the person who gives birth to you.

During my school years Ma'am took us to visit various places. Places where I never imagined I would visit.

Taj Mahal, Amusement Parks, Sports Village, Museums.

When I was in class 9 I did modeling in the Saket Mall. I had never ever imagined that I would ever model.

When I was in class 10 my friends and I visited 'world of wonder' at Noida.

At the program there I was declared“ best student”.

My joy knew no bounds when Kiran Ma’am herself gave me the award.

This was the happiest moment of my life that I can never forget.

Even when I remember that moment today I feel happy.

I also wish that like Kiran Ma’am helps people and puts poor children in school, I too help people in need. I want to help at least one or two children and educate them.

I enjoy studying and cooking is my favorite hobby.

Whenever I visit my paternal aunt, I watch her cook. She teaches me how to cook.

I completed my 10th standard in a hostel in Haryana and then did my 11th and 12th in Delhi. I got 59% marks.

I realize my responsibilities towards my grandmother and my home. After passing my 12th grade I began working in a cake shop to supplement the family income.

I would like to study Hotel management and food production and simultaneously do my BA.

My dream is to have my own Luxury Hotel one day. I will name it “Suhana”, after my dear rakhi (not biological) sister. I know I will make this a reality soon. I also want to travel abroad.

I would like to tell you that if you have dreams, have the courage to go after them. Fortune favors’ the brave.

I am brave, I have the courage and the will to make my dream come true.

Today as I am sharing this with you my heart is filled with gratitude. I have got admission in a hotel management school in Coimbatore. I leave immediately for college.

“I have taken the first step towards my dream.”

I would like to than Dr. Kiran Bedi from the depths of my heart. She supported me at all times and never left my side even in the middle of a lot of difficulties. Ma'am was ready to help me out of every difficulty and I know will continue to support me in the future.

If Ma'am had not supported us and educated us I shudder to think where I would be.

Today it is because of Ma'am that I am able to support myself.

It is my deepest prayer that Ma'am keeps prospering and keeps helping poor people like us.

"Always step forward and never loose hope"

Straight from my heart

I have a message for all the parents. Please fulfill your responsibilities towards your children. It is their right.

COUNSELORS' NOTE

Deepak's parents abandoned him and his brother. His grandmother went to prison under NDPA. There she met IVF and got the boys admitted to school. Deepak is an obedient boy. He has made his adjustment to his circumstances. He is focused and determined and as a result has got what he wants. Despite challenges he has got admission in a Hotel Management college. He has left Delhi to travel into the unknown land of Coimbatore where new challenges await him. But I am confident he will achieve his dreams. He is responsible and wants to give a good life to his family and give good health care to his grandmother.

Raj Sharma

18 years old

Student of Grade 10

मेरी जिन्दंगी कि कहानी

मेरा नाम राज शर्मा है। आज मैं अपनी जिन्दगी कि कहानी लिख रहा हूं जब मेरी आंखे खुली तो तब मैं जेल मे था क्योंकि मेरे माता पिता से कोई गलती हो गई थी। जो उन्होंने गलती करी थी तो मुझे आज तक नही पता चली क्योंकि आज तक मैंने अपनी मम्मी से नही पूछी और मैं पुछना भी नही चाहता क्योंकि मै नही चाहता कि मेरी मम्मी को बुरा लगे मैंने पिता जी को कभी नही देखा और ना ही अपने परिवार की बातो मे और जब भी मै उनके बारे मै पुछता हूं वो कहती है कि वो बहुत दूर चले गये है मुझे पता है कि मेरे पापा इस दुनिया मे अब नही रहे।

पर मै इस को बुरा नही मानता क्योंकि अगर मेरे माता पिता जेल मे नही जाते तो मैं इतनी अच्छी जिन्दगी नही जी पाता।

जब मै चार साल का था तब मै जेल मे ही रहता था मेरे दोस्त थे हम सब पढते भी थे। जेल मे एक स्कूल था जहा पर हम सुबह

Play

आठ बजे जाते और शाम को पांच बजे वापिस आ जाते थे अपनी मम्मी के पास।
धीरे धीरे मैं बड़ा हो गया फिर जब मेरी उम्र पांच साल की हुई तो एक दिन मेरी मम्मी ने मुझसे पूछा की, बेटा राजू आप दोस्तल जाना चाहते हो तो मैंने अपनी मम्मी से कहा दोस्तल क्या होता है। तब मेरी मम्मी ने कहा की, दोस्तल वो होते है। जहां पर अच्छे अच्छे खाने अच्छे अच्छे रहने को मिलता और वहां पर आपको बहुत सारे अच्छे अच्छे दोस्त भी मिलेंगे आपको दोस्त बहुत पसंद है ना तो मैंने कहा हां, और मैंने कहा की मैं दोस्तल जाना चाहता हूं जब मैं दोस्तल गया तो उस दिन मुझे बहुत अजीब लगा था और मैं दो दिनों तक रोता रहा और खाना भी नहीं खाया मुझे मम्मी कि बहुत याद आ रही थी दोस्तल पहुंचकर मुझे पता चला की मेरी एक बड़ी दीदी है जो वहां पढ़ रही थी मैं अपनी दीदी से मिलकर और मेरे से मेरी दीदी

मिल कर बहुत खुश हुई। मेरी बड़ी दीदी एक और स्कूल मे पढती थी।
I.V.F ~~को~~ एक पिकनिक के दौरान मेरी मुलाकात उन से हुई
मै होस्टल मे आराम से रह रहा था, मेरा वह मन लग गया था मेरे दोस्त भी बन गये थे। ~~एक~~ मेरी सातवी साल गिरा पर मुझे एक सन्दूस बड़ा तोफा मिला। मेरी मम्मी जेल से छूट गई थी और वो मुझसे मिलने आई थी।
फिर मेरी लाइफ मे एक मोड़ आया एक बार हम सारे दोस्त चर्च गये तब हमारी ~~उम्र~~ आठ साल कि हो गई थी और हम सब चर्च गाया और वह पर हमने देखा कि वह पर सारे गाने गा रहे थे और सगीत बजा रहे थे फिर जब चर्च समाप्त हो गया तो हम सारे दोस्त चर्च के पास्टर के पास जाकर बात करने लगे और इसी बीच मैने पास्टर जी से पूछा की पास्टर जी क्या मै यह Drum ~~बजा~~ बजा सकता हूँ तो उन्होने कहा की क्यो नही बजाओ फिर मैने बजाए फिर उन्होने कहा very Good आप तो बहुत

अच्छा मजा लेते हो उस दिन मुझे
बहुत अच्छा लगा। फिर मैं धीरे धीरे
बड़ा हो रहा था मेरी उम्र बढ़ रही
थी। हर साल मेरे लिए कुछ
नया हो रहा था मेरे को बहुत
अच्छा लगा रहा था मेरी जिन्दगी
अच्छे से चल रही थी।
मैं कक्षा मे अच्छा नहीं पढ़ पाता
था और मै अपनी कक्षा मे
सबसे पिछे बैठा करता था फिर एक
दिन मुझे मेरी मैडम ने मुझे आगे
बुलाया और मुझे एक सवाल दिया
और मैं वो सवाल नहीं कर पाया।
फिर मैडम ने मुझे बीच मैदान
मे खड़ा कर दिया उस दिन
मुझे इतनी शर्म आई कि उस दिन
मै बहुत रोय जा रहा था
तो मुझे को मेरी मैडम ने कहा
बैठा रोने से कुछ नहीं होगा पढ़ने
से होगा। फिर मैंने पढ़ने शुरू
किया था उस दिन के बाद मैं आगे
बैठता था अच्छे नम्बर लाता था
फिर उसके बाद सब कुछ अच्छा हो
रहा था। फिर एक दम सारे
पिकनिक मैं गया और वह पर
किरन दीदी भी आई हुई थी

फिर उन्होंने सब बच्चों को अपने पास बुलाया और सब बच्चों से पुछा बच्चों आप सब बडे होकर क्या बनोगे तो सारे बच्चे बाता रहे थे कोई बोल रहा मै यह बनुगा मै तो बनुगां जब मैरी बारी आई तो मैने कहा मै बडा होकर एक इमानदार पुलिस बनना चाहता हूँ तो मैम ने मुझसे पुछा कि आप क्यों बनना चाहते हो तो मैंने कहा मै इसलिए बनना चाहता हूँ कि जिसके परिवार का पिछला मतलब बेकाल हमारे जैसा परिवार हो उस परिवार का बच्चा कैसे पुलिस बन सकता है तो मैंने कहा इसलिए पुलिस बनना चाहता हूँ कि हमारे जैसे परिवार मे से भी एक पुलिस निकल सकता। आज मै दसवी कक्षा मे पढ रहा हूँ, मेरा परिवार बहोत खुश है मेरी दोनो बैहनो की शादी हो चुकी है और वो भी बहुत खुश है और मै धीरे धीरे अपने लक्ष्य कि और बढ रहा हूं, मुझे आशा है कि मै अपना सपना पुलिस

बन कर सकार कर सकूँ।

मैं Thankyou करना चाहता हूँ पूरे F.V.F का।

दिल कि बात

मैं आप सबको यह
बतना चाहता हू कि
डरो मत डर का
सामना करो तभी
जीत सकते हो।

Raj Sharma

Hello!

My name is Raj Sharma and I study in grade 10. Today I am sharing my life story.

My earliest memories are of Jail. My Parents had committed some mistakes that had got them to prison. I don't know what crime they had committed that had got them to Jail. I have never asked them. I will also never ask as I know they will feel bad.

I have never seen my father. In person or in any family photographs. When I ask my mother about my father she says that he has gone very far away. I know that my father has passed away. *But I don't feel bad that my parents went to prison. If they had not gone to prison, perhaps I would not have had such a good life.*

I was very young when my mother went to prison, so I could go with her. I had a lot of friends in prison. We used to go to a play school. We would begin at 8 and get back to our mothers by 5 in the evening.

Time passed and when I was 5 years. old my mother asked me if I would like to go to a hostel. I asked my mother "what is a Hostel".

My mother answered that a hostel is a place where you get

good food to eat, nice clothes to wear and meet a lot of new friends. I said "YES" I want to go to the hostel.

The day I reached the hostel I felt very strange. I cried for two whole days and did not eat any food. I missed my mother a lot.

Once I reached the hostel I found out that I have an older sister studying there. I was very happy to meet her and so was she very happy to meet me. Another surprise was in store for me. I had another older sister who was studying in another school. I met her at a picnic organized by IVF for all their partner schools.

I adjusted well to my life in the hostel. I had made good friends and I was happy.

On my 7th birthday I got a huge gift. My mother had got released from prison and came to meet me.

Then there was a turning point in my life. When I was 8 years old I attended church with a few of my friends. There I heard the choir sing and there was a band playing music. When church ended, all of us went to meet the Pastor and started talking to him. In between our chat I asked the Pastor if I could play the drums.

He said "sure why not".

I played the drums and he said "very good". He also said that I played very well.

I felt very good. That was the start of my passion for drums.

Time kept passing and each passing year got me new experiences. Life was good.

But there was one problem. I was not able to concentrate on my studies. I used to sit at the back of my class. One day my teacher asked me to sit in the front and gave me a problem to

solve. I could not do it. My teacher turned me out of class and made me stand in the middle of the field.

That day I was very ashamed of myself. I cried a lot.

My teacher came up to me and said "you will get nothing by crying, but you will get everything by studying."

From that day on I started to focus on my studies. I began to sit in the first row and began getting good marks. After that everything changed for the better. I even became monitor of my class.

Some time later I had gone on a school picnic and Kiran Bedi Ma'am was there too. She called the children closer to her and asked them turn by turn what they would like to become when they grow up. Everybody was telling her his or her wishes. Then my turn came, I said that I want to become an honest police officer.

Ma'am asked me why I wanted to join the police.

I told her that I want to prove to the world that even a person with a family background like mine can become a police officer. I want to show the world that it is possible.

Today I am studying in the 10th standard. My family is happy. Both my sisters are married and my older sister has an adorable son.

I am slowly moving towards my goal. I am confident that I will be able to achieve my dream of joining the police force.

I want to thank IVF.

Straight from my heart

I want to tell everyone, don't be scared. It is only by facing your fears that you will WIN.

COUNSELORS' NOTE

Raj is confident of charting his own future under the mentorship of the IVF team. Aspiring to become a police officer Raj also finds time to practice for his other passion – playing drums. I envisage him striding forward in his uniform with his swagger and charm. He used to be very naughty but now has become more responsible.

His mother is home now and lives with her brother. Both work in a garment factory.

Renu Nag

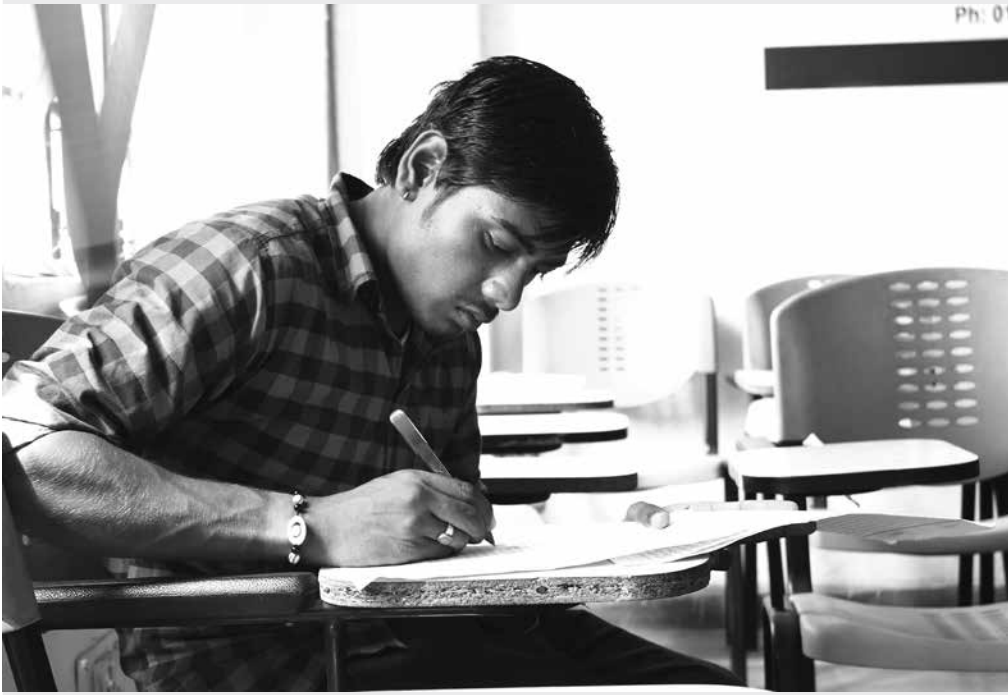

Balvinder Singh

19 years old

Student of Vocational Skill

मेरा नाम बलविन्दर है मैं दसंवी कक्षा में पढता हूँ मैं आप लोगो को अपनी एक सच्ची घटना सुनाना चाहता हूँ मेरा एक भाई है और उसका नाम राजिन्दर है और एक बड़ी बहन है जसबीर जिसकी शादी हो चुकी है और छोटा भाई राजिन्दर मेरे साथ पढाई करता है दसवी में।

मेरा एक छोटा सा परिवार था जो बहुत खुश था और एक दिन मेरे पापा ने नशे में आकर लडाई करी और मारने की धमकियाँ देता था और इसी बात से मेरी मम्मी को

डर लगने लगा और वो हम तीनों बहन भाई को लेकर नाना-नानी के घर ले के चले गई फिर दो-तीन बाद मेरे पापा मेरी मम्मी को धमका के घर जाने को बोला फिर मेरी मम्मी ने बोला की मैं तुमसे नराज नहीं हूँ बल्कि तुम मुझे मारने की धमकियाँ देते हो इसलिए मैं अपने बच्चो को लेकर घर नहीं आना चाहती फिर मेरे पापा ने मेरी मम्मी को गुस्से से कहा की घर चलो तो मेरी मम्मी ने मेरे पापा की बात मान ली और घर जाने के लिए तैयार हो गई मेरी मम्मी घर

जाने लगी तो उसी समय मेरे पापा ने पास रखे हेड़ पंप से मेरी मम्मी को मारने लगे। उसी समय मेरी नानी मेरी मम्मी को बचाने के लिए दौड़ी तो मेरे पापा ने मेरी नानी को मार कर घायल कर दिया फिर उसके बाद फिर मेरी मम्मी को मारने के लिए तैयार हो भड़क गए मेरी मम्मी को इतनी बुरी तरह मार-मार कर उनकी हत्या कर दी उसके बाद मेरे पापा फरार हो गए फिर पापा दो साल तक पुलिस से बचते रहे मेरे पापा का तीसरा साल भी होने वाला था कि वो पकड़ा गए और

वो जेल मे चले गए और उस समय
हम काफी छोटे से थे हमे कोई भी
समझ नही थी हमने तो सोचा की हम
तीनो बहन भाई अनाथ हो जाएगे पर
हमारे नाना नानी ने हमे अपने पास
रख लिया कुछ ही दिनो बाद मेरे
पापा ने जेल के अन्दर से I.V.F
वालो को हमे पढ़ाने के लिए बोला
मेरे पापा के बोलने के दो दिन बाद ही
I.V.F वालो ने हमे होस्टल मै डलवा दिया
और हम होस्टल मै खुश थे पर हमे
कभी-कभी रोना भी आता था क्योंकि
होस्टल मे सब बच्चो के माता-पिता

जाते थे और हमारा आने वाला कोई नहीं था हमारे होस्टल के जाने के बाद हमसे फिर I.V.F वाले आए जिन्हो ने हमे पहनने के लिए कपडे दिए और खाने लिए कुछ चीजे दी उस समय हमे काफी अच्छा लगा की हमे कोई तो आता है हमसे मिलने के लिए उसी दिन से हमने अपने मन में ठान लिया कि हमारे को आगे बढाने वाले है वो भी हमारा I.V.F. हमारी I.V.F. वालो ने कभी मदद की कि हमे कभी भी उन्हो ने अकेला पन छोडा ही नहीं हम तो एक पल के लिए बोलते थे

दुसरे बच्चों से की हमारे भी मम्मी-पापा
है वो है हमारा I.V.F और अब हम
दसवीं कक्षा मे है पर मेरी बहन ने तो
चौथी कक्षा मे ही पढ़ाई छोड़ दी थी क्योंकि
उसको मेरे मम्मी-पापा की याद आती थी
उसी दौरान चार साल बाद मेरी बहन
की शादी हो गई है और अब हम दोनो
भाई हेस्टल से घर आए तो मेरा नाना
के पास जो हमारा मकान था उन्हो ने
हमे देने का फैसला किया तो जो मेरी
मामी है उन्हो ने उस मकान को अपने
नाम कर लिया और हम दोनो भाई
के पास मकान नहीं है रहने का और हम

कभी नाना के घर तो कभी बहन के
घर तो कभी मौसी के घर फिर
हमने सोचा की हमें कोई नहीं अब
मदद करने वाला पर हमें I.V.F ने
बुलाया और रहने का और पढ़ाने का
आगे बोला और वो हमें अभी भी
सपोर्ट कर रहे है
मेरे पापा ने मेरी को मार दिया तो
हम दोनो भाई पापा से नफरत करने
लगे उनसे कभी भी जेल में मिलने
नहीं जाते थे फिर जब 12 साल
बाद हमारे I.V.F के सर ने हमे
दोनो भाईयो से कहा कि तुम

अपने पापा से मिलना चाते हो तो हमने
मना कर दिया फिर कुछ दिनो बाद
सोचा कि जब हमे प्रभु यीशु मसीह
माफ कर सकता है तो फिर क्यो ना
हम अपने पापा को माफ कर दे उसके
बाद हमने सर को कहा कि हम पापा
से मिलना चाहते है फिर हम खुश
हो गए पापा से मिल कर मै बलविंद
जो सिंगर बनना चाहता हूँ और मेरा
छोटा भाई राविन्दर पुलिस बनना चाहता
है यह तभी हो सकता है जब हम अपनी
मेहनत और मसीह पर विश्वास रखे

(दिल से)

My Life is nothing without my I.V.F

और मैं आप को अपनी घटना लेकर यह ऐसास दिलाना चाता हूँ कि तुम अपने-आप से कभी हार मत मानना और अपनी महनत और विश्वास से आगे बढ़ना

Balwinder Singh

My name is Balwinder, I am studying in the 10th Standard.

I would like to share with you my life story. I have a brother whose name is Rajinder who studies with me and an older sister Jasbir, who is married.

I had small and happy family. We used to study at the government school. My father used to drink a lot and then get into arguments with my mother. At times he would even threaten to kill her.

This used to happen very often and my mother got quite scared. She took the extreme step of leaving home with the three of us and went to stay with her parents.

Two days later my father came to my grandparent's house and threatened my mother and asked her to come back home. My mother said that she was not angry with him. But because of his constant threats to kill her had left home and does not want to come back.

He spoke very angrily to my mother and insisted that my mother come home.

My mother agreed.

As she and my father was walking my father saw a hand pump. He yanked it out and started beating my mother. My grandmother rushed to save her. My father beat her also

mercilessly and wounded her very badly, and then continued to beat my mother. He beat my mother to death.

After committing the crime he absconded. He managed to escape from the police for 2 years.

He was caught in the third year and put into prison.

I was 6 years old. We were very young then and had no idea what was going on.

But we realized that all 3 of us had now become orphans. My brother sister and I have a very close bond. We love each other a lot. Especially since we did not get love from outside. Our hearts beat as one. Even if one of us is not happy none of us is happy. We try to remain happy for one another.

My grandparents kept us with them.

Some time later my father met IVF counselors in prison. He requested them to educate us. Just 2 days after meeting my father, IVF counselors met us and put us in the hostel.

We were happy in the hostel for most of the time. But used to feel very sad when no one came to visit us unlike other children whose parents would come.

But IVF would visit us. They would give us clothes and food. That used to make us very happy. We too had someone to visit us.

We realized that day that if anyone can take us forward in life it is IVF. They never let us feel lonely. We used to tell the other children that IVF is our parent.

My sister could not study after grade 4. She never adjusted to life in the hostel and kept remembering our parents. She was bullied and falsely implicated, so she left school. 4 years later my grandparents and uncles got her married.

When we got home from our hostel my grandfather

decided to hand over to us a house, of which we were rightful heirs. But my deceitful aunt got the house papers transferred to her name.

We now have no home.

We keep shuttling from one relatives house to another. Sometimes at our sisters house, sometimes at my aunt's house and sometimes at my grandparents house. Our grandparents are too old to support us. We look after them when we are staying with them.

My brother and I hated my father. We were very angry with him. He killed our mother. We refused to acknowledge his presence. We never went to visit him in jail. We were also very scared of him. Felt that maybe he will kill us too.

Soon after killing our mother my father ran away. He returned later looking for us. My mother's family had announced a reward of Rs. 5000/- to anyone who would catch my father. A relative trapped him and informed my paternal uncle. He was then sent to jail.

At the hostel we used to read the Bible and learn about the life of Jesus Christ. He had a big heart. He forgave those who sinned against him. Then we thought if Lord Jesus can forgive his sinners and forgive my father then why can't we forgive our father.

My brother and I then decided that we would forgive our father. It took us 12 years. We told our IVF sir that we want to meet him.

But we were scared. We met him, touched his feet and he started crying. There was an outpouring of emotion. We were ready to embrace him. I felt good after meeting my father. All our hatred went away.

When my father came out on parole, my grandmother forgave him.

Today my father takes care of us. He regrets what he has done. He gives us money...what he makes from doing work in the prison.

My mother had 4 brothers, my maternal uncles. They all felt responsible for my brother, my sister and me. Unfortunately all passed away. I refused to accept that they are no more.

The family situation became so tough, I kept worrying about it and fell ill. That's why could not study hard.

I want to be a singer, my mother used to encourage me. I have confidence in my talent. I have composed a Punjabi song. I used to sing at all the school functions. My brother wants to join the police. This can only happen if we have belief in our selves and our strength. Our mind is focused on creating our future, it does not go towards doing bad things.

We have good friends, who help each other out in time of need. I enjoy reading stories, comics, doing magic tricks....

There is only thought in my mind "I don't have a home". We brothers keep wandering house to house. We want to be rooted. We keep dreaming of life with our father.

I just got my 10th grade results. I could not clear 3 subjects. I got very dejected. Doubted that I could ever do anything in life. But have faith in God, he will show the way.

But help again came our way from IVF. They are helping us with acquiring skills so that we can become employable. They are continuing to support us.

I belong to a Sikh family but believe in Jesus. I have experienced the Lord's power in my life.

Once I was travelling by train. At the station my foot got

stuck in the gap between the platform and the train. My foot got extricated just in time before the train started. I was as though reborn.

I pray every morning for my grandparents, my family and my future. I attend church whenever I get a chance.

Just like Kiran Bedi Ma'am helped us, I hope she helps lots of others like us.

I would like to say that work hard and move forward. Without hard work you can not achieve anything.

My father will be free in 2 years. He has some money saved up, hopefully we will have a home. I am waiting to start a new life together with my father.

Straight from my heart

My life is nothing without my IVF. Through my story I would like to make you realize that never get defeated with yourself.

Keep moving ahead with you hard work and belief.

COUNSELORS' NOTE

Initially Balvinder was full of anxiety and anger, but with time and counselling he understood the realities and forgave his father. Now he is getting electrical vocational training.

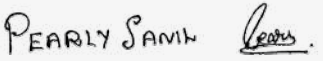

Myna Khan

(Name changed)

20 years old

Student of
Mass Communication
& Journalism

मेरा नाम मीना है। मैं IInd year में पढ़ती हूं। मैंने अपनी पूरी पढ़ाई ही होस्टल से की है।

मेरे मां बाप के पास इतने पैसे नहीं था कि वो मुझे किसी अच्छे स्कूल में पढ़ा सकें। तो मेरी पढ़ाई में IUF ने ही Help किया है।

मुझे भी और मेरी बहन को भी IUF ही सपोर्ट कर रही है।

छोटी सी उम्र से होस्टल रहने की वजह से वहां की आदत पड़ गई थी।

होस्टल में तो शुरू में रहना अच्छा नहीं लगता था। क्योंकि घर छोड़ कर कहीं और रहना मुश्किल होता है। फिर भी पढ़ाई के लिए सब कुछ सिख गये थे।

मैंने होस्टल में काफी अच्छी-2 Friends भी बनाई थी जो मुझे पढ़ाई से लेकर हर काम में मेरी Help करती।

ऐसे वक्त मुझे खुशी भी होती थी कि घर से दूर रहे कर अच्छे होस्टल मिल गये।

होस्टल में रहते-2 मैंने सब कुछ सिखा। पढ़ना, खाना-खाने का तरिका

पहले में होस्टल में थी इन दिनों बहुत कुछ problems भी आई थी लेकिन हर वक्त IUF मेरे साथ रहा।

घर आ कर भी काफी मुश्किल आई but इस Time में मैंने अपने आपको आगे बढ़ना ही सिखा। मुसीबत हर किसी की life में आती है। मुसीबत का सामना कर के मैं अपनी life का जी रही थी।
12 class के दौरान ही मेरे पापा भी बिमारी में और कुछ कारणों की वजह से उनकी मृत्यु हो गई। माँ के जाने के बाद तो ऐसा लगता था कि पापा है but अब तो पापा भी चले गये थे। ऐसे हाल में तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूं, क्योंकि पापा ही सब कुछ थे मां के बाद तो। ऐसे वक्त मैं बड़ी थी और मेरे से छोटे 2 भाई और बहन जिनकी चिंता तो मुझे ज्यादा थी। उनकी वजह से और भी problems लग रही थी।

उस दिन तो जैसे मेरी life ही बदल गई
थी। रात ही रात जैसे ज़िन्दगी ने
अपना मोड़ ले लिया।
उस वक्त और भी मुश्किलें आईं कहीं लोगों
ने तो कहा भी पढ़ाई छोड़ कर काम कर
ले या शादी!
पर मेरा ऐसा मानना था कि मुश्किल से भागना
नहीं चाहिए इनका सामना करना चाहिए और
मैंने किया भी मैंने 12 class पूरी कर ली।

पास भी हो गई थी। लेकिन आगे क्या
करना है कुछ पता नहीं था study करनी
भी है या नहीं। कोई idea
ही नहीं था।

लेकिन IUF ने फिर और एक बार
मेरा साथ दिया मुझे पढ़ने का मौका
दिया।
मैंने college में addmission ले लिया।

वहां जा कर तो शुरू से अच्छा नहीं
लगता था। बाद में सब अच्छा लगने लग
गया।
मेरे जो class sir है वहां काफी अच्छे है

मेरी study में Help करते है सब मुझे
अच्छी तरह पढ़ते है।
New Friends भी अच्छे है।
मेरी कामों Help करते है पढ़ाई में।

मुझे अच्छा भी लगता है कि इतनी मुश्किल
के बाद भी मैं यहां तक आ पाई
IUF को मैं दिल से Thanks कहना
चाहती हूं कि उन्होंने मेरी इतनी
Help की। उम्मीद है कि आगे भी Help
करेंगी।

Dil ki Baat

मैं अपने Friends को और इन
मां-पापा को msg देना चाहती हूं
कि वो हर काम को दिल से करें तो
हर काम पूरा जरूरी होता है मुश्किल से
दूर जाने से वो और भी पास आती है
(मेहनत और लगन हमेशा रंग लाती जरूर है)

मैं समाज के हर इंसान को कहना चाहती हूं
कि वो बिना डरे हर काम ईमानदारी और
सच्चाई से करेगा तो पूरा जरूरी होगा।

मैं अपने I U F के सभी को
Thanks कहना चाहती हूं।

Myna Khan*

Hello, I am Myna I am studying, Journalism and mass media at university.

This is a 3 year program. You learn mass communication, reporting and photography.

As a child I got attracted to being a reporter. I enjoyed investigating, collecting news and sharing it.

Since grade 2, Dr. Bedi has educated me. Besides giving me an education she also ensured that I and the other girls learnt values and life skills. Like respecting elders, how to dress, how to eat, how to conduct ourselves in public and so on.

My favorite subject in school was sociology. It is nice to learn about history and the world. I got good marks in sociology.

Now I am studying in a professional college.

I have lived in a hostel most of my life. My parents did not have the means to educate me in a good school. I could study only with help from IVF. Initially living in a hostel was tough as I found it hard being separated from my family but soon had to adjust for the sake of my studies.

I made some lovely friends and was happy that despite being away from home I had good company.

I preferred school to college as I had my close friends there.

* Name changed

I lost my mother when I was in grade 6. At that time I could not come to terms with my loss. I felt as though my life had become incomplete.

IVF consoled me like a family member and made me take my education forward.

After that I lived with my father. He was an alcoholic and used to keep ill all the time. I lost him when I was in grade 12. I was devastated He was everything to me after my mother passed away. He was the center of my life. When he passed away it was the worst day of my life. I felt that everything was over.

"WHY ME".

I lost my father a year ago. If I can survive the big shock of loosing my father, then nothing else matters. Since I survived that there is nothing I can't do.

My aunt (mother's sister) takes care of us now.

When my father was alive I felt carefree and life was not so tough. Now have a deep sense of loss. My life changed.

I got a reality check, people around me told me to get married or start working. I took stock of the situation and decided to take action. I felt a strong sense of responsibility towards my younger brother and sister. At that time IVF guided me and got me admission at NIILM university. Coming to college made me feel empowered.

I have a lovely family. We are 5 sisters and 3 brothers.

I am the oldest now. I have taken responsibility for my younger siblings. I have been there / done that. I have more experience so I can advice my sister.

I determined to study and IVF supported me. I got the strength.

My younger sister looks up to me and I encourage her to

keep studying. Luckily there are a lot of people around her who are like me and keep her motivated to study.

I have grown up. I don't depend on anyone. I know that I am alone. I felt that if I have a career I must support my family.

I am slightly nervous about my future but deep down I know that with Kiran Ma'ams support I can do a lot.

I felt very happy recently when I spoke to my friend after 2 years. We had lost touch. Friends are most important for me now. They understand me more than my family. All my friends are pursuing further studies, looking for a career.

I felt sad at being separated from them but we have a strong heart to heart bond.

This is a time for me to focus on my career. I don't want to be distracted by boys or marriage.

I want to have a great career. I want to prove that you can make a career without parents.

I am learning photography as an additional skill. Also doing a computer course.

"Time does not stop, use time wisely"

I enjoy reading about famous people. I read the bible in my Christian hostel and also read about Kiran Bedi's life.

I also enjoy dance and music, playing badminton and love to travel and go out with friends, visit religious places, see movies, visit other schools and colleges.

I love to do make up and fashion. We did not get an opportunity in school to dress up. We were kept simple. Now there are no restriction

I will never break a rule, I celebrate Birthdays and teachers day. I am leading a good life. I have no pressure. I don't want pity, I want to be an example for people who don't have a family.

I want to thank Kiran Ma'am and God.

Even today I remember my parents daily and miss them. I have not found them in anyone. Not even Maasi.

Parents can forgive, but others cant, so don't want to do anything wrong. Don't want anyone to point finger at me.

A single girl is vulnerable. You are forced to get married.

I just want to study and make a good life for myself.

Straight from my heart

I would like to give this message to all my friends and their parents. "Do all your tasks sincerely giving all your effort. Complete all the work you have started. The more you run away from difficulties, the more they chase you.

Hard work and sincerity always gives you good results."

I would like to tell everyone out there in the society we live in that if you work with sincerity and with honesty then you will certainly be able to complete all your tasks.

I want to thank all my dear ones at IVF.

COUNSELLOR'S NOTE

Myna (name changed) is a good student. She met IVF in 2002. Her parents were drug peddlers and addicts. They are no more. They had a butcher shop in Jahangir Puri as a front. They built a house which her aunt and uncle acquired.

Her parents kept going in and out of Jail. IVF got a request and got her admitted in grade 2. She is aware of her reality and wants to change her life.

She is a conscientious student... Self driven.

She has a large heart. Helps friends even when she herself is in a tough situation.

She stayed at home for 2 years after her 10th but did not get influenced by her surroundings.

Monica Dhawan

Aminoor

22 years old

Student of Physio-therapy

I am Aminoor and I was born at Delhi (Yamuna Pushta) on 9th August 1992 and belong to a very poor family. Now I am a student of BPT (Bachelor of physiotherapy) 3rd year. I have only my mother and a sister. My mother is a 45 years old and illiterate lady that's why she is unable to do a job. Now she is living with my mama (My mother's brother) my sister is also illiterate and she used to sewing cloth and earns.

My father was a poor farmer at west bengal and had not own ground area for farming. Therefore my parent had faced financial problem and they both were come in Delhi. They lived in Sanjay Amar Colony Yamuna Pushta Delhi-6 (behind the Vijay Ghat). They taken rent a Jhuggi (Hut) and stay there. My father used to work as a

labour and earn few money. After some time later I was born and then two years letter my sister. For an important reason my father was gone in village to left us in Delhi and there when I was five year age my father had died an accident of the abdominal operation. It was the time which I could not under--stand because I was child but my mother knew this situation She lived with us in a Jhuggi (Hut) alone and worked as a homemade for other people. I know how my mother doing hard work and faced difficultie for us in a strange area.

We lived in a slum area that's why my friends were spoiled and used to gamble, Smoking etc. Therefore my mother sent me and my sister in Navjyoti Grali School.

because I want to do better and support to my mother so I was regular in school. But my sister didn't go school. regular therefore she could not do study.

In 2002 when I was in 10 year old then taken admission in 3rd class in a boarding school. (Gurgoun). I came here after the Gali school. my mother paid my school fee 250 Rupees in per month. I did not want to stay hostel to leave my mother and sister and want to met with them. But my mother met with me after one or two months later because she had no enough earn but she want to made me an educated person. After 5th class in 2005 our school fee was exceed 500 Rupees per month that is why my mother unable to paid my school

fee. A moment was come in my life when had no any one who can support us and could pay my school fee. Therefore the principle had withdraw me from school. My mother requested for remit my school fee to the principle but it was not possible In this time I have no anyone there who could financially support to us and sent me again school.

My mother listen about IVF (Indian vision Foundation) from any other person. and sent me in IVF office. Mama requested for me the educational financial support. In 2005 IVF adopted me when I was in 6th class. IVF admitted me again in the Gurgoun.

I know that I am a poor slum area boy which have no any future. I realised if I ~~do~~

do not do study then I will not do better. I realised it when I was 12 year. Therefore I was participated in all school cultures and functions. I did my all work with full of my heart. I respected to my all elders and obeyed them my friends also helped me in my studies. I did not take risk in my education that's why I was come first rank in all my classes. I have passed 10th class with 80% marks in 2010.

In 2010 I have left Gurgaon school and taken admission in the CBSE (Delhi Board school). In 11th class as a medical science student. I have taken medical science subject because I want to become a doctor. It was not only my dream but also be my mother. I want to become a doctor because my father had

had died an accident of abdominal pain or injury. due to lack of money. My father did not treat and died. Therefore I want to become doctor and helped to those who are unable to treat. During 11th class I was admitted in Poulus Sadan hostel near Civil lane or Kashmiri Gate. IVF sponsered my pre-medical enterance exam and admitting to me sachdeva new PT college.

I have faced my difficulties in study because I was come in Hindi medium to English medium and I gave my best effort to study but even I was not clears the tests. I did my 12th class in 2012.

Finally in 2012, I have gotten admission in BPT (Bachelor of physiotherapy). at Murada Nagar, Ghaziabad. through the

support of IVF.

IVF played an important role in my life because they have provided to me all care like a parent. They adopted me and given me all facilities as like the ~~parent~~ parent provide to their child. I know when I was not any supporter who could help me in any education than the IVF gave me the support.

In my life IVF encouraged to me in all stage achievement I have not father but have mother and sister and I want to become a good supporter for them and help to those person or child who have not supporter I want to thank IVF from core of my heart.

"दिल की बात"

मैं एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ और एक अच्छा नागरिक बनकर दूसरो की मदद करूँगा। जिनको कोई परेशानी होगी पढ़ाई मे और जीवन में उनको मदद करने की कोशिश करूंगा। मैं अपने जीवन में IVF का आभारी रहूंगा क्योंकि IVF ने मेरी हर प्रकार से सहायता की है।

IVF ने मुझे पढ़ाई की हर वो जरूरतो को पूरा किया है, जो एक छात्र को चाहिए। हमेशा दूसरो की मदद करनी चाहिए

"दिल की बात"

हमे अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए मेहनत और संघर्ष करते रहना चाहिए। आलस्य नही करनी चाहिए और अपना पूरा ध्यान अपने काम में लगानी चाहिए। हमे अगर अपने लक्ष्य को पाना है तो हमेशा परिश्रम करना चाहिए चाहे हम किसी भी परिस्थिति मे रहे अपना काम लगन से करना चाहिए। संघर्ष ही जीवन मे एक ऐसा मंत्र है जो हमे हर प्रकार की समस्याओ को जूझने मे सक्षम करती है। हमे अपने जीवन मे हमेशा खुश रहना चाहिए और अपने काम में मन लगाना चाहिए।

अमिनूर

मेरा नाम अमिनूर है और मेरा जन्म दिल्ली में हुआ, दिल्ली के यमुना पुस्ता नामक स्थान पर। मेरी जन्मतिथि 9 अगस्त 1992 है और मैं एक बहुत ही ग़रीब परिवार से संबंध रखता हूं। अभी मैं बैचलर ऑफ़ फिजियोथिरेपी का छात्र हूं। मेरे पास केवल मेरी माताजी और मेरी बहन है। मेरी माताजी 45 वर्षीय महिला हैं और वो अशिक्षित हैं। इस कारण वे कोई नौकरी नहीं कर सकतीं। इस वक्त वे मेरे मामा जी के साथ रह रही हैं। मेरी बहन भी अशिक्षित है और वो कपड़े सिलने का काम करती है, जिससे वह कुछ पैसे कमा लेती है।

मेरे पिताजी एक गरीब किसान थे पश्चिम बंगाल में और उनके पास अपनी कोई जमीन नहीं थी, जिससे वे खेती-बाड़ी कर सकें। इस वजह से मेरी माताजी और पिताजी ने बहुत ही परेशानियों का सामना किया। आर्थिक स्थति बहुत ही खराब थी। और फिर मेरे माता-पिता दोनों दिल्ली आ गए। मेरे माता-पिता दोनों संजय अमर कॉलोनी (यमुना पुस्ता) में रह रहे थे, जो कि विजय घाट के पीछे है। उन्होंने किराए पर एक छोटी-सी झुग्गी ली और वहां रहने लगे। मेरे पिताजी एक साधारण मजदूर की तरह कार्य किया करते और कुछ पैसे कमा लिया करते थे। कुछ समय बाद मेरा जन्म हुआ और उसके दो साल बाद मेरी बहन का। किसी जरूरी कार्य की वजह से मेरे पिताजी को गांव जाना पड़ा और उस समय मेरी आयु सिर्फ़ पांच वर्ष थी। वो हम सबको दिल्ली में छोड़

गए थे। मेरे पिताजी की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। यह वो समय था मेरे लिए, जिसमें मैं खुद को नहीं समझा पा रहा था और न ही संभल पा रहा था, पर मेरी माताजी इस स्थिति को अच्छे से समझती थीं। मेरी माताजी एक झुग्गी में हमें लेकर रहती थीं और दूसरों के घरों में बहुत ही मेहनत से हम लोगों के लिए काम करती थीं। और उन्होंने बहुत-सी परेशानियों का सामना किया एक अजनबी जगह पर रहकर। हम एक बहुत ही गरीब वातावरण में और बहुत खराब-से एरिया में रहते थे, इस कारण जो मेरे दोस्त थे, वे गालियां, धूम्रपान जैसे गलत कार्य करते थे। इसलिए मेरी माता जी ने मुझे और मेरी बहन को नवज्योति गली स्कूल में भेजा। क्योंकि मैं भी कुछ अच्छा करना चाहता था और अपनी माताजी को सहारा देना चाहता था। मैं लगातार विद्यालय जाता था, पर बहन नहीं जाती थी। इसलिए वो पढ़ नहीं पाई।

सन् 2002 में जब मैं 10 वर्ष का था, तब मेरी माताजी ने मुझे हॉस्टल भेजा, वहां मैंने तीसरी क्लास में दाखिला लिया, वह स्कूल गुड़गांव में था। मैं वहां गली स्कूल के बाद गया था। स्कूल की 250 रुपये फीस मेरी माताजी ही देती थी। मैं अपनी माता जी और बहन को छोड़कर हॉस्टल में नहीं रहना चाहता था। मेरी माता जी मुझसे दो या तीन महीने के बाद मिलने आती थीं, क्योंकि उनके पास इतने पैसे नहीं होते थे। पर वो मुझे शिक्षित बनाना चाहती थीं। पांचवीं कक्षा के बाद हमारी स्कूल की फीस 500 रुपये कर दी गई। अब मेरी माता जी इतने पैसे नहीं दे सकती थीं मेरी स्कूल की फीस के।

मेरी ज़िंदगी में एक ऐसा मोड़ आया, जब मेरे पास हमें सहारा देने के लिए कोई नहीं था। कोई भी ऐसा नहीं था जो मेरी स्कूल की फीस दे सके, जो वहां मुख्य अध्यापिका जी थीं उन्होंने फीस न भरने के कारण मुझे स्कूल से निकाल दिया। मेरी माताजी ने बहुत ही विनम्र प्रार्थना की मुख्य अध्यापिका जी से मेरी विद्यालय की फीस को क्षमा करने की, पर यह जैसे असंभव था। उस समय यह संभव नहीं था। उस समय कोई

ऐसा नहीं था, जो पैसे से हमारी मदद कर सके और दुबारा मुझे विद्यालय में भेज सके।

मेरी माताजी ने किसी दूसरे व्यक्ति से इंडिया विजन फाउंडेशन का नाम सुना था, उनके बारे में बहुत-कुछ सुना था। मेरी माताजी ने मुझे IVF कार्यालय में भेजा और मामा ने वहां पैसों से जुड़ी परेशानियों को बताया और सभी कुछ बताया। मेरे मामा जी ने अनुरोध किया मुझे सहारा देने के लिए। सन् 2005 में IVF ने मुझे अपना लिया और मुझे सहारा दिया। फिर से मुझे गुड़गांव भेजा गया।

मैं जानता हूं कि मैं एक गरीब परिवार से हूं। मेरा अपना कोई भविष्य नहीं था, पर मैंने यह महसूस किया कि अगर मैं पढ़ाई नहीं करता, तो मैं कुछ अच्छा नहीं कर सकता। मैंने यह बात 12वीं कक्षा में महसूस की और इसलिए मैंने सभी विद्यालय की गतिविधियों में अपना योगदान दिया, सांसारिक गतिविधि में भी मैंने भाग लिया। मैंने अपने सारे कार्यों को पूरे हृदय से किया। मैं अपने सभी बड़ों का आदर करता था और सभी की आज्ञाओं को मानता था। पढ़ाई में मेरी मदद मेरे मित्रों ने भी की। मैं अपनी शिक्षा के लिए कभी कुछ गलत नहीं कर सकता था, इसलिए हर कक्षा में मैं प्रथम आता था। मैंने अपनी 10वीं की परीक्षा 80 प्रतिशत अंकों से पास की।

सन् 2010 में मैंने गुड़गांव हॉस्टल छोड़ दिया और दिल्ली में CBSE बोर्ड में दाखिला लिया। मैंने ग्यारहवीं कक्षा में विज्ञान विषय लिया ताकि मैं मेडिकल का विद्यार्थी बन सकूं। मैं एक सफल चिकित्सक बनना चाहता हूं। यह केवल मेरा ही स्वप्न नहीं था, अपितु माताजी का भी था। मेरे पिताजी की मृत्यु भी एक दुर्घटना में हुई, एक पीड़ा में हुई। क्योंकि मेरे पिताजी इलाज नहीं करा सके पैसे न होने के कारण, इसलिए मैं चिकित्सक बनना चाहता हूं और उन लोगों की सहायता करना चाहता हूं, जो अपना इलाज नहीं करा सकते। ग्यारहवीं कक्षा में मुझे पोलस सदन हॉस्टल में दाखिला दिलाया गया, जो कि सिविल लाइन मैट्रो स्टेशन के

पास है। IVF ने मेरी प्री-मेडीकल परीक्षा में साथ दिया, उन्होंने Entrance Exam में भी साथ दिया और मुझे सचदेवा न्यू पी.टी. कॉलेज में दाखिला दिलाया।

मैंने कई बाधाओं का सामना किया शिक्षा में, क्योंकि मैं हिंदी माध्यम से अंग्रेज़ी माध्यम में आया था। मैंने अपने बहुत अच्छे प्रयास किए पढ़ाई में। पर फिर भी मैं अपनी कुछ परीक्षाएं उत्तीर्ण नहीं कर पाया। मैंने अपनी बारहवीं कक्षा सन् 2012 में पूरी की।

अतः सन् 2012 में मैंने BPT में दाखिला लिया, जो कि बैचलर ऑफ़ फिजियोथिरेपी है। मुराद नगर में मैंने दाखिला ले लिया। केवल प्टथ के सहारे की वजह से।

IVF ने मेरे जीवन में बहुत बड़ा योगदान दिया, क्योंकि वो मुझे सब सुविधाएं प्रदान करवाने लगे। और उन्होंने मुझे ऐसे सहारा दिया, जैसे मां-बाप अपने बच्चों को देते हैं। वह सभी उन्होंने मुझे दीं। मैं जानता हूं, जब कोई नहीं था मुझे सहारा देने वाला, तो कौन मेरी शिक्षा में सहायता कर सकता था। पर IVF ने मुझे संभाला।

मेरे जीवन के हर कदम पर IVF ने मुझे प्रोत्साहित किया और हर कामयाबी पर मेरी हौसला-अफजाई की। मेरे पास पिताजी नहीं हैं, पर माताजी और बहन हैं। मैं एक अच्छा इन्सान बनकर उन लोगों को सहारा देना चाहता हूं, जिनका कोई सहारा नहीं है और अपने IVF को मैं तहे-दिल से धन्यवाद देता हूं।

Straight from the heart

I want to become a good citizen and help people. I want to help those people who have trouble continuing with their education or with any other problem.

I will always remain grateful to IVF as they helped me in every possible way. They gave me every possible help that a student may need.

We should always help others.

To go ahead in life we need to constantly struggle and work hard. We must never be lazy and focus on the task at hand. If we want to achieve our goals we need to concentrate on the task at hand and despite whatever circumstances we find ourselves in we must keep working towards our goal.

Struggle is the magic potion that will help us cope with our problems. We must always be happy and enjoy our work.

COUNSELLOR'S NOTE

From the time we met him his goal has been to become a Doctor and help the underprivileged. This was because he lost his father due to lack of medical facilities.

His dream will soon come true. He is studying to be a physiotherapist.

Pushpa Maurya

17 years old

Student of Banking & Finance

Myself Pushpa, Hello everyone and my dear friends, I want to introduce myself at beginning of my childhood experience, when I was one year old, my mom, Dad and elder brother went to jail due to my Bhabhi's death. As my mother was not well at that time, She was sitting inside the house by taking me on the lap. But we don't know what was set on the mind that this step she had taken. My father was on the job at that time No one was there upstairs, and my Bhabhi went upstairs and Committed Suicide. All her family had blamed my family and Complaint wrong report. This all things made my life very Struggle but I started my journey from Tihar Creche. I used to go to learn alphabets there. I've learn many things, it was like a play

School, we were used to do many activities at that time like drinking milk whether you like or not, sleeping at time, dancing, singing etc. when I was 5 yrs old I went to Hostel, with me there was Renu Di, photographer and my mosa ji. I had cried very much at that moment as I had gone far away from my mother. I was not able to control myself but as month passed. I was feeling satisfied with so many friends. But to follow Time Table was very difficult for me as we were very young and we've to get up early at 6:00 clock. This made me uncomfortable for some days but after few days we were very comfortable with that as it has corrected our habits. My incharge at that time was Sr. Glady. She was very studious and careful and helping us in our every needs. In my batch many Girls were there. We were all in same classes.

from U.K.G I began my study and till 10th class, I stayed in Hostel, from there I was going to School, after That I've done 11th and 12th from Delhi School. Now, I've planned many things to do in my life. I was very happy when we used to Go picnic from Our Hostel. We enjoyed that moment very much. I've Got many prizes and Certificates from School like in painting, Singing, Writing, exhibitions etc. and also from Kiran Mam, when I Got 3rd Rank in Commerce Stream from my School, This all Certificates which I've achieved is through Dr. Kiran Mam, who have given us opportunity to study in such a high Standard School, otherwise we've been never Got This education. In this modern age, Education is very much necessary, without education nothing Can be gotten. As my family Can't never Support me this much. My Dad is always

in Sad mood, as his Govt. job has Gone. he always Crying that he has lost his job. By Seeing parents in Sadness, I am feeling So depressed In my family, I am Small from all my brothers and Sisters. My family is large with facing many difficulties. To face this difficulties I've to study hard. My ambition is to become Doctor first, when I was in 2nd or 3rd class. But as I Came to higher class I changed my ambition, I've taken Commerce Stream to become 'CS'. My Dream is Only to become a Successful person in my life as my past studies Should not Go waste. I've Got inspirations from Dr. kiran Mam, who always Guiding us to achieve our desired Goals. As when my parents file gets reopen my mother, father and brother went to jail. I was very much upset and Crying all the time what to do in my life. As for a children

mother and father is everything who supports in all difficulties, Guiding us and improving our strengths to make your bright future. As when this happened I was not able to handle myself. But when I.V.F Members visits my home, I got a motivation to achieve my Career. As they are advicing us not to think as negative, always be positive and never determine yourself as failure. My family had faced many difficulties in life. when my mom. Dad was in jail. They were not Getting even food to eat. My all relatives had done nothing when my brother and Sister were small. I felt very Sad when I've heard this. As they have not Got even proper education because no one was there to take Care of Them. when I was

in Hostel, Outside students ask us That your parents are in jail. At that time, I was not having even single words to Say. I feel bad about hearing this So, I used to talk about Some other matter. I don't Know why God has Given us So much problems in Our life. Now, Its time to think about my future plans. I've Set my Goals to become a Succes persons in my life, and to fulfill dreams of my parents. For this I've to Study hard. I've to point to this because many of my friends in class XII, who are below average have their aim, and they think that they will surely achieve it So why I Can't do this. Many teachers, advised that you Can do everything, but always focus on your Goal, you will

Surely achieve it. I'am very happy who all had Given me advice for my future Goal and very thankful to them. Now, I will surely try my level best to become something in life. As, recently my 12th results had appeared and I've secured 1st position with 79% from my School. From, many difficulties I had Given my exam, otherwise I would have Got much better. I was fully tension with my whole year as when this Case gets reopen. I studied very hard to achieve it by forgotting this problems for some time. I am very happy that I've top my School. Teachers of my School all have appreciated me. My parents had felt very proud of me. They are very happy as when they

have heard this. Now, I hope that my mom-Dad will surely come soon.....!

Straight From My Heart....

I only want to convey message to Society that always mentor your children with care and give them a bright future. As we have struggle a life with so many difficulties, but then also we are standing at the topmost. Children from well-maintain family don't waste your parents money but use it as a success point. Never think that you are a failure as we are also from small background but never think as we are failure.

पुष्पा

हैलो! मेरे सभी प्यारे दोस्तो, मैं खुद को सबसे पहले अपने बचपन से आपको बताना चाहती हूं। जब मैं एक साल की थी, तब मेरी मम्मी-पापा और भाई तीनों जेल चले गए। वो सभी मेरी भाभी के खून के इल्जाम में गए थे। और मैं और मम्मी हम घर में बैठे हुए थे। हमें कुछ नहीं पता था कि किसके दिमाग में क्या चल रहा है। और पापा नौकरी पर गए हुए थे। घर में कोई नहीं था। मेरी भाभी सीढ़ियों से ऊपर गई और उन्होंने आत्महत्या कर ली। भाभी के पूरे परिवार ने मेरे परिवार के खिलाफ गलत गवाही दे दी और सारा इल्जाम मेरे परिवार पर लगा दिया। इन सभी बातों ने मेरे जीवन को एकदम संघर्षमय बना डाला। मेरी अपनी ज़िंदगी का सफर तिहाड़ के क्रैश से शुरू हुआ था। मैं वहाँ बहुत-कुछ सीखने जाती, जैसे वर्णमाला, मैंने वहाँ बहुत-कुछ सीखा जैसे खेलना। हमें वहाँ बहुत सारी गतिविधियाँ करनी पड़ती थीं, जैसे हमें वहाँ दूध पीना ही पड़ता था, चाहे हमें पंसद हो या न हो और हम सभी को समय पर सोना पड़ता था। और नृत्य, संगीत आदि हम सभी चीजें वहाँ सीखते थे। और जब मैं पांच वर्ष की हुई, तब रेनू दीदी के साथ मैं हॉस्टल चली गई। उस दिन मैं बहुत रो रही थी। मैं अपनी मम्मी के पास वापस जाना चाहती थी। मेरा खुद पर कोई नियंत्रण नहीं था और मैं खुद को संभाल नहीं पा रही थी और दिन और महीने गुजरने लगे और मैंने खुद को संतुष्ट महसूस किया, बहुत-से दोस्तों के साथ। पर

वहाँ की दिनचर्या मेरे लिए बहुत ही कठिन थी। हमें वहाँ प्रातः 6 बजे उठना होता था, जिसमें मैं खुद को आरामदायक महसूस नहीं कर पाती थी, पर फिर कुछ दिनों बाद मैंने खुद को ठीक महसूस किया, क्योंकि मेरी 6 बजे उठने की आदत बन चुकी थी। उस समय मेरी अध्यापिका और हैड श्रीमती ग्लैडी थीं, जो कि बहुत ही ध्यान रखने वाली थी हम सबका और हमारी हर कामों में और हमारी जरूरतों में सहायता करती थीं। मेरी कक्षा में और भी बच्चे थे और हम सभी एक-साथ पढ़ते थे। मैंने अपनी पढ़ाई U.K.G. कक्षा से आरंभ की और जब कक्षा 10वीं और 12वीं की पढ़ाई कर चुकी, तब मैंने अपनी ज़िंदगी में चीजों को करने की योजना बनाई। मैं बहुत ही प्रसन्न होती थी, जब कभी हम घूमने जाते अपने हॉस्टल से। हम उन पलों को बहुत आनंद से जीते। मैंने कई इनाम जीते, कई बार मैंने सफलताएँ पाईं। कला में, संगीत में, लेख लिखने में व प्रर्दशनी-प्रतियोगिता में भी बहुत-कुछ जीता। मुझे डॉ. किरन बेदी मैम से भी इनाम मिला, जब मैं अपने पूरे विद्यालय में कॉमर्स में तृतीय स्थान पर आई। और ये सभी पुरस्कार मुझे डॉ. किरण बेदी मैम की वजह से हासिल हुए, जिन्होंने मुझे एक उच्च स्तर के विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त करवाया। अन्यथा इस युवा उम्र में हमें शिक्षा का अवसर कभी प्राप्त ही नहीं हो पाता।

शिक्षा अत्यधिक महत्वपूर्ण है और शिक्षा के बिना कुछ भी आपका नहीं हो सकता। मेरे परिवार ने मुझे ज्यादा सहारा नहीं दिया, क्योंकि हमेशा मेरे पिताजी निराश रहते थे, क्योंकि वो अपनी नौकरी खो चुके थे। वो हमेशा रोते, क्योंकि अब उनकी सरकारी नौकरी उनसे छुट गई थी। पिताजी की ये दशा देखकर मैं बहुत ही कष्टों में घिर जाती थी। मैं अपने परिवार, भाई-बहनों में सबसे छोटी हूं। मेरे परिवार ने कई कठिनाइयों का सामना किया और इन कठिनाइयों ने ही मुझे अच्छा पढ़ना सिखाया। पहले मेरी इच्छा एक सफल चिकित्सक बनने की थी, पर उच्च कक्षाओं में आकर अपनी इस इच्छा को बदल डाला और अब मैं एक C.S. बनना

चाहती हूं। मैंने इसीलिए कॉमर्स का विषय लिया। मैं अपने जीवन में एक अच्छी लड़की, एक अच्छी इनसान बनना चाहती हूं, ताकि जो मैंने पहले शिक्षा ली है, वो बर्बाद न जाए। मैंने अपनी डॉ. किरन बेदी मैम से बहुत-कुछ सीख ग्रहण की है, वो हमेशा हमें यही समझाती हैं कि हम अपनी इच्छानुसार जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करें, जो हमें अच्छा लगता है उसी दिशा में जीवन को आगे ले जाएं। जैसे ही मेरे पापा-मम्मी की केस-फाइल को दुबारा खोला गया, तो मेरे पिताजी, माताजी और भाई जेल गए। उस समय मैं बहुत निराश थी और रो रही थी कि मुझे क्या करना चाहिए। जैसे हर मुसीबत में एक बच्चे को माता-पिता सहारा देते हैं और उनके भविष्य को बनाते हैं। ये वो वक्त था मेरे लिए, जब मैं खुद को संभाल नहीं पा रही थी। पर जब IVF के लोगों ने मेरे घर पर आना शुरू किया, मैंने उत्साह प्राप्त किया कि मुझे अपने जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। उन्होंने मुझे नकारात्मक से सकारात्मक चीजों की तरफ मेरा मार्गदर्शन किया और यही समझाया कि खुद को कभी भी असफल मत समझो। मेरे परिवार ने बहुत-से कष्टों का सामना किया। मेरे माता-पिता जेल में थे और मेरे पड़ोसियों ने भी कुछ नहीं किया। मेरे भाई-बहनों की देखभाल करने वाला कोई नहीं था, कभी-कभी उन्हें खाना भी नहीं मिल पाता था। जब मैंने ये सुना कि उन्हें शिक्षा भी नहीं मिल पा रही, तो मैं बहुत निराश हुई, उस समय मैं हॉस्टल में थी।

बाहर के बच्चे मुझसे कई सवाल करते कि क्या तुम्हारे माता-पिता जेल में हैं? उस समय मेरे पास उन्हें कहने के लिए एक शब्द नहीं होता था। मैं ये सब बातें सुनकर बहुत ही बुरा महसूस करती। मैं किसी और मुद्दे पर बात करने की कोशिश करती उस वक्त। मैं नहीं जानती कि प्रभु ने हमारे जीवन में इतनी परेशानियाँ क्यों दीं। अब मैंने अपने भविष्य के बारे में बहुत सारी योजनाएँ बनाई हैं। हमारे सभी मित्र जो कि पढ़ाई कर रहे हैं, वे सभी कहते हैं और यही सोचते हैं कि निश्चय ही एक दिन वे अपना लक्ष्य जरूर प्राप्त कर लेंगे और हमारी सभी अध्यापिकाएँ यही

समझाती हैं कि हमें अपना केंद्र-बिंदु अपने लक्ष्य को ही बनाना चाहिए। तुम जरूर ही उसे प्राप्त कर लोगे। और अब मैं बहुत ही प्रसन्न हूं और उन्हें धन्यवाद देती हूं, जिन्होंने मुझे अपना भविष्य बनाने के लिए प्रेरित किया। अब निश्चय ही मैं बहुत ही अच्छे प्रयास करूंगी अपने जीवन में कुछ करने के लिए। अभी मैंने 12वीं कक्षा 79 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है और कई बार ऐसी परेशानियों में मैंने परीक्षा दी है और फिर भी मैंने अच्छे अंक ही पाए हैं। मैं पूरे साल चिंता में थी, जब से वो केस-फाइल पुनः खुल गई थी, पर फिर भी सभी चीजों को भूलते हुए मैंने काफी परिश्रम किया है और मैं सफल भी रही। और सभी ने मेरी हौसला-अफजाई की। मेरे परिवार को भी मुझ पर गर्व महसूस हुआ, जब उन्होंने मेरे परिणाम की खबर सुनी। और मुझे आशा है कि मेरे माता-पिता जल्दी ही आएंगे।

दिल की बात

मैं केवल यही संदेश समाज को देना चाहती हूं कि सभी माता-पिता अपने बच्चों का सही से मार्गदर्शन करें और उन्हें एक सफल और सुनहरा भविष्य प्रदान करवाएँ। जैसे हमने सभी बाधाओं का सामना किया और आज भी हम ऊँचाइयों पर खड़े हैं। और जो बच्चे अच्छे और समृद्ध परिवारों से है, वो अपने परिवार और माता-पिता का पैसा बर्बाद न करें। उसे अपनी सफलता का केंद्र-बिंदु बनाने में लगाएं। कभी खुद को असफल न समझें। जैसे हम छोटे घरानों से जरूर हैं, पर हम ये नहीं सोचते कि हम असफल हैं।

COUNSELLOR'S NOTE

She feels very vulnerable as both her parents are in prison. But she has confidence in herself and her abilities. She was in the Tihar Creche when we met her. Right from that time to grade 12, Pushpa has impressed us with her hard work and determination. She is now studying in first year B.Com and is on the path of pursuing her dream of becoming a company secretary.

PEARLY SANIL

Sunny Kumar Srivastav

15 years old

Student of Grade 9

आज मैं बहुत खुश आज मैं अपने
बारे में जो मेरे साथ हुआ है
मैं वो बताना चाहता हूँ मेरी मम्मी
जब जेल में नहीं थी जब की
कहानी यह है कि मेरे पापा
मेरे साथ और मेरी बहन के खुश
नहीं रहते थे जब भी मैं
कुछ काम करता उसका उल्टा
मेरे ही पर इल्जाम आता
मेरे को मारते - पिटते मेरे को
काम पे भेजते और मेरे
से काम कराते । जब मेरी
मम्मी जेल मे गई तो मैं पाँच
साल का था और मैंने I.V.F
Join किया । I.V.F ने मुझे बहुत
साहैता किया है मेरे
स्कूल का नाम St. John's
mary Public स्कूल मैंने
3rd class से
4th class तक की और जब

मैंने 4th class pass की उसके बाद मैं ST. Johns Public इस स्कूल में मेरे को डाला अब मैं यहा पड़ता हूँ अभी मैं 9th class मैं हूँ यह स्कूल खेड़ा - खुर्द में है अभी मैं Hostel मे रहता हूँ मेरे को Hostel में अच्छा लगता है यहा पर सब चिज़े कि सीखता है मुझे पढ़कर आगे साहित्य में कुछ करके दिखाना चाहता हूँ मैं I.V.F और अपने माता-पिता का नाम अचा करना चाहता हूँ I.V.F मै मुझे लगभग 4 साल हो गए। I.V.F ने मुझे बहुत जगह घुमाने ले गए है और ले जाते है जैसे picnic, Summer camp जहाँ पर बहुत सारी चिज़ सिखने को मिलता Music, Dance, Sport आदि।

मुझे पढ़कर एक अच्छा बच्चा बनना है मुझे पढ़ाई के बाद जब X th Pass कर लूँगा उसके बाद जो तीन माह मे कि छुट्टिया पड़ेगी उसमे मैं English speaking course और computer ingineer करूँगा।

मुझे I.V.F ने बहुत से सामान भी दिए है जैसे कपड़े, किताब, पैन, पेंसिल से लेकर जूते तक I.V.F ने मुझे अच्छी तरह से देखभाल किया।

जब मैं एक साल होस्टल आया ही नहीं जिससे मैं एक साल पिछे हो गया पर क्या करू यह मेरी गलती है मजबूर था। मेरी दो बहने है एक नाम Arti जो पढ़ती है पर मैंने उसे 8 साल से देखा ही नहीं। और दुसरे

यहज लवली जो की अभी मेरे
मम्मी ~~%~~ के साथ रहती
है जेल में अब मैं अपने
HOSTEL कि बात बताना चाहता
हूँ मेरे HOSTEL लगभग 80
बच्चे रहते छोटे कुछ बडे
यह HOSTEL सिर्फ 10 th तक
ही मेरे HOSTEL में मुझे
सब प्यार करते है और
मुझे भी सब अच्छे लगते
इन में से कुछ लोगो के
पापा है ही नहीं और कुछ
के मम्मी मैं खुश हूँ जो
की मेरे माता - पीता और
I.V.F मेरे लिए इतना कुछ
करते है।

जब भी मै बिमार होता तो
I.V.F मुझे HOSPITAL ले जाता
और दवाईया भी दिलाते।
जब भी मैं ने I.V.F
को कुछ भी कहा
तो I.V.F ने मेरे को
बिना मना किए उसको

पुरा किया है।

I.V.F हसते हुए सब का काम करता है अगर वह छोटा बच्चा हो तो उसे पढ़ाई के लिए भेजा जाता है जहाँ तक वो पढ़ना चाहता अगर वह आदमी हो उसे Job करवाते है मैं I.V.F को धन्यवाद करना चाहता हूँ कि मेरे परिवार गरीब है मुझे पढा नहीं सकते पर I.V.F ने मुझे पढाया और यहाँ तक मैंने अपने दम तक पढाई की और भविष्य दिखाई।

Hostel में मैं बहुत सी Activities करता हूँ जैसे साफ - सफाई कभी कभार खाना भी बनाने के लिए चला जाता हूँ Hostel में मेरे अधिक दोस्त है जो की मुसीबत आने पर मेरी सहायता कि है।

मैं अपने माता - पिता और I.V.F
का आभारी रहुँगा और
मैं इनको धन्यवाद करता हूँ
जो कि मेरे को इतना कुछ
दिया। I.V.F और Kiran mam
को धन्यवाद Thank to you !

Dil ki बात

मैं यह कहना चाहता हूँ कि हर
समाज में हर एक बच्चे
को अगर वो लड़का
या लड़की हो उसे education
मिली और मिलनी चाहिए।

समाज को मैं यह कहना चाहता
हूँ हर बच्चा पढ़कर वो
अपने माता - पिता का नाम
अच्चा करता है पर मैं
I.V.F का नाम अच्चा करूँगा।

THANK YOU I.V.F

Sunny

Today I am very happy ! I have got an opportunity to share with you what I have gone through in my short life.

Before my mother went to Jail I used to live with my parents and my younger sister. But my father was never happy.

He would send me to work outside and work in the house too.

Whenever I would do any work my father would not like it. He constantly scolded me and beat me.

When my mother went to prison I was 5 years old. That's when IVF came into my life. IVF has helped me a lot. They put me in school, in the hostel where I am studying now in grade 9.

I have been with IVF for almost 9 years. IVF has given me a lot of things from clothes, books, pens, pencils to shoes. IVF has looked after me well.

I like living in the hostel, I have a lot of facilities here. I want to grow up and become someone. Prove myself to the world.

I want to make my parents and IVF proud.

IVF has taken me on numerous outings. Like picnics, summer camps etc where there is lots to learn in music, dance and sports. I want to study hard and become a good child.

In the three months break after grade 10^{th} I would like to study an English speaking course and learn about computers.

I have lost one year of studies as my parents did not let me

come to the hostel. I have 2 sisters. One is called Arti. I have not seen her for 8 years. I have another sister Lovely who lives in jail with my mother.

Now I would like to share about my hostel. 80 children live here of all ages. This hostel has children till grade 10. Everybody loves me in the hostel and I like it here. Some of the children here don't have their fathers and some don't have their mothers.

I am happy that I have my parents and IVF who does so much for me. When I am sick it is IVF that takes me to the hospital and gets me medicines.

Whenever I have asked IVF for anything they have never refused and always fulfilled my wishes.

IVF takes care of everyone in a very nice way. If it is a small child they educate him as long as he wants. If it's a grown man they help in finding him a job.

I want to thank IVF for educating me. I belong to a poor family who did not have means to make me study. IVF put me in school and not only are they educating me they are showing me the way forward to my future.

I take part in a lot of activities in the Hostel like cleaning, gardening and sometimes even carpentry. I enjoy competitions and take part in a lot of events. I have won a lot of prizes. I have a lot of friends who have helped me when I was in trouble.

I am happy within myself. I don't miss my parents.

I want to study computers, I am very interested in cars, would like to make them some day.

I will always be grateful to my parents and IVF and I want to thank IVF for giving me so much. I want to make them proud.

Thank you to Kiran Ma'am.

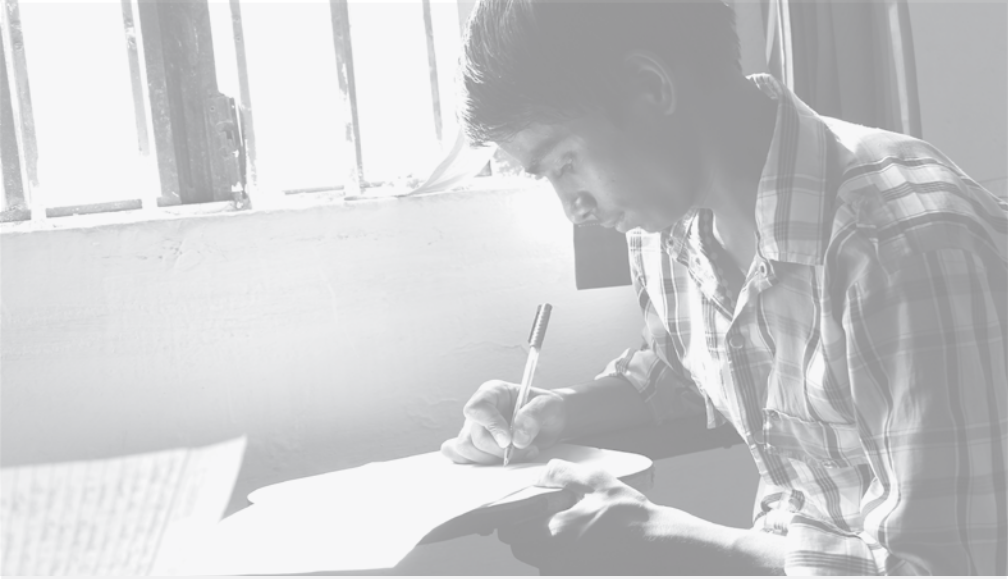

Straight From my heart

I want to convey that it is society's responsibility to educate the children whether girl or boy. I want to say that it is only through education can children make their parents proud.

I will make IVF proud.

COUNSELLOR'S NOTE

Sunny is a sweet and cheerful child. He is friendly. He enjoys playing sports and is good in studies. He has had a bad family life. His mother remarried and his step father was not nice to the children. Sunny has been abused as a child. His mother is HIV positive. Luckily Sunny is not.

His father was charged for murder.

Sunny has no contact with his mother or sister. His father calls sometimes.

He is a great example of making the best of his circumstances and staying happy.

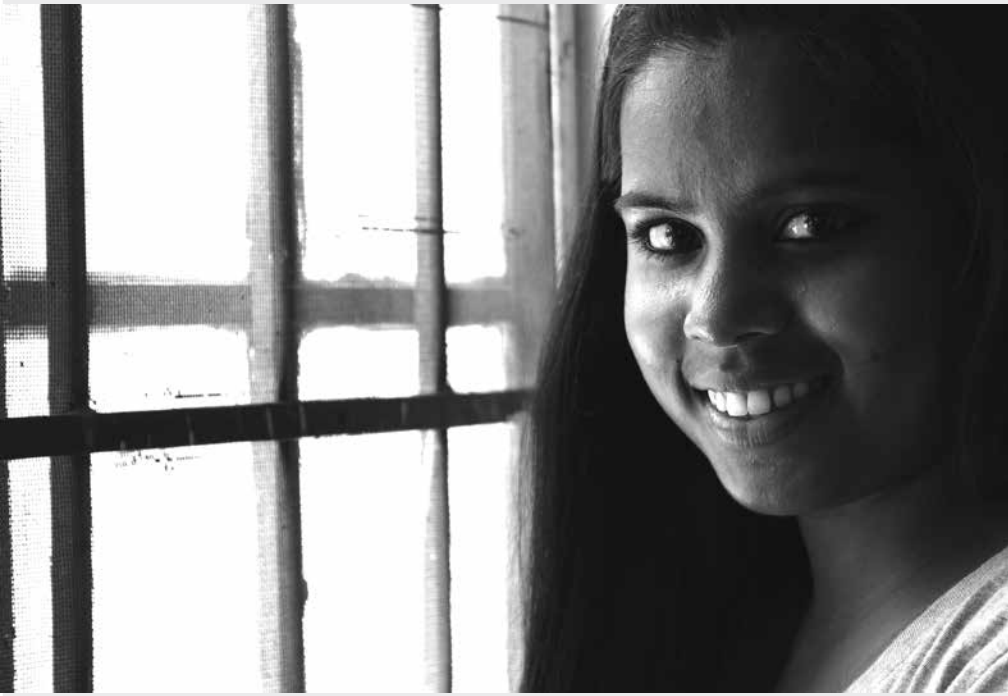

Jaimala

21 years

Student, Counsellor
in a leading university

From an Unknown face to Known face called Jaimala

I still remember the day when I was just 3 years old girl with no knowledge what is happening around me.

I was living with my parents and siblings, with 3 elder sisters and 2 younger brothers. That time I never knew the proper meaning of home because we never had ours, we use to spend our night at roadsides with no food & nothing.

At times we all spent our days by picking rags from roadside and surviving for food.

Then my father started driving rickshaw, where he used to earn minimum 150 Rupees a day and we were all 8 member at home, Now I am thinking how 8 members can survive just with 150 so!

Then my mother started working a house maid for our survival. she use to go early in the morning at 6:00 and come back at evening 6:00 by leaving all of us alone at home. I remember when she used to come back she used to hug us so

tightly, tears rolled from her eyes.

All of a sudden by dad was caught by police because he was involve in some fight, police took him to jail.

My dad went to jail. And my Mom was with no idea that she is going to take care of all of us and sunshine. Whenever my mom used to go for work she used to leave my small brother and me, she made us sit to some place and was utensils, clothes of others.

I was seeing every moments, As if we are living a life of hell. My Mom she used to bring clothes and toys for us which was given by those people under whom my mom used to work, the left out things of their kids. But I never had a guilt that it was used by other I can see my mothers hard work in those toys & clothes. Those things were like amazing gifts for me.

All of a sudden I was sent to hostel with no idea, no knowledge, what is hostel???

I had never leave without my mother. It was so painful for me to leave my mom. I was send to hostel by saying that we are going for picnic, me and small brother when we reached there we saw, 2-3 kids were also there.

I remember the first day after having lunch me starting waiting for our mother to take us home, but she didn't came. we started crying at the top of our voice that we want to go home, we were left sisters (Nuns), they said that Mom want us to study and become good children and she will come back in 2/3 days.
after 1 month my Mom came to meet me and my brother. We both started crying at top of our voice that we want to go home and never leave alone.

My Mom said to me that you are special gift which I received from god to wipe away all my tears and pain. Because I used to see myself how my mother used to work for other to bring up all of us.
My mother always used to say that "EK DIN TUJHE BADA INSAAN BANNAH HAI.

with famous personality. I started my studies with U.K.G class. I was always interested in book. and lost into it.

There were so many children around me at times I used to thing that I am gonna loose my self between these children. Then I started things why I have ~~sp~~ beeing choosen to live my life without my parents, why I had been send so fare for my studies. Then I made a friend in hostel Sabrina, she was so intelligent. At times I used to find myself so week. that I don't know anything. But she was so sweet to me, she used to help me with my studies at times.

Sometimes years also passed by not seeing my moms face. I use go behind a tree, talk to myself my we are so poor why there are so many difficulties in my family, I used to crying and say why God its only me??? Why me???
Then our exams started I gave my first exam and I was passed with 95% in class U.K.G. ~~everyone~~ everyone started appreciating ~~my~~ me that yes, I did something for me

whenever someone use to bless me that I did a good job. I used to pray to god that please Keep my Mom happy.
I was known as a Nanilla's Scholar after gaining sucha good percentage.

Slowly, Slowly when I reached upto 5 class Some people used to Visit regularly I started recognizing that these people are visiting us regularly, who are They ??? when I grew little Older we recognised that IVF Counsellor are Visiting us and helping us with my studies. IVF were also helping my brothers and sisters with their studies. Still I had a Question always that why they are helping us.???

As time passed by sisters started teaching us how to take care of ourself. How to making chappati. We used to wash clothes by ourself. Yes, life was good I felt lonely everyone and use to think what my mother is doing did she had food or not.

Sometimes I used to reach upto the school gate and see children are going home with their parents by holding their parents hand. I miss my Mom so badly that time.

Times passed by I started relaizeing that why IVF is helping us. They are helping us become I belong to a Vunerable family when my dad is in jail my mom had no money to send me and my brother to school.

Then One thing strike to my mind that these people are helping us so much why can I put little more efforts to my studies so, that everyone can feel proud of me and I can help my Mom and Dad so, I reached upto 10th class that time and started focusing on my studies it was almost 2 years I had seen my Mom's face. I thought now I will go home by achieveing good marks in my board Exams.

Studying hard day and night just to fulfill my moms dreams so, it was time for board and when

the result was out I was at the top of my joy that yes, for the first time I made over my goal. I received 75% in board exams.

After receiving result a tears of happiness automatically rolled from eyes that yes I made it.
I was so happy that I had crossed my best friend percentage.

That day I felt that yes I am special because people never asked me that how I am in studies, but after my 10th class people started asking that what that girls name who lives in hostel and achieved good marks. I promised myself that I never make things better and break all the pain and sorrows which my parents are suffering.

When I was focusing in my studies my Mother worked day and night and bought home in Delhi. I always get inspired through my Mother that a lady can do anything whatever she ~~wants~~ wants.

I passed my 12th class. I got scholarship in University because of my good percentage. I persued my Bachelors in Mass communicato and Journalism with 1st Division. An Now I am persuing my Masters Degree in Journalism and working as a Conselor in University by guiding students that what is best for them.
It is a great experience that what I recived from others now I am giving to others, for better futures of students I am know as an "INDUSTRIALIST CONSULTANT ACADEMIA in University.
And the best thing is I myself is paying my fees of Master Degree Program and side by side I am helping my brother to persue his Bachelor Degree with my Salary. I am finding that I am completing my Dreams One by One.
I can say that I had achieve these things after struggling so much. I did all these only for my Mom. Because she thinks that I am champion.

There are so many things which I always enjoy in my life. These things always makes me special in my life like painting, Drawing, art & Craft.
Drawing is my passion whenever I get a change to draw I pour my heart into my painting and draw.
I have been a gold medalist in drawing competition, there was a special thing happen me when I felt proud of myself. There was a drawing competition in school and we had to sell our painting in competition.
Of course I took part in that competition and the money which I received was sent to students in an orphange. I was so proud of myself that yes I did something which I always wanted to do.

I always believed that "opportunity comes you have to take it."
Because there were so many girl with who all passed 12th but I had already planned myself that if I gets a chance

I will definitely fly high. My skills and my passion only helped me to come up and proof the world that "you are better".
I had always been a playback singer in my school. My singing only helped me to come up to stay and let the world hear me.
I loved singing since my childhood day. Through my singing only a lot my stage I can remember that I was in class 4 when for the first time I when to stag for singing competition after seeing so many childred I put my step back but sister behind me go ahead a proof yourself. I closed my eyes and said to myself that yes I can do it I sang that song - I still remember that song "HUM BALAK HAI DESH K BADHTHI HI JAYEGE, HUM HAR KADAM PAR SHANTI KA GHAR BANAYEGE."
This song still inspires me from inside that you are the next soul to save your country we are the bright future to rule the whole nation.

So, many small things in life help me to learn in this life so, I never neglect these things, I always try to learn something from that and make myself better.

School days when I won the singing competition so many students heard my voice, they were so please that they started asking that who is Jaimala?? Bless with natural melodious voice. Even the kids who never saw me knew that yes there is someone named Jaimala sings.

During my Bachelor's Degree program my voice was so famous that it was used for Documentry film. I was felling so good + proud of myself that yes, atleas I am using my talents for these Documenta Even I took part in the fom Movie shooting which was held in our University. That movie shoot was related to my studies mass communication & Journalism The name of Movie was "The Dream" the true story that touches your hearly and sentionally that story touched my heart from inside. That was on girl child why people hate girl child and how

girls proof themselves that we are strong and we can do things better than men's do.
I learned so many things in that, how a movie is produced, directed and give it a finishing touch. I learned so many things out of it.

My part in that Movie was to Capture the very moments of the movie's secene in my Camera. So, I had, I used my talents and Capture everything whatever was moving around me. It helped me to do practically whatever I leared in my Bachelor Degree.

Whenever I visit my old school every child know me there even the new kids knew me through my name because sister always appreciated me for my work and my studies and my acheivements and they always tell them. Jaimala "KO DEKH KE SIKHO". I feel so proud and at the top of the world that today I had become and examples for so many children. I feel so motivated within myself. I felt myself useful to so many children. I always wanted to became a

mentor for everyone and so I am.

I worked with ASSOCHAM ladies league where I saw that world is so fast I worked as a Camera excecutive and capture photograph. There I got a chance to attend Ritu Beri's fashion show for children there I meet so many famous people. Without wasting time I captured everything in my camera. ASSOCHAM Ladies league is basically for encouraging women for everything. It helped ladies to come together and promote womens all around the world.

After seeing so many great personality I always felt that One Day I will be a Cover girl for everyone for a very good reason and I believe my self.

Moving with my step forward. I started Blogging on facebook about my long hair. Yes I have too long hair, below my knee's, I give tips to people that how you make your hair better and look pretty, because my mom says girls always look pretty with long hair, so seriously if I

open my hair, and people are moving around me they will look at me not only once but for 2-3 times and say it's so beautiful My friends always calls me princess Rapunzel.
They alway see me smiling everytime and every moment.
Many of my friend posted so many poem on my hair on facebook.
At my free time I love writing pottery and thing what will be the next step which will be benifical for me and how I help other & make myself best.
I want to be the best and want the whole world too listen to me.
My future Dream is to have doctor before my name where people will point and me and proudly say that "Yes she is doctor Jaimala".
I always want people to smile around me because of me!
One day will be there when I will be helping the students for studies and I will sponsor them like I got an opportunity. and I believe myself.

DIL KI BAAT

I would like to give a special thanks to IVF 4 team to helping us and guiding us to focus on our study.

"If you think that you are champion then you will be champion oneday".

The thing is you have to focus on your goals and realize what you can do and make things better.

Dreams's are always special and I found mine by fulfilling it with the help of IVF and my Mom.

Thank you IVF 4 love you...

जयमाला

मुझे आज भी वह दिन अच्छी तरह याद है, तब मैं केवल तीन साल की बच्ची थी और यह नहीं जानती थी कि मेरे आसपास क्या घट रहा है।

मैं अपने माता-पिता और भाई-बहनों के साथ रह रही थी। मेरी तीन बड़ी बहनें और दो छोटे भाई थे। उस समय मैं 'घर' शब्द के सही मायने तक नहीं जानती थी, क्योंकि हमारे पास अपना घर कभी नहीं रहा था। हम अपनी रातें सड़क के किनारे बिताते थे और हमारे पास भोजन या कोई दूसरी वस्तु नहीं थी।

कई बार हम सारा-सारा दिन सड़कों से चीथड़े बीनकर अपना पेट भरने का जुगाड़ करते थे।

फिर मेरे पिता रिक्शा चलाने लगे। वे एक दिन में लगभग पचास रूपए कमा लेते थे और हमारे परिवार में आठ सदस्य थे; अब मैं सोचती हूँ कि उस समय आठ सदस्य उन पचास रूपयों से कैसे गुजारा चला पाते होंगे?

फिर मेरी माँ घर का खर्च चलाने के लिए दूसरों के घरों में बाई का काम करने लगी। वह सुबह छह बजे निकल जाती और शाम छह बजे तक वापस आती। हम सभी भाई-बहन सारा दिन घर में अकेले रहते। मुझे याद है कि जब वह काम से लौटती, तो वह हमें कसकर गले से लगा लेती और उसकी आँखों से आँसू बह निकलते।

अचानक ही पिताजी को पुलिस पकड़कर ले गई, क्योंकि वे किसी के साथ झड़प करते पकड़े गए थे। उन्हें जेल ले जाया गया।

मेरे पिताजी जेल में थे और माँ को कुछ पता नहीं था कि वह हम सबकी देखरेख कैसे करेगी या हमारा पेट भरने के लिए क्या करेगी। जब भी माँ दूसरों के घर काम करने जाती, तो वह मुझे और मेरे भाई को किसी जगह बिठा देती, फिर वह दूसरों के बर्तन व कपड़े धोती और सफाई करती। उन दिनों को याद करती हूँ, तो ऐसा लगता है कि हम नरक जैसी ज़िंदगी जी रहे थे। माँ जिन घरों में काम करती थी, उन घरों से उनके बच्चों की कपड़े और खिलौने लेकर आती, पर मुझे कभी यह सोचकर अपराध-बोध नहीं हुआ कि वे दूसरों की उतरनें थीं। मैं देख सकती थी कि उस बचे हुए सामान को लाने के पीछे मेरी माँ की कड़ी मेहनत छिपी थी। मेरे लिए वे वस्तुएँ किसी अनोखे उपहार से कम न थीं।

अचानक ही मुझे होस्टल भेज दिया गया और मुझे इस बात का कोई अनुमान या अता-पता तक नहीं था कि होस्टल क्या होता है?

मैं अपनी माँ से अलग कभी नहीं रही थी। मेरे लिए अपनी माँ से दूर रहना बहुत ही पीड़ादायक था। मुझे यह कहकर होस्टल भेजा गया कि हम पिकनिक मनाने जा रहे हैं। जब मैं और मेरा छोटा भाई वहाँ गए, तो हमें दो-तीन बच्चे और दिखाई दिए।

मुझे पहला दिन याद है, दोपहर का खाना खाने के बाद हम अपनी माँ का इंतज़ार करने लगे कि वह हमें अभी आकर ले जाएगी, पर वह नहीं आई। हम गला फाड़कर रोने लगे कि हम अपने घर वापस जाना चाहते हैं। नन्स हमारे पास आईं और कहा कि माँ चाहती है कि हम पढ़ाई करके अच्छे बच्चे बनें और वह दो-तीन दिन में वापस आ जाएगी।

एक माह बाद माँ मुझसे और भाई से मिलने आई। हम जोर-जोर से रोने लगे कि हमें घर वापस ले जाया जाए। हम वहाँ अकेले नहीं रहना चाहते थे।

माँ ने मुझसे कहा कि मैं उसके लिए भगवान की ओर से एक विशेष

उपहार हूँ। यह सुनकर मैं अपने आँसू व दर्द भूल गई। मैंने अपनी माँ को हम सबके लिए कड़ी मेहनत करते देखा था। वह अकसर मुझसे कहती, "एक दिन तुझे बहुत बड़ा इनसान बनना है।" मैंने यू.के.जी. कक्षा से अपनी पढ़ाई आरंभ की। मैं हमेशा अपनी किताबों में रुचि लेती और उनमें खोई रहती।

मेरे आसपास इतने बच्चे थे कि कई बार ऐसा लगता था कि मैं अपने-आपको उनके बीच कहीं खो दूँगी। फिर मैं ऐसी बातें सोचने लगती कि मुझे मेरे माता-पिता के बिना जीवन जीने के लिए क्यों चुना गया, मुझे पढ़ने के लिए इतनी दूर क्यों भेजा गया। फिर मैंने होस्टल में सबरीना नाम की लड़की को अपनी दोस्त बनाया, वह बहुत ही होशियार थी। कई बार मुझे ऐसा लगता कि मुझे कुछ नहीं आता और मैं कुछ नहीं जानती, पर उसका व्यवहार मेरे साथ बहुत अच्छा था। वह अकसर पढ़ाई में भी मेरी सहायता किया करती।

कई बार तो माँ का चेहरा देखे सालों बीत जाते। मैं अकसर पेड़ के पीछे जाकर अपने-आप से बातें करती कि हम लोग इतने निर्धन क्यों हैं, मेरे परिवार में इतनी कठिनाइयाँ क्यों हैं? मैं अकसर रोते हुए भगवान से पूछती कि मैं ही क्यों??? भगवान ने मेरे साथ ही ऐसा क्यों किया?

फिर हमारी परीक्षाएँ हुईं और मैं यू.के.जी कक्षा में पच्चानवे प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण हुई।

सभी मेरी प्रशंसा करने लगे कि मैंने कुछ कर दिखाया है और जब भी कोई मुझे मेरे इस काम के लिए आशीर्वाद देता, तो मैं भगवान से प्रार्थना करती कि वह मेरी माँ को खुश रखे। इतने अच्छे अंक पाने के बाद मेरी गिनती बहुत होशियार बच्चों में की जाने लगी थी।

धीरे-धीरे मैं पाँचवीं कक्षा तक आ गई। कुछ लोग नियमित रूप से हमारे पास आया करते थे और मैं पहचानने लगी थी कि वे लोग अकसर हमारे पास आते थे। वे लोग कौन थे? जब मैं थोड़ी बड़ी हुई तो पता चला कि हमारे पास आने वाले लोग आई.वी.एफ. सलाहकार थे, जो हमें

हमारी पढ़ाई में मदद करने आते थे। वे लोग मेरे भाई-बहनों को पढ़ाने में भी मदद कर रहे थे।

समय बीतता गया और सिस्टर्स हमें सिखाने लगीं कि हमें अपनी देख-रेख कैसे करनी चाहिए या चपाती कैसे बनाते हैं। हम अपने कपड़े भी अपने-आप धोते थे। हाँ, जीवन बहुत अच्छी तरह बीत रहा था, पर मैं अकेलापन महसूस करती और अकसर सोचती कि मेरी माँ क्या कर रही होगी, उसने भोजन भी किया होगा या नहीं?

कई बार मैं स्कूल के गेट के पास चली जाती और उन बच्चों को देखती, जो अपने माता-पिता का हाथ थामकर अपने घर वापस जा रहे होते। उस समय मुझे अपनी माँ की सबसे ज़्यादा याद सताती थी।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, मुझे एहसास होने लगा कि आई.वी. एफ. सलाहकार हमारी मदद क्यों कर रहे हैं। वे हमारी सहायता इसलिए कर रहे थे, क्योंकि मैं एक ऐसे परिवार से थी, जिसमें मेरे पिता जेल में थे और माँ के पास मेरे और भाई की पढ़ाई के लिए कोई साधन नहीं था।

तब मेरे दिमाग में एक बात आई कि ये लोग हमारी पढ़ाई के लिए इतना प्रयास कर रहे हैं, तो क्यों न मैं भी अपनी ओर से थोड़ा और अधिक प्रयत्न करूँ, ताकि सभी मुझ पर गर्व कर सकें और मैं अपने माता-पिता की किसी रूप में सहायता करने योग्य बन सकूँ। तब तक मैं दसवीं कक्षा में आ गई थी और मैंने अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित कर दिया। तब मुझे अपनी माँ का चेहरा देखे लगभग दो साल होने वाले थे। मैंने सोचा कि मैं बोर्ड की परीक्षा में अच्छे अंक पाने के बाद ही माँ से मिलने घर जाऊँगी।

मैं अपनी माँ का सपना पूरा करने के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत से पढ़ने लगी और बोर्ड की परीक्षाएँ भी आ गईं। जब मेरा परिणाम घोषित हुए, तो मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। मैंने जीवन में पहली बार अपना लक्ष्य पाया था। मैंने बोर्ड की परीक्षा पचहत्तर प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की।

मेरी आँखों से अपने-आप ही खुशी के आँसू बह निकले। मैंने कर दिखाया था, मैंने अपना लक्ष्य पा लिया था। मैंने अपनी दोस्त से भी अधिक अंक पाए थे।

उस दिन मुझे एहसास हुआ कि मैं वाकई ख़ास थी, क्योंकि पहले लोग अकसर यही पूछा करते थे कि मैं पढ़ाई में कैसी हूँ? पर मेरी दसवीं के परिणाम के बाद वे पूछने लगे थे कि होस्टल में रहने वाली उस लड़की का क्या नाम है, जिसने इतने अच्छे अंकों से बोर्ड की परीक्षा पास की है? मैंने अपने-आप से वादा किया कि मैं अपने हालात को बेहतर बनाकर ही दम लूँगी और अपने माता-पिता के जीवन से सारे कष्ट व पीड़ाओं का अंत कर दूँगी।

जिन दिनों मैं अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर रही थी, मेरी माँ ने दिन-रात मेहनत की और अपने पैसों से दिल्ली में घर खरीद लिया। मुझे माँ से हमेशा यही प्रेरणा मिलती थी कि एक लड़की जो कुछ भी करना चाहती है, वह कर सकती है।

मैंने बारहवीं की परीक्षा पास की। यूनिवर्सिटी में मुझे अच्छे प्रतिशत के कारण छात्रवृत्ति मिली। मैंने प्रथम श्रेणी में जनसंचार तथा पत्रकारिता में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इन दिनों मैं पत्रकारिता में स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ एक सलाहकार की भूमिका भी निभा रही हूँ और छात्रों को यह परामर्श देती हूँ कि उनके लिए कौन-से विकल्प बेहतर हो सकते हैं।

यह एक बहुत ही अद्‌भुत अनुभव है। मैंने दूसरों से जो पाया, आज मैं उसे दूसरों में बाँट रही हूँ। मैं यूनिवर्सिटी में छात्रों के बेहतर भविष्य के लिए 'उद्योगपति सलाहकार अकादमी' के रूप में जानी जाती हूँ।

और सबसे बेहतर बात तो यह है कि मैं अपने मास्टर डिग्री प्रोग्राम के लिए स्वयं फीस भर रही हूँ और इसके साथ ही अपने वेतन से भाई की डिग्री के लिए भी प्रबंध कर रही हूँ। मैंने पाया है कि एक-एक कर मेरे सारे सपने पूरे होते जा रहे हैं।

मैं कह सकती हूँ कि मैंने कड़े संघर्ष के बाद अपने लिए यह सब पाया है। मैंने यह सब-कुछ अपनी माँ के लिए किया, क्योंकि उन्हें लगता है कि मैं एक चैंपियन हूँ।

मेरे जीवन में ऐसी बहुत-सी वस्तुएँ रहीं, जिनका मैंने हमेशा आनंद उठाया, जैसे पेंटिंग, ड्राइंग व हस्तकला आदि।

मुझे ड्राइंग करने का बेहद शौक है। जब भी मेरे सामने कोई शीट आती है, तो मैं उस पर अपनी भावनाएँ उड़ेल देती हूँ।

मुझे चित्रकला-प्रतियोगिता में स्वर्णपदक प्राप्त हुआ था। यह एक ऐसी विशेष घटना थी, जिसने मुझे अपने-आप पर गर्व करने का अवसर दिया। स्कूल में एक चित्रकला-प्रतियोगिता थी और हमें प्रतियोगिता में अपनी पेंटिंग बेचनी थी।

मैंने उस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और उससे प्राप्त धन को एक अनाथालय के बच्चों की सहायता के लिए भेज दिया। मुझे अपने-आप पर बेहद गर्व हुआ कि मैंने कुछ ऐसा कर दिखाया था, जो मैं हमेशा से ही करना चाहती थी।

मैं हमेशा से यही मानती आई हूँ कि अवसर हमारे सामने आते हैं, परंतु हमें उन्हें अपना बनाना होता है, क्योंकि वहाँ बहुत-सी लड़कियों ने बारहवीं पास की थी। परंतु मैं पहले ही यह तय कर चुकी थी कि यदि मुझे अवसर मिला, तो मैं निश्चित रूप से ऊँची उड़ान भरूँगी। मेरे हुनर और जुनून ने मुझे आगे आने में मदद की और मैं दुनिया को यह दिखाने में सफल रही, "मैं दूसरों से कहीं बेहतर हूँ।"

मैं अपने स्कूल में प्लेबैक सिंगर की भूमिका भी निभाती आई थी। मेरे संगीत ने मुझे दुनिया में आगे आने और अपना नाम चमकाने में मदद की।

मुझे बचपन से ही संगीत से बहुत लगाव था। संगीत के बल पर ही मैं मंच पर आने के भय पर काबू पा सकी। मुझे आज भी याद है, मैं चौथी कक्षा में थी। ज्यों ही मैं मंच पर गई, तो अपने सामने बहुत सारे

बच्चों को देख झिझक गई और घबराहट में गाने से मना कर दिया। तब मेरे पीछे खड़ी सिस्टर ने कहा, "आगे जाओ और साबित कर दो कि तुम क्या कर सकती हो।" मैंने अपनी आँखें बंद कीं और अपने-आप से कहा, "हाँ, मैं इसे कर सकती हूँ।" मुझे आज भी वह गाना याद है, "हम बालक हैं देश के, बढ़ते ही जाएँगे, हम हर कदम पर शांति का घर बनाएँगे।"

यह गाना आज भी मुझे प्रेरणा प्रदान करता है कि तुम ही वह आत्मा हो, जो देश की रक्षा करेगी। हमारा उज्ज्वल भविष्य ही सारे राष्ट्र का नेतृत्व करेगा।

जीवन की बहुत-सी छोटी-छोटी बातों ने मुझे जीवन में बहुत-कुछ सीखने का अवसर दिया है, इसलिए मैं कभी इन बातों की उपेक्षा नहीं करती। मैं हमेशा उनसे कुछ न कुछ सीखने और अपने-आपको बेहतर बनाने की चेष्टा करती रहती हूँ।

जब मैं स्कूली दिनों में गाती थी और मैंने गायन-प्रतियोगिता में जीत हासिल की, तो मेरी आवाज़ सुनने वाले छात्र बहुत प्रसन्न हुए और वे पूछने लगे थे कि जयमाला कौन है, जिसके पास इतना प्यारा व मीठा स्वर है। यहाँ तक कि जिन बच्चों ने मुझे देखा तक नहीं था, वे भी जानते थे कि कोई जयमाला नामक लड़की गाती है।

मेरे बैचलर डिग्री प्रोग्राम के दौरान मेरी आवाज़ इतनी लोकप्रिय थी कि मुझे डॉक्यूमेंटरी प्रोग्राम के लिए चुना गया। मुझे यह सोचकर बहुत गर्व का अनुभव हुआ कि मेरी प्रतिभा को डॉक्यूमेंटरी के लिए प्रयोग में लाया जा रहा है। यहाँ तक कि मैं एक फिल्म की शूटिंग का भी हिस्सा बनी, जो कि हमारी यूनिवर्सिटी में की जा रही थी। वह फिल्म मेरी जनसंचार व पत्रकारिता की पढ़ाई से संबंध रखती थी और उसका नाम था, 'द ड्रीम'। वह एक ऐसी सच्ची कहानी है जो दिलों को छू जाती है, उसने मुझे भी द्रवित कर दिया था। वह बच्चियों पर आधारित थी कि लोग बच्चियों से नफ़रत क्यों करते हैं और किस तरह वही बच्चियाँ बड़ी होकर यह साबित कर देती हैं कि वे कितनी सशक्त हैं और अपने

जीवन में लड़कों से भी आगे निकलकर दिखा देती हैं। मैंने इस दौरान बहुत-कुछ सीखा है। एक फिल्म कैसे बनती है, उसका निर्देशन कैसे होता है और अंत में उसे निखारा कैसे जाता है। इससे मुझे बहुत-कुछ सीखने का मौका मिला।

उस फ़िल्म में मेरा काम यह था कि मुझे मूवी के दृश्यों को अपने कैमरे में कैद करना था। मैंने अपनी प्रतिभा का प्रयोग करते हुए आसपास घट रहे हर दृश्य को कैमरे में उतार लिया। इस तरह मैंने अपनी डिग्री के दौरान जो भी सीखा था, उसे व्यावहारिक रूप से करने का अवसर मिला।

जब भी मैं अपने स्कूल जाती, तो वहाँ नए बच्चे ही दिखाई देते, परंतु वे सभी मुझे नाम से जानते थे, क्योंकि अध्यापिकाएँ अकसर उनके सामने मेरे काम, पढ़ाई व गतिविधियों की प्रशंसा करतीं और कहतीं, "जयमाला को देख कर सीखो।" मुझे यह देखकर बहुत ही गर्व और प्रसन्नता का अनुभव होता कि आज मैं कितने बच्चों के लिए एक मिसाल बन गई हूँ। मैं स्वयं को भी भीतर से और भी प्रेरित कर पाती। ऐसा लगता कि मैं कितने बच्चों के काम आ रही हूँ। मैं सदा से ही दूसरों के लिए एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाना चाहती थी और आज मैं यही कर रही हूँ।

मैंने एसोचैम लेडीज़ लीग (ASSOCHAM Ladies League) के साथ काम किया और पाया कि दुनिया कितनी तेज़ी से भाग रही है। मैंने एक कैमरा-एक्ज़ीक्यूटिव के रूप में काम किया और तसवीरें खींचीं। वहाँ मुझे रितु बेरी के फैशन-शो में हिस्सा लेने का अवसर मिला, जो बच्चों के लिए था। वहाँ अनेक जानी-मानी हस्तियों से भेंट हुई और मैंने समय गँवाए बिना सबकी तसवीरें ले लीं। एसोचैम लीग बुनियादी रूप से महिलाओं को हर काम के लिए प्रोत्साहित करती है। यह महिलाओं को आगे आने में मदद करती है तथा सारी दुनिया की महिलाओं को अपना समर्थन देती है।

इतनी सारी हस्तियों व महान लोगों को देखकर मैं हमेशा यही

सोचती थी कि एक दिन मैं किसी अच्छे काम के लिए, उन सबके लिए एक कवर गर्ल बनूँगी।

मैंने एक कदम और आगे बढ़ाया और फेसबुक ब्लॉग पर अपने लंबे बालों के बारे में लोगों को टिप्स देने लगी। जी हाँ, मेरे बाल घुटनों से भी नीचे तक जाते हैं। मैं लोगों को टिप्स देती थी कि वे अपने बालों को लंबा और सुंदर कैसे बना सकते हैं, क्योंकि मेरी माँ कहती थी कि लंबे बालों वाली लड़कियाँ हमेशा खूबसूरत दिखती हैं। सच कहूँ, तो अगर मैं कभी अपने बाल खोल लूँगी तो वे लोग मेरी ओर केवल एक बार नहीं, बल्कि दो-तीन बार देखेंगे और यह अवश्य कहेंगे कि मेरे बाल बहुत सुंदर हैं। मेरी सहेलियाँ मुझे अकसर प्रिंसेस रापुनज़ैल के नाम से पुकारती हैं।

वे हमेशा मुझे हर जगह और हर पल में मुसकराते हुए ही देखती हैं।

मेरी अनेक सहेलियों ने फेसबुक पर मेरे बालों के बारे में कविताएँ भी पोस्ट की हैं।

जब मेरे पास खाली समय हो, तो मुझे भी कविताएँ लिखना बहुत अच्छा लगता है और यह जानने की भी कोशिश करती हूँ कि मैं ऐसा क्या कर सकती हूँ, जिससे मुझे आगे बढ़ने में तो मदद मिले ही, साथ ही मैं दूसरों के भी कुछ काम आ सकूँ। मैं सबसे बेहतर बनना चाहती हूँ और चाहती हूँ कि जब मैं बोलूँ तो सारी दुनिया सुने।

मेरा भावी सपना यही है कि मेरे नाम के आगे डॉक्टर शब्द जुड़े और लोग मेरी ओर संकेत करते हुए कहें कि ये डॉक्टर जयमाला हैं।

मैंने हमेशा से यही चाहा है कि मेरे आसपास के लोगों के चेहरों पर मेरी वजह से एक मुसकान बनी रहे।

एक दिन ऐसा भी आएगा, जब मैं दूसरे छात्रों को उनकी पढ़ाई के लिए सहायता करूँगी और उन्हें उसी तरह प्रायोजित करूँगी, जिस तरह मुझे यह अवसर मिला और मैं अपने पर भरोसा कर सकी।

दिल की बात

मैं आई.वी.एफ. और उनकी टीम को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने हमें सहायता व मार्गदर्शन दिया, जिसके बल पर हम अपनी पढ़ाई पर केंद्रित हो सके।

अगर आप सोचते हैं कि आप चैंपियन हैं, तो आप एक दिन चैंपियन बन जाएँगे। बस, आपको अपने लक्ष्यों पर केंद्रित होना होगा और अपने काम को करने का आनंद उठाते हुए चीज़ों व हालात को बेहतर बनाना होगा।

सपने हमेशा से ही ख़ास होते हैं और मैंने अपने इन सपनों को आई.वी.एफ. और अपनी माँ की सहायता से साकार किया।

धन्यवाद आई.वी.एफ. और मैं आप सबसे बहुत प्यार करती हूँ.....

COUNSELLOR'S NOTE

Jaimala is a true optimist and has strong faith in God. She is very cheerful and faces all her challenges positively!

She is a student counsellor in a leading university. She manages the social media for her university and also runs a blog on hair care.

She never missed a single opportunity that came her way to explore and experience. Today she is supporting her brother's education. And also pursuing her masters degree. Jaimala is truly special.

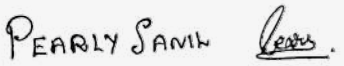

Vijay Kumar

18 years old

Trained Motor Mechanic

बचपन की जिंदगी

X—X———X———X—X

हैलो
दोस्तो,

मेरा नाम विजय कुमार यादव है और मेरे परिवार में एक मेरे पापा मेरी मम्मी और मेरी छोटी बहन नेहा है जो I.V.F. की तरफ से हॉस्टल में रहकर पढ़ रही है।

मेरे दिमाग में मेरे बचपन की सिर्फ कुछ यादें हैं, धुंधली सी! मेरा बचपन भी एक आम बचपन की तरह ही चल रहा था। स्कूल में दाखिले से पहले मैं सारा दिन बाहर खेलता रहता था और जब स्कूल में एडमिशन हुआ तो सुबह-सुबह मैं स्कूल न जाने के लिए रोता था, पर मम्मी हर मुमकिन कोशिश करती थी मुझे चुप कराकर स्कूल ले जाने की! मैं कचे खेलता, दुकान पर गेम खेलने जाता था। बचपन में मम्मी ने खाना न खाने के कारण मेरे सामने

एक शर्त रखी कि तुम जितनी रोटी खाओगे उतनी रोटी के पैसे तुम्हें मिलेंगे और नहीं खाओगे तो नहीं मिलेंगे। मैं कुछ रोटी खाता और बाकी कहीं मम्मी की नजरों से बचाकर रखने की कोशिश करता!

मुश्किल समय

×——×——×——×

सब कुछ सही चल रहा था, कि मेरी मम्मी को गाँव जाने की इच्छा होने लगी, जो मेरे पापा ने मेरी और मम्मी की (शायद) टिकटें करवाई थी। मुझे अच्छी तरह से याद है हम स्टेशन पहुँचे, हम शायद पापा का इन्तजार कर रहे थे कि वहाँ पास ही में एक लड़की रो रही थी, और शायद उसके साथ एक बच्चा भी था। मेरी माँ ने उसे रोता देख उससे कुछ पूछा और उसे शायद समझाने लगी। उसके बाद न जाने क्या हुआ दो पुलिस वाले मेरी मम्मी को ऑटो में बैठा कर ले जाने लगे मुझे पता नहीं, पर शायद उस लड़की ने मेरी माँ पर कुछ

गलत आरोप लगाए जिस कारण मम्मी को हमसे अलग रहना पड़ा। कुछ दिन तक मैं भी उनके साथ रहा और फिर पापा मुझे ले गये, मुझे कुछ उस समय पता तो नहीं था, पर हाँ अहसास था, कि मेरी माँ के साथ सही नहीं हुआ। बाहर आकर मुझे मम्मी की बहुत याद आती, क्योंकी मेरा माँ के साथ बहुत लगाव रहा। बाहर आकर सिर्फ माँ की याद आती थी, पापा भी परेशान थे मुझे लेकर। उस दौरान न जाने मैं कितनी रातो मे रोया। मेरे पापा ने उस दौरान मुझे बहुत अच्छे से सभांला। यह पापा के विश्वास का ही नतीजा था, के इतने बड़े हादसे के बाद भी आज सब कुछ सही है। पापा मुझे हर बार मम्मी से मिलाने ले जाते, मैं मम्मी से मिलकर सबकुछ भूल जाता।
पापा मुझे सभांलने कि कोशिश कर रहे थे फिर पापा ने मुझे मेरी चाची के पास भेजा, मगर मैं कुछ भी नहीं भूला था, हर कोई मुझे हँसाने की कोशिश करता, मगर मैं खामोश बैठा रहता, न पढ़ाई अच्छी लगा रही

थी न खेलकूद। उस समय मैं खूब समझने कि कोशिश कर रहा था कि यह सब मेरे साथ क्यों हो रहा है, क्या हो रहा है! मैं स्कूल भी जाता रहा उस दौरान। शायद मैं यह सब न लिख रहा होता अगर पापा ने, चाची ने और बहुत से लोगों ने संभाला न होता।

मैं नाराज था जिंदगी से, इसलिए न मैं किसी से कुछ ज्यादा बात करता, न किसी प्रतियोगिता में हिस्सा लेता।

मुझे उस छोटी सी उम्र में लगने लगा बस सब कुछ खत्म!

मेरे लिए खुशी एक बहुत बड़े संघर्ष या लड़ाई के बाद आयी थी, जब मेरी मम्मी वापस घर आयी थी, मैं चाची के घर से अपने घर आ चुका था, और अब मैं सब कुछ भूलना चाहता था। धीरे-धीरे मैं आगे की जिंदगी में बढ़ने लगा। मैं उस समय में दस साल का था।

आगे की जिंदगी

आगे बढ़ते हुए मैं पाँचवी कक्षा पास कर चुका था, अब मुझे यह स्कूल छोड़ कर दूसरे स्कूल जाना था। मेरा एडमिशन हो गया। सब कुछ नया था। स्कूल, क्लास, दोस्त और माहौल। मैं धीरे-धीरे इन सब में मिलने लगा। धीरे-धीरे फाइनल पेपर पास आये और बाद में रिजल्ट भी। मैं अब सब कुछ समझने लगा था मैंने जैसे ही रिजल्ट दिखाने के बारे में सोचा मैं डर सा गया। मैं मायूस भी था डरा हुआ भी बहुत समय बाद फिर से खामोश रहने का वक्त आ गया। मेरे लिए मैं पिछली लाइफ के बारे में सोचने लगा। सोचने के बाद मैंने मन ही मन पापा-मम्मी, भगवान और खुद से माफी माँगते हुए इस डर और खामोशी से निकलने की कोशिश करने लगा। मैंने दुबारा वही क्लास पढ़ी और पास हुआ। हुआ मैंने धीरे-धीरे सभी क्लासें पास की।

दसवीं में सही नंबर न आने के कारण मैं चिंतित था और परेशान

पहली बार लगा कहीं न कहीं तो गलती की है मैंने। मैं खुद को जिम्मेदार मानने लगा। इन सब के लिए। मैं सोचने लगा कि मैंने कहाँ गलती की। हाँ गलतियाँ की थी मैंने लापरवाही कर के। मैं आगे बढ़ने का रास्ता खोज रहा था, तब I.K.F. ने आकर मुझे वोकेशनल कोर्स के बारे बताया, लेकिन मैं तो अभी आगे पढ़ना चाहता था, बहुत मुश्किल रहा मेरे लिए वो समय क्योंकि मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था।

फिर एक आत्म-विश्लेषण पीछे से आगे तक। फिर अहसास हुआ जिम्मेदार होने का। लगा कि हाँ मैं बड़ा हो चुका हूँ।

मुझे वहाँ हॉस्टल में रहना पड़ा इस कोर्स के दौरान। वहाँ बहुत सी मुश्किलें आई जिनसे मैंने कुछ न कुछ सीखा। मेरे जीवन का रुख बदलने वाला रहा यह कोर्स!

एक सबसे बड़ा डर जो मैं आपको बताना भूल गया, मई-जून की छुट्टियाँ चल रही थी।

माँ को पहली बार दिल का दौरा

पड़ा. मैं और पापा ने मम्मी को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाया. पहली बार इतना डर लगा. मानो मौत से सामना हुआ हो खुद का. दिल और दिमाग में सिर्फ डर कहीं कुछ हो न जाए.
पहली बार महसूस हुआ माँ का साथ मानो कैसा लगा. मैं फिर से कुछ साल पहले पहुँच गया हूँ.
यह मेरी जिंदगी का सबसे बड़ा युद्ध था मैं सच कुछ हार गया था इस दौरान मगर मेरी माँ ठीक हो गयी.

I.V.F. और मैं

मैं I.V.F. के साथ सन् 2006 में जुड़ा I.V.F. ने मेरी हर समय हर हालात में मदद की है. I.V.F. के कारण ही मैं यह नेशनल कोर्स कर पाया.

Thank you
I.V.F.
AND
MY
RESPONSER

मैं वोकेशनल कोर्स करने के बाद अब
मैं नौकरी कर रहा हूँ।
मैं आगे पढ़ना चाहुँ और बढ़ना
चाहता हूँ। मैं अभी आगे को
POLYTECHNIC का कोर्स करना चाहूँगा
OPEN से।

आज मैं खुश हूँ कि मैं वर्किंग हूँ
अब मैं भी अपने परिवार की
कुछ मदद कर पाऊँगा।

हमे हर गलती से कुछ न कुछ
सिखना चाहिए क्यों की गलतियाँ
होती ही सिखने के लिए।

दोस्तो
मुश्किल हर लाइफ मे आती है
लेकिन वो हमारे ऊपर निर्भर है कि हम
उस मुश्किल का सामना कैसे करते है।

Thank you
FRIENDS

I.V.F. के लिए मेरी तरफ से दो पंक्तियाँ :-

आई. वी. एफ एक आस है
यह अपने हर बच्चे के लिए श्वास है
जब कोई बच्चा हताश है तो यह उसके
पास है
यह एक प्यारा अहसास है
यह अपने हर बच्चे की चलती साँस है

दिल की बात

दिल में बात है, जज्बात है,
बहुत कुछ खास है,
आस है, यह है तो हम
हर मुश्किल में पास है।

हमें कभी भी किसी भी जरूरत मंद
कि मदद जरूर करनी चाहिए
क्या पता हमारी छोटी सी मदद
उसके लाईफ में क्या परिवर्तन ले आये।

Vijay Kumar

Hello Friends,

My name is Vijay Kumar. My family consists of my mother, my father and my younger sister. My sister is studying in a hostel and is supported by India Vision Foundation.

I have very scant and faded memories of my early childhood. I know that it was a normal simple childhood. I used to play outside my house all day long.

When I got admitted in school I used to cry every day in the morning, I did not want to go to school early in the morning, my mother would try all possible ways to make me stop crying and go to school.

I would play with marbles and go to the shop to play video games.

I was a very fussy eater and my mother would put so many temptations in front of me to eat food. Once she told me that for each roti I eat she would give me equal amount of money, if I did not eat, then there would be no money. I would eat a little and then try to hide the roti when my mom was not looking.

Difficult Time.

Everything was going fine, when one day my mother expressed a desire to visit her home in the village. My father got our tickets done.

I remember very clearly that my mother and I were waiting at the station, perhaps for my father to arrive. There was a young girl crying, there was a child with her. My mother saw the girl crying and went to ask her what was wrong and started consoling her. Suddenly I don't know what happened, how two policemen arrived and began to forcibly take my mother away in an auto-riksha.

I am not sure but I think that girl must have accused my mother wrongly. Because of this incident we had to live apart from my mother.

I stayed with my mother in Prison for some time and then my father took me home. I was too young to understand what was going on but I felt that what was happening to my mother was not right.

I missed my mother a lot as I was very attached to her. I used to keep missing her all the time. My father was very worried about me. I don't know how many nights I cried during that time. My father looked after me very well. It was due to my father's belief and strength that despite that setback in our lives, all is well today.

My father used to take me to visit my mother often. Each time I met my mother I would forget all my unhappiness.

It was becoming difficult for my father to take care of me, he was trying very hard. He then sent me to live with my aunt. My father's brother's wife. But I did not forget anything, I was so sad. Everybody tried to make me laugh but I would sit quietly. I did not enjoy my studies and I did not enjoy playing. I did not understand what was happening to me and I was trying very hard to find answers. Today I would not be able to write my story if my father, my aunt a lot of other people had not supported me.

I was angry with my life. I kept to myself. I would not speak to anyone or take part in any school activities. Even at that young age I felt as though my life was over.

Happiness came to me after a long period of struggle and pain when my mother returned home.

I was back home from my aunt's house and I now I wanted to forget everything and move forward. I was 10 years old.

Next Phase of my life.

I cleared grade 5 and then I had to change my school. Everything was new. My class, my friends, the atmosphere. Slowly I started mixing with everyone. I started studying and preparing for my final exams. The time came for the result.

I was grown up I could understand everything. As soon as I thought of seeing my result, I got scared. I was very subdued. I had not passed.

After a long time I was back to being my old silent self. I began thinking about my old life.

After thinking for a long time I decided in my heart to ask for forgiveness from my parents, God and myself and tried to get out of my state of fear and silence.

I repeated my class and then I passed. Then gradually I cleared all the grades.

But I was worried because I did not get good grades in my 10^{th} standard.

For the first time I thought that at some point I had committed a mistake. I began to take responsibility for my state. I began thinking about how I had committed a mistake... I realized I had been careless.

Now I was looking for a way forward in my studies. That's

when IVF came to me and suggested the vocational course. But I wanted to study further. That was a very difficult time for me as I could not understand what to do.

Then I had a realization. Of my responsibility. I had grown up.

I had to live in the hostel for this course (motor mechanic) and I faced a lot of difficulties.

But I learnt from every difficulty I faced.

This vocational course was changing the direction of my life.

I forgot to tell you of another big fear I faced. The summer holidays of May and June were going on. My mother suffered a heart attack for the first time. My father rushed her to the hospital. I was so scared, I had faced death for the first time and my heart and mind kept getting worried fearing the worst.

For the first time I realized my mother's presence and for a moment I was transported back so many years when we were separated and she was in prison.

This was by far the biggest fear in my life. I felt very helpless during this time as though I had lost everything.

My mother recovered and is well.

IVF and Me.

I have been connected with IVF since 2006 and IVF has helped me at every stage of my life. It is only through IVF that I have been able to do this course.

Thank You IVF.

After completing my vocational course I am now working and I would like to study further. I want to do a course from a polytechnic.

Today I am happy that I am employed and I can help my family.

We must always learn from every mistake because they are meant for us to learn.

Friends, difficulties come upon us , it is up to us how we face those difficulties.

Thank you, friends.

Straight from my heart

My heart has thoughts and emotions, and a lot of special things, it has hope that helps us pass all difficulties.

We must always help people who need our help. Who knows how our little help can bring big changes in their life.

COUNSELLOR'S NOTE

The transformation of Vijay's reticent personality to cheerful one was a challenging task. Vijay surprised us all. He taught us a lesson that every human being has a different chemistry and that we must not prejudge.

He is currently working for a leading automobile service center. He fulfilled the dream of his parents and is also an inspiration and role model for other project beneficiaries.

Neeta

(Name changed)

18 years old

Nurse in a private hospital

Hello friends

मेरा नाम मिला है। मैंने अभी अपनी Nursing की पढ़ाई finish की है OR मैं अभी STAFF NURSE बनकर, दिल्ली के एक अच्छे PRIVATE HOSPITAL में काम कर रही हूँ.

मेरी LIFE की कहानी तब से शुरू हुई। जब मैं 7 Sal की थी। तब मैंने अपनी life में पहली बार INDIA VISION FOUNDATION का नाम सुना था।

मेरी family में. मैं, मेरी sister, मेरी मम्मी और पापा थे। बहुत ही खुशी परिवार था हमारा। सब कुछ था हमारे पास। बहुत ही खुश थे हम।

But शायद ऊपर वाले को कुछ और ही मंजूर था। एकदम से सबकुछ बदल गया हमारे परिवार में।
मेरे पापा बीमार रहने लगे OR SUDDENLY एक दिन उनकी death हो गई। उस time मैं और मेरी बहन बहुत छोटे थे मैं 6 साल की और मेरी बहन 3 साल की। हमे नहीं पता था की आखिर क्या हो रहा है मेरे घर में। BUT मुझे थोड़ा - थोड़ा समझ आ रहा था की अब मेरे पापा इस दुनिया में नही रहे।

मेरी मम्मी का रो-रो के बुरा हाल था, वो continuous रोए जा रही है। हम दोनों बहनों को उसके पास नहीं आने दे रहे थे। हम दोनों अपनी मामा नानी के पास थे. एक पल में हमारी हस्ती खेलती फैमली बिखर गई।

धीरे-धीरे Time बितने लगा. और हम तीनों साथ रहने लगे। मम्मी हमारा और ख्याल रखने लगी। वो हमें और ज्यादा प्यार करने लगी। वो पुरी कोशिश करती की हमें पापा की कमी न महसुस हो। सबकुछ ठीक-ठाक चल रहा था कि अचानक हमारी Life में दूसरा तुफान कहर से आ गया।

पापा को गए अभी सिर्फ तीन-चार महीने भी नहीं हुए थे की. एक दिन मेरे घर में पुलिस आई और मेरी मम्मी को पकड़ कर ले जाने लगी। हमें नहीं पता था कि ये क्या हो रहा है, वो लोग मेरी मम्मी को क्यों पकड़ रहे हैं। क्या किया है। उन्होंने। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा है मेरी family में। पहले पापा हमें छोड़कर चले गए। फिर अब मम्मी भी जा रही है, हम दोनों बहुत बहुत रोने लगे. मम्मी भी हमें पकड़कर रो रही थी वो उनसे Request कर रही थी की हमें भी साथ ले चलने दें। पर वो लोग

बिल्कुल भी नहीं मान रहे थे। हम लोग continuous एक-दूसरे को force कर रहे थे। finally उन लोगों ने permission दे दिया but only मेरी छोटी बहन को because वो 3 साल की थी। पर मुझे नहीं दिया। ये सुनकर तो मैं पागल हो गई, मैं जोर-जोर से रोने लगी। क्योंकि मैं अकेले नहीं रहना चाहती थी। मुझे डर लग रहा था। लेकिन मैं अनाथ हो गई।। बिल्कुल अकेली। मैं मम्मी को पकड़कर बहुत रोने लगी। और वो लोग मम्मी को ले कर चले गए। मम्मी ने मुझे मेरे मुँहबोले नाना नानी के पास छोड़ दिया। वो लोग बहुत बुरे थे। वो मुझसे बहुत काम करवाते थे। इसलिए वो लोग मुझे पसंद नहीं थे। मैं पूरा time अपनी दीदी जो actual मे मेरी मम्मी की दीदी थी। और हमारे घर के पास रहती थी, मैं सारा time उनके पास रहती थी। वो मुझे बहुत प्यार करती थी। और मेरा बहुत ख्याल रखती थी। पर मुझे मम्मी की बहुत याद आती थी।

एक दिन मेरे नाना-नानी ने मुझे बताया की वो मेरी मम्मी को लेने जा रहे। मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि सच मे मेरी मम्मी वापस आ रही है। पूरे 1½ year के बाद मेरी

पर जिसने शादी की वो Muslim tha. हमने बिल्कुल भी
नहीं पसंद थे उसे new papa. वो हमें खूब
Treat, पूरी कोशिश करते की हम उन से मिलजुल
जाए, but पता नहीं क्यों मैं और मेरे बहन ने
उन्हें Accept ही नहीं किया as a father.

और इधर CSC से मम्मी को IVF
के बारे में पता चला तो उन्होंने सोचा अगर मेरा
future बनाना है तो उन्हें कुछ decision लेना पड़ेगा
उन्होंने Saligram sir se bat की और और
उनकी help से IVF के through मेरा admission
hostel में करवा दिया।

मैं बहुत खुश थी कि मेरा Admission हॉस्टल में हो
रहा है। क्योंकि मैंने सिर्फ हॉस्टल के बारे सुना था
कभी सोचा नहीं था कि मैं भी हॉस्टल जाऊंगी। पर
जिस दिन मैं हॉस्टल गई। मैं बहुत ज्यादा रोने लग गई
because वो शहर से बहुत दूर एक गांव के पास था।
मम्मी भी मुझे छोड़कर चली गई। पर मेरे
future Ko dead हुए तो मुझे वहां सब बच्चों के साथ
छोड़कर चली गई। मैं उनके जाने के बाद बहुत
रोई, मेरा बिल्कुल भी मन नहीं लग रहा था।
मैं पूरा दिन window में बैठकर रोती रही थी।
सब बच्चे खेलते पर मेरा मन बिल्कुल भी नहीं

लग रहा था। ऐसे करते-करते एक हफ्ता बीत गया और Sunday आ गया। Sunday visiting day होता था वहां पे। मैं अपनी मम्मी के आने का इन्तजार करने लगी। और prayer Karne Lagi ki plz God आज मेरी मम्मी को मिलवा देना। ऐसे ही मैंने window ke bahar dekha meri Mummi सामने से आ रही थी। मैं उन्हे देखकर बहुत खुश हुई। और भाग कर जाकर उनके गले लग गई। और बहुत रोने लगी। आज मैं बहुत खुश थी मेरी मम्मी मेरे पास थी। पर धीरे-धीरे time बीतता गया और मेरा मन हॉस्टल में लगने लगा। मेरे बहुत से नए friends बने।

मैं दिल लगा कर पढ़ती और अपनी class में top karti. ऐसा करते-करते कब time बीत गया और मैंने अपनी 10th complete कर ली वो भी अच्छे नम्बरों से।

मुझे science में बहुत Interest था मैं हमेशा से Medical line में जाना चाहती थी। इसलिए मैंने 11th 12th में science ली और अच्छे नम्बरों से पास हो गई।

Schooling finish होने के बाद मैंने Rithala से BSc. Nursing का form भरा, because मुझे शुरू से medical line में जाना था, लोगों की सेवा करना। पर कुछ financial problem की वजह से मुझे admission नहीं मिला। मैं बहुत दुखी हुई। मुझे बहुत बुरा लग रहा कि मेरा admission नहीं हो पाया। पर कहते हैं न when one door is closed for our destination, Many doors are opened for us to reached our aim. और वही हुआ मेरे साथ।

12th के बाद मैंने नारी Jouti को ·को IVF की help le hue. पर मैं अपने Nursing को लेकर थोड़ा upset थी कि मेरा सपना पूरा नहीं हो पाया। तब IVF ने मेरी help की और उन्होंने मुझे एक और हॉस्पिटल के बारे में बताया। मैंने उसका भी form भरे, Interview दिया। written exam clear किया सब कुछ हो गया। पर फिर से same problem मेरे सामने आ गई finance problem. ये हॉस्पिटल एक बहुत अच्छा हॉस्पिटल था। और पैसों की problem की वजह से ये फिर से एक good opportunity खो रही थी। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था क्या करूं. फिर pearly didi जो IVF की एक member hai उन्होंने मुझे हिम्मत दिलाई और उन्होंने आशिका की

और मैम (Kiran bedi Ma'am) ko Mere dream के बारे
में बताया। उन्होंने उन लोगों की help की वजह से
finally मेरा admission ho gya.

Starting में तो मुझे बहुत problem
हुई। क्योंकि theory se jayda practical
bhut मुश्किल था। but मैंने कोशिश की और
मेहनत करके अपने सारे exam clear किए।

Real phase of my life तब आया जब
मैंने practically patient के बीच में काम करना
शुरू किया Because bookish language and
bookish knowledge se reality bilkul different
tha. but उनकी care karo, उन्हें Support karna
bhut अच्छा था।

इसी बीच मेरे घर में एक और problem हो
गई मेरे पापा-मम्मी का रोज झगड़ा होने लगा
रोज लड़ते और मार-पीट करते थे, मेरे इस पापा से
तीन brother थे। बात-बात पर वो मम्मी को
धमकी देते थे कि मेरी तीनों भाइयों को बाहर
अलग-से जाऊँगी, रोज का रोज घर में tension
बढ़ने लगा। मम्मी ने इसने लोगों की करते थे साथ
से मेरे भाइयों को न लाए जाए Becaus वो
खुद तो पढ़-लिखे नहीं थे। फिर मेरे भाइयों

का भी future खराब हो जाता उनके साथ। मेरी मम्मी को बहुत tension होने लगी। और उन्होंने मुझे बताया। मैंने उन्हें समझाया मम्मी तुम अकेले नहीं हो। वो आपके भी बच्चे हैं लेकिन हक उनका था। उसने कोई ध्यान आपका नहीं।

finially हमने legal action uthaya or अपने तीनों भाइयों को अपने पास रखा। आज हम six sister and broth हैं। सब साथ हैं। और बहुत खुश हैं।

IVF की help se आज हम सब के सब पढ़ रहे हैं। और एक अच्छी life जी रहे हैं। मेरी मम्मी ने बहुत help की हमारी। उसने पूरी life हम भाई-बहनों को पढ़ाने और एक अच्छी life dene ke lia bhut मेहनत की। मेरी मम्मी की कोशिशों से और IVF के support se मैं भी पढ़ी हूं। और अपने पांव पे खड़ी हूं। आज मैं इस मुकाम पर सिर्फ IVF की वजह से हूं।

So THANK you KiRAN Bedi Ma'am Monika di, pearly di and all IVF Member who have been supporting Me Morally & Financially throughout my Journey.

'Dil ki baat'

"सपने देखना जरूरी है ख्वाबों को जहां चाहता है, वहां रहता है"

"Thank you everyone"

Neeta*

Hello Friends, I am Neeta.

I have just finished my nursing studies and I am now a staff nurse at one of Delhi's leading private hospitals.

My life story begins when I was 7 years old, when I heard the name of India Vision Foundation for the first time.

I lived happily with my parents and my younger sister. We had everything and I was very happy.

But perhaps God had other plans for us. Suddenly everything changed for my family.

My father took ill and one day he suddenly passed away. My sister and I were very young. I was 6 years old and my sister just 3 years old. We did not know what was going on in the house. My mother was crying all the time and was in a very bad state. People would not let us sisters' come near her. We were sent to our maternal grand parents home. I was young and confused, but somewhere in my heart I knew that my father is no more.

In just a blink of an eye our happy lives got destroyed.

Slowly time passed and the three of us started living together. My mother started taking greater care of us. She started loving us more. She was trying very hard to ensure that we don't feel the loss of our father in our lives. We had settled

* Name changed

down to this life when suddenly we were hit by another storm.

It was barely 3 or 4 months since my father's passing. One day the police stormed into our house and was starting to take my mother away.

My sister and I did not know what the commotion was all about. Why are they taking my mother away? What has she done? The little me could not fathom what was happening to my family. First our father left us and now our mother.

My sister and I were crying loudly and so was my mother. We hugged each other tight.

She kept requesting the police to allow her to take us along. But they were adamant. They refused. The three of us were clinging to each other and crying.

The police finally relented. But they only allowed my sister , to go with my mother as she was 3 years old. They did not allow me. As soon as I heard this, I went hysterical. I did not want to live alone. I felt like I am becoming an orphan. I clung to my mother and cried and cried. But they took my mother away.

I was all-alone. My mother left me with my maternal grand parents and left. These people were not my real grand parents. They had just assumed the responsibility. They were not nice people.

They would make me do a lot of work in the house and I did not like them. A friend of my mother's used to live close by. She loved me a lot and cared for me. I used to spend a lot of time with her. But I missed my mother terribly.

One and a half years later , one day my grand parents told me that they are going to pick up my mother. I could not believe it. My mother is actually coming back. After a year and a half. I began waiting for her.

My heart leapt with joy when I saw her coming. I ran to her and hugged her tight and cried a lot. My mother also hugged me tight and cried a lot.

There was a small child with my mother. A young boy not even a year old. That boy was my baby brother. When my mother went to jail she was pregnant. My brother was born in jail. I was so happy.

Now I did not want them to go anywhere away from me. Again we were together and we began living together.

My mother began teaching at a school run by the Navjyoti foundation. I used to accompany my mother to the school and I used to love going there. There my mother met a counselor of India Vision Foundation. He advised her that she must educate me well if she wants to secure my future. He suggested that I go to a hostel.

During this time, my foster maternal grand parents began forcing my mother to get remarried. They said how would you bring up three children on your own? My mother succumbed and got remarried.

The person she got married to was a Muslim. He did not belong to our community. We did not like our new father. He tried very hard to please us but I don't know why, my sister and I could never accept him as our father.

Since my mother had met with the IVF counselor she could not stop thinking about what he said. She made up her mind and conveyed her wish to get me admitted to a hostel to IVF.

I was very happy with this development. I had heard so much about hostel and hostel life. I had never ever thought that I would go to a hostel one day.

The hostel was away from the city, near a village. I got scared

when I arrived there. My mother was also worried as the hostel was so far away. But she steeled herself and thought about my future. She left me there with the other children.

I was so sad after she left. I kept crying and sitting near the window looking out for her. The other children would call me to play but I was not in the mood.

The week went by and Sunday came. Sunday was visitors day when the parents came to visit the children. I began waiting for my mother and praying hard that she comes. I asked God to send my mother to visit me. As soon as I looked out of my window I saw my mother walking towards me. I was so thrilled at seeing her and I ran to meet her. I hugged her tight and cried a lot. But I was very happy. My mother was with me.

Time passed and I began to settle down in the hostel. I made a lot of new friends. I focused and concentrated on my studies and used to top in my class. Soon I cleared my grade 10 exams with high marks.

I was always interested in science so I took science in grade 11 and 12 and passed with good marks.

After school finished I filled a form for a degree in nursing. I was always interested in the medical line and I wanted to take care and serve people. But due to financial constraints I did not get admission. I was so disappointed and feeling very sad that I did not get admission.

Like the saying goes, 'when one door is shut, many others open'. That is exactly what happened with me.

I joined NIIT to get training in computers, but I was still upset that I was not able to fulfill my dream of becoming a nurse. That's the time when IVF helped me and told me about another hospital. I applied to that hospital. Filled my form, gave

the interview, cleared the written exam. I cleared all formalities and I got selected.

This hospital was a very prestigious hospital and again due to financial constraints another good opportunity was slipping by.

I was distraught! I did not know what to do. Then again IVF came to my rescue. Pearly Didi at IVF shared my dream of becoming a nurse with Kiran Ma'am. With help of IVF I finally got admission in Nursing College.

Studying to be a nurse was very challenging. Studying theory was difficult but learning the practical was even more difficult. I worked hard exerted myself and managed to clear all the exams.

My real test came when I actually began working with patients. The reality was completely different from bookish knowledge. I liked caring for and supporting patients.

During this time another problem arose in my home. My mother and step-father's relationship began deteriorating. There was constant fighting and bickering at home. In this marriage my mother had given birth to 3 boys. My half brothers. My step-father kept threatening to leave my mother and take my brothers away. Day-by-day the tension began increasing in my house. My mother got very scared that she will loose her children. She was in a dilemma. She was not educated herself, If she kept her sons will she be spoiling their future?

She confided in me. I counseled my mother. I told her that the boys were as much her children as they were my step father's. In fact she had a larger right over them. We finally took legal action against my step father and got custody of the three boys.

Today we are 6 siblings and we all are very close to one another.

With IVF's help today all of my siblings are studying and leading a good life. My mother has worked very hard to give all of us a good education and a good life.

It is with my mother's effort and IVF's support that has made me independent today.

I could reach this stage of my life only with IVF's support.

Thank you Kiran Bedi Ma'am, Monica Ma'am, Pearly Di and all IVF members who have been supporting me, morally and financially throughout my journey.

Straight From My Heart

It is important to Dream....Because where there is a desire there is a way.

Thank you everyone.

COUNSELLOR'S NOTE

Nita did not know what her future held for her. But her determination and courage to face all her problems and not let go of her dream has led to her changing her life. She is now a trained nurse at a leading hospital in Delhi and giving back to society. The confidence of being financially independent is now visible on her face. She has changed the destiny of her family.

Afterword

While writing the book on mother and child in Indian prisons, called 'Shadows in Cages', I realised the power of selfless love. On one hand you had women who were accused of crime and I met so many children living with their mothers in prison. All laws applicable to the mother were automatically applicable to the child. It was a tough life for the kids. Imprisoned, often under nourished, in many prisons, there were no creches thus the child was a prisoner. But every child was filled with love. They would hold me, play with me, and in a short time, put their faith in a stranger like me. Thus no matter what, the child like innocence prevailed. I guess what God gives, no prison wall can take. The essence of a child, is the presence of Angels.

My greatest worry was after the child reached six years what would happen to the child, as the law was clear, after six the child could not remain with the mother in prison. The work done by Dr. Bedi and India Vision Foundation in rehabilitating children affected by crime is according to me the most noble venture undertaken by Dr. Bedi and her team.

I have seen and documented this process in a documentary 'I believe I can fly' and the lives of these children are secured. The world is a ruthless place and a lodging, boarding, educational

rehabilitation programme has saved scores of innocent lives, put balm on the hearts of mothers in prison.

The children are brave and wanting to create a better world for themselves and their families.

A child saved is the most noble of all things and the best manner in which we human beings can thank our Lord and Master.

This book needed to be published a long time back.

Be blessed and spread the Light friend.

Ruzbeh N. Bharucha

PART II

About

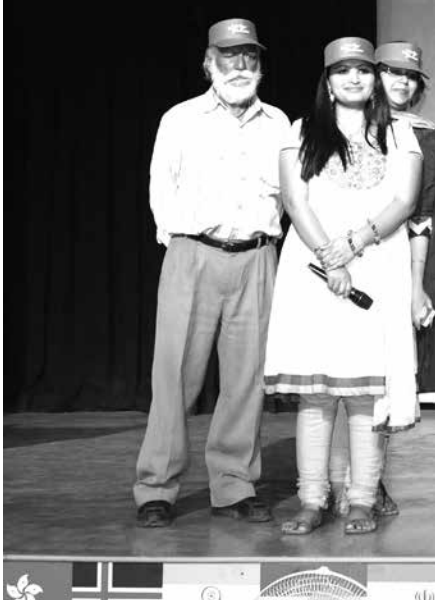

Core Team

India Vision Foundation

India Vision Foundation was born in 1994 out of the Ramon Magsaysay Award (also known as the Asian Nobel Prize) conferred to Dr. Kiran Bedi, the first female IPS officer of India, for forging 'positive relationships' between people and the police through creative leadership.

With a mantra to *'Save the next victim'* India Vision Foundation seeks to carry forward its service in all the areas that formed the basis of the award; namely Police & Prison Reforms and Women Empowerment. The Foundation's goal is *to build a stronger India*, as the Foundation envisions *a community rich in education and moral values, free from crime and gender discrimination.*

Children of Vulnerable Families Project

As per the law, children after age of 6 weren't allowed to stay in the prison. Children had no safe place to go. Mothers were afraid of leaving the children without any supervision, the fear being that the children may fall into a life of crime. Hence the *Children of Vulnerable Families Project (CVF)* came into existence in 1995 with the aim to facilitate the social, physical and psychological rehabilitation of children of parents with a history of incarceration by providing them safety and education at residential schools with regular counseling and guidance

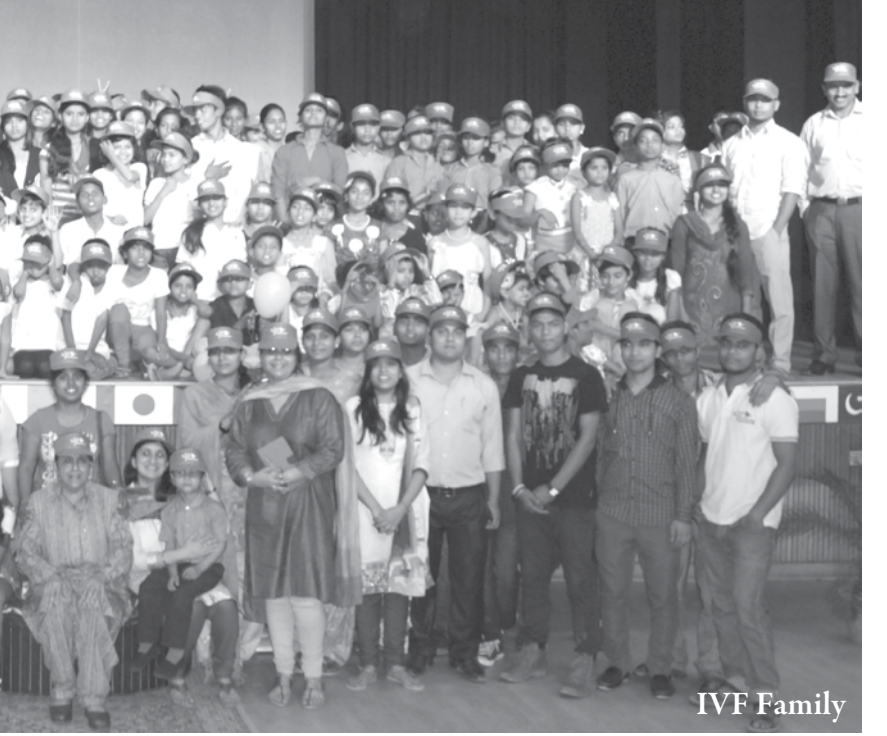

IVF Family

Children of Vulnerable Families (CVF) is one of the foundation's initiatives to uplift the children from challenged circumstances through formal schooling program.

The project made admission of the children at its various partner residential schools due to the incarceration of their parents and vulnerable family situations. The project continue to the support these children even after the release of their parents as most of them are not in a capacity to take care of their children's education due to various reasons.

The project had reached approx 280 children their families so far.

Today, the project is reaching out to 280 children and their families.

FOUNDERS

Kiran Bedi

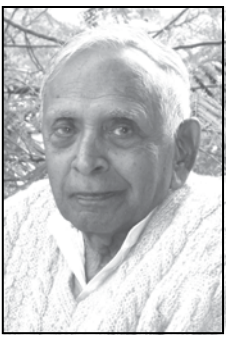

Prakash Lal
Peshawaria

Saina Ruzbeh Bharucha

ADVISORS

Anu Peshwaria
Legal Affairs

Jay Dhawan
Advocacy
(United Kingdom)

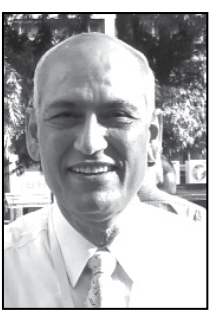

Keerti Menon
Clinical Psychologist
(United Kingdom)

Raminder Singh
Information Technology
(United States)

Sabina R. Korfmann
Corporate Communication
(Switzerland)

Suman Soneja
Social Worker

TRUSTEES

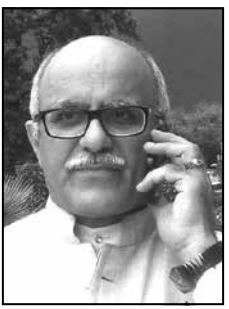

Achal Paul
Communicator

Ajay Goyal
Photography

Amrita Bahl
Educator

Lavlin Thadani
Media

Pam Kwatra
Marketing (USA)

Pradeep Halwasiya
Corporate

Prahlad Kakkar
Creatives

Ravi Pandit
Enterpreneur (UAE)

Sunil Nanda
Banker

Our Partners

Trust / Foundations / Insitutions

1 Air Cargo Club of Delhi
2 All India Sikh Fedration
3 Ambuja Foundation
4 American School
5 American Women Association
6 Amrita Vidyalayam
7 Arham Education Society
8 Aryans Group Of Colleges Chandigarh
9 Assisi Convent School, Noida
10 Avantha Foundation
11 Basudev Ganga Devi Agarwal Seva Trust
12 British School
13 C R public School, Bawana
14 Centre for Early Childhood Education and Development
15 Children's Village , Sanjoepuram
16 Community Foundation for Children and Aging
17 Concern India Foundation
18 CUCU Foundation
19 Family Vision
20 Fr.Agnel School, Greater Noida
21 Global Discovery Academy
22 Goonj NGO
23 Govt.Boys / Girls Senior Secondary School, Bawana
24 Grace Mission School, Haryana
25 Holy Family School of Nursing
26 Hope Foundation
27 Indian American Education Foundation
28 Ingraham Institute , Ghaziabad
29 Ingraham Institute , Ghaziabad
30 ITS Paramedical College, Muradnagar
31 Joyalukkas Foundation
32 Katha NGO
33 KK Charitable Trust
34 Lioness Club Gurgaon
35 Maria Montessori
36 Mercy Memorial School
37 Mobile Creches
38 Modern School, Vasant Vihar
39 Mount Carmel School Dwarka
40 Niranjan Dalmia High School Mumbai
41 Pearl Academy of Fashion
42 Rai Foundation /NIILM University, Kaithal
43 Rao Hospital
44 Samarpan Charitable Trust
45 Santosh Chander Charitable Trust
46 Shri Krishna Institute of Management Solutions Pvt Ltd
47 Shroff Family Charitable Trust
48 Singapore International School, Mumbai
49 Springdales School, Dhaula Kaun

50 St. John's School, Khera Khurd
51 St.Francis I.T.I, Ghaziabad
52 STMicroelectronics Foundation
53 The Cathedral School
54 Uniworld Edutech Foundation
55 Vedanta Foundation

Organisations

1 Aggarwal Packers And Movers Ltd.
2 AMR Infrastructures
3 Attitudes Connection
4 BIC Auto Ltd
5 BRYS GROUP
6 Canon India Pvt.Ltd
7 CCS Global Tech
8 Cox & Kings (India) Ltd.
9 Ernst&Young
10 EXL Services.com
11 G4S INDIA
12 Goldman Sachs
13 Goodwillnations
14 Helm 360
15 Hindustan Unilever Ltd
16 Imperial Auto Industries
17 Infosys Technologies Limited
18 Jk Risk Managers And Insurance Brokers Ltd
19 KC Sondhi & Co Pvt Ltd
20 Loomba Foundation
Luxor Writing Instruments Pvt Ltd
21 Microsoft Corporation
22 Munjal Showa Ltd
23 Ozone Pharmaceuticals
24 Pagariya Bajaj, Pagariya Auto
25 Paulco Motors
26 Prateek Group
27 Prati Kreations
28 Qualitech India Consultants (P) Limited
29 Raj Agencies
30 Rohan Global Inc
31 Sap Labs Ltd
32 Schon Films
33 Sindhi Jewelers
34 Stellar company
35 System Control & Switchgears
36 Taj Hotels
37 Universal Petro Chemiclas Ltd
38 VRC Logistics Pvt. Ltd.
39 Whenat60 Solutions Pvt. Ltd
40 Yakult Danone India Pn\Vt. Ltd.

Embassies

1 American Embassy.
2 Australian Embassy
3 Canadian Embassy

Government Partners

1 Central Social Welfare Board
2 Delhi Prisons
3 Delhi State Social Welfare Board
4 Gurgaon Prisons

Individual Donors

1 Arvind Deshraj
2 Ajay Kapoor
3 Anita Gupta

4 Ansh Sachdev
5 Avantika Susan Nigam
6 Bharat Gupta
7 Bina Jalani
8 Charu Verma
9 Chavvi Sachdev
10 Dr Jatinder Nagpal
11 Gulshan Sikri
12 John Holden
13 Jyoti Singh
14 KK Ramachandran
15 Kuku Bagga
16 Lalit Jain
17 Manjula Jhunjhunwala
18 Neelam Mehta
19 Neeru Lal
20 Pankaj Kapur
21 Paramjit Singh Khosla
22 Patrica Dhar
23 Pushpa Arora
24 Rajender Kumar
25 Rekha Babbar
26 Rita Duggal
27 Ruth Rachel Nigam
28 Sanjay Verma
29 Sarla Patpatiya
30 Seema Mahajan
31 Shubham Gupta
32 Shyama Chakarborty
33 Sudhir Srivastva
34 Vinay
35 Vivek Moreshwar Deshpande

Global donors

Pam Kwatra Patron IVF G30 USA

Mukund Jobanputra Patron UK

Subba Rao Patron Sydney

1 Alkesh Thakkar
2 A. Goyle
3 Sharda Poddar
4 Abhaya Chauhan
5 Achint Butalia
6 Alok Gupta
7 Anita Sharma
8 Anupam & Vaishali Gupta
9 Anuradha Sharma
10 Arav & Ashima Aggrwal
11 Arun Chauhan
12 Arvind Chabbra
13 Arvinder Kaur
14 Bill Amlani
15 Bipan Arora
16 Bipan Suchak
17 CD Patel
18 Charities Aid Foundation of America
19 Charities Aid Foundation of London
20 CM Sardar
21 Dhananjay Singh
22 Dhershini Winodan
23 Dilip Shah
24 Eric Kumar
25 Gautam Kumar
26 Gunna Walia
27 Harindarpal S Banga / Indra Banga
28 Harjit Singh
29 Harpal Karlcut

30 Harpal Siddu
31 Harshad Mehta
32 Hayley Reker
33 Hongkong Indian Women's Club (HKIWC
34 Jasjit Singh
35 Jaspreet Chopra
36 Jay Dhawan
37 Jayshree Nalla
38 JF Patel
39 Kadambari/Manoj Sheron
40 Kajal Negi
41 Kamini Sood
42 Kanak Khimji
43 Khali Dalip Singh Rana
44 Khushroo Dastur
45 Kusam & Chaman
46 Lal Pardasani
47 Malan Kaushal
48 Mandy Singh
49 Manish Dhar
50 Manjeet Singh
51 Manoj Saluja
52 Maria Essenberg
53 Mark Nathwani
54 Mukund Jobanputra
55 Narendra Rabheru
56 Narendra Thakkar
57 Natasha Verma
58 Navneet Kohli
59 Neerada Poduval
60 Nehal & Sapna Shah
61 Nelhi Auger
62 Nick & Monica
63 Nitin & Neerja Sethi
64 Pam Kwatra
65 Paramjit
66 Pash Nandhra
67 Pawan Singh
68 Poonam Sikand
69 Prajyoti Madhusudan
70 Prakash Thakrar
71 Prasad Rao
72 Prem Modgil
73 Purviz Rozy Shroff
74 Pushpa Basnet
75 R C Morjaria
76 R. K. Pandey
77 Rahul Anand
78 Raj Chaudhry
79 Raja Singh
80 Rajinder Chandihok
81 Rajinder Saini
82 Rakesh Sachdeva
83 Ramandeep Kaur
84 Ranjana Dutta
85 Ravi Singh
86 Reena Ralli
87 Renu Anand
88 Roopa Ramdagni
89 Rubina Vadera
90 Sabina Korfmann
91 Sachin Garg
92 Sachin Shahi
93 Sandeep& Pooja
94 Sangeeta Bhandari
95 Sanjeev Sharma
96 Sara & Kunal Vohra
97 Sarika Verma
98 Sarita Kapoor
99 Saroj & Dr I P Patel
100 Sarosh Zaiwalla
101 Shail Wadhwa
102 Shashi Malik

103 Shashi Reddy
104 Sheena Saigal
105 Simi Sadana
106 Sneh Gupta
107 Sonia Gandhi
108 Spriha Srivastva
109 Subba Rao Varigonda
110 Subhas Chandra
111 Sudha Garg
112 Suhash & Leena Jatkar
113 Sujata & Manish Bhasin
114 Sulochna Sethi
115 Sunila Forsyth
116 Sunita Kanumury
117 Sunita Vachani
118 Suresh Khatav
119 Susain Williams
120 Sushil Anand
121 Tanaji Acharya
122 Taruna Butalia
123 Varun Dhyani
124 Vascroft Foundation
125 Vedicca London
126 Vinay sharma
127 Vinay Sharma
128 Y.V.N. Padmaja
129 Yuvraj Jobanputra
130 Nishi Bahl
131 Taran Kaur

Author with IVF Team Leaders

Left to Right: Amrita Bahl, Kiran Bedi, Monica Dhawan, Pearly Sanil, Renu Nag; *IInd row*: Sapna Walia*, Sunita, Neha, Rahul Jr., Sunny, Ravi Kumar Srivastav; *IIIrd row:* Pushpa, Rahul Singh Malik, Rohilla, Aminoor, Vijay, Deepak, Chander Shekhar Srivastav, Balvinder Singh, Raj Sharma

**Sapna Walia was the catalyst in compiling this book. She met with each child and coaxed them to share their stories. Even upto 4 times with some children. This led to purging of their grief to a certain extent and it has given them a lot of joy at being acknowledged.*

IVF Team

Monica Dhawan
Director

Nobat Ram ,
Project Manager ,
Safer India Project

Anup Sinha,
Project Manager,
India Police
Project

Pearly Sanil,
Project Manager,
CVF

Renu Nag,
Project Counselor
& Supervisor
Bhondsi Prison &
CVF

Anand Singh,
Accountant

Archana Kumar,
EA to Chairperson

Ruby,
Project Manager
Creche &
Counselor

Tulika Kiran,
Project Manager
WBB

**Chander Shekhar
Srivastava,**
Project Counselor,
CVF

Ravi Srivastav,
Project Counselor,
CVF & Bhondsi
Prison

Preeti,
Admin Assistant

Sumitra,
Data Operator

Lata,
Data Operator

Ram Prakash
Office Assistant

Tarun,
IVF Driver

Parvesh
IVF Driver

Deepak
IVF Driver

India Vision Foundation
Save the Next Victim...

Phone: (Mobile) +91-9958009520,
(Tel.) +91-11- 47100705,
E-mail: ivfindia@gmail.com
Website: http://www.indiavisionfoundation.org
Facebook: facebook/indiavisionfoundation.com
Twitter : https://twitter.com/IVFoundation

How you can support!

You can support Children of Vulnerable Families and "Save the Next Victim".

You can donate online. **www.indiavisionfoundation.org**

You can write a cheque in the name of '**India Vision Foundation**' and send at 56 Uday Park, New Delhi-110049

For donations within India, you can transfer funds to:
India Vision Foundation
Bank Name: Bank of India
Branch Address: Mandir Marg Branch
Account No.: 605210100615982
IFSC: BKID0006052
MICR: 110013063

For donations outside India , you can transfer funds to:
India Vision Foundation
Bank Name: HSBC Ltd.
Branch Name: Barakhamba Road
Address: 25, Barakhamba Road, New Delhi-110001
Account No: 051-851624-001
IFSC Code: HSBC0110002
Swift Code: HSBCINBBNDH

All donations to the foundation are eligible for deduction U/S 80 G(5)(vi)of the income tax act 1996.